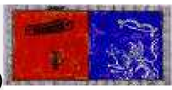
ISSN 2229-547X VIDEHA

'विदेह' 232 म अंक 15 अगस्त 2017 (वर्ष 10 मास 116 अंक 232)

ऐ अंकमे अछि:-

-



Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।

VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव

Join official Videha facebook group.

Join Videha googlegroups

Follow Official Videha Twitter to view regular Videha Live Broadcasts through Periscope.

विदेह जालवृत्तक डिसकसन फोरमपर जाउ।

संपादकीय

विदेह "नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य" विषयक विशेषांक निकालबाक नेयार केलक अछि जकर संयोजक श्री दिनेश यादव जी रहता।

अइ विशेषांकमे नेपालक वर्तमान मैथिली साहित्य केर मूल्यांकन रहत। अइ विशेषांक लेल सभ विधाक आलोचना-समीक्षा-समालोचना आदि प्रस्तावित अछि। समय-सीमा किछु नै जहिया पूरा आलेख आबि जेतै तहिये, मुदा प्रयास रहत जे एही साल मइ-जून धरि ई विशेषांक आबि जाए। उम्मेद अछि विदेहक ई प्रयास दूनू पायापर एकटा पूल जरूर बनाएत।

विदेह द्वारा संचालित "आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणी" शृंखलाक दोसर भागक घोषणा कएल जा रहल अछि। दोसर भागमे अइ बेर नीलमाधव चौधरी जीक रचना आमंत्रित कएल जा रहल अछि आ नीलमाधवजीक रचना ओ रचनाधर्मितापर टिप्पणी करबा लेल कैलाश कुमार मिश्रजीकेँ आमंत्रित कएल जा रहल छनि। दूनू गोटाकेँ औपचारिक सूचना जल्दिये पठाओल जाएत। रचनाकारक रचना ओ आलोचकक आलोचना

जखने आबि जाएत ओकर अगिला अंकमे ई प्रकाशित कएल जाएत।

अइ शृंखलाक पहिल भाग कामिनीजीक रचनापर छल आ टिप्पणीकर्ता मधुकांत झाजी छलाह।

जेना की सभ गोटा जनै छी जे विदेह २०१५ मे तीन टा विशेषांक तीन साहित्यकारपर प्रकाशित केलक जकर मापदंड छल सालमे दूटा विशेषांक जीवित साहित्यकारक उपर रहत जइमे एकटा ६०-७० वा ओइसँ बेसी सालक साहित्यकार रहता तँ दोसर ४०-५० सालक (मैथिली साहित्यकार मने भारत आ नेपाल दूनूक)। ऐ क्रममे अरविन्द ठाकुर ओ जगदीश चंद्र ठाकुर "अनिल"जीपर विशेषांक निकलि चुकल अछि। आगूक विशेषांक किनकापर हुअए तइ लेल एक मास पहिनेसँ पाठकक सुझाव माँगल गेल छल। पाठकक सुझाव आएल आ ओइ सुझाव अंतर्गत विदेहक किछु अगिला विशेषांक परमेश्वर कापड़ि, वीरेन्द्र मल्लिक आ कमला चौधरी पर रहत। हमर सबहक प्रयास रहत जे ई विशेषांक सभ 2018 मे प्रकाशित हुअए मुदा ई रचनाक उपलब्धतापर निर्भर करत। मने रचनाक उपलब्धताक हिसाबसँ समए ऊपर-निच्चा भऽ सकैए। सभ गोटासँ आग्रह जे ओ अपन-अपन रचना editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा दी।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**गामक जिनगी**, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले.क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (**कलह**, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (**पद्मानदीक माझी**, बांग्ला- मानिक बंद्योपाध्याय, उपन्यास बांग्लासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

1.विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार 2012

2012 श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

2.विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कें "**तरेगन**" बाल प्रेरक विहनि कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलकेँ "**अम्बरा**" (कविता संग्रह) लेल।

2012 युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक "**अर्चिस**" (कविता संग्रह)

2013 अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खाण्डेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपमे प्रसिद्ध)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- ‘‘**देवीजी**’’ (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरकेँ "**बेटीक अपमान आ छीनरदेवी**" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलकेँ ‘‘**निश्तुकी**’’ (कविता संग्रह)लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलकेँ ‘‘**मोहनदास**’’ (हिन्दी उपन्यास श्री उदय प्रकाश)क मैथिली अनुवाद लेल।

विदेह भाषा सम्मान २०१४-२०१५ (समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान)

२०१४ मूल पुरस्कार- श्री नन्द विलास राय (**सखारी पेटारी**- लघु कथा संग्रह)

२०१४ बाल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (**नै धारैए**- बाल उपन्यास)

२०१४ युवा पुरस्कार - श्री आशीष अनचिन्हार (**अनचिन्हार आखर**- गजल संग्रह)

२०१५ अनुवाद पुरस्कार - श्री शम्भु कुमार सिंह (**पाखलो** - तुकाराम रामा शेटक कोंकणी उपन्यासक मैथिली अनुवाद)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२

अभिनय- मुख्य अभिनय ,

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- 17 पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- 15 पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुर्गानंद ठाकुर, उम्र- 23, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- 16, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- 18, पिता- नागेश्वर कामत

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उमेर- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- 23, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- 30, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- 45, पिता- स्व. चिल्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- 55, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मल्लिक,५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृत्तिका कला

श्री यदुनंदन पंडित, उम्र- 45, पिता- अशर्फी पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया,पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ५५, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उमेर- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम वेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३

मुख्य अभिनय-

(1) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामावतार यादव, उमेर- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईषा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(3) सुश्री अपर्णा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही,जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य अभिनय-

(1) **श्री ब्रह्मदवे पासवान उर्फ रामजानी पासवान** सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) टॉसिफ आलम सुपुत्र मो. मुस्ताक आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगनि खबास समग्र योगदान सम्मान)

शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा :

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरूद्ध सिंह, उमेर- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मांगनि खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण:

श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु, उमेर- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान):

नृत्य -

(1) **श्री हरि नारायण मण्डल** सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उमेर- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उमेर- १६,** पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(1) जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उमेर- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट_बौरहा, भाया- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संप्रति, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हरिमुनियाँ / हारमोनियम

(1) **श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उमेर- ५८,** गाम- बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री जागेश्वर प्रसाद राउत** सुपुत्र स्व. रामस्वरूप राउत, उमेर ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ठेकैता/ ढोलकिया

(1) **श्री अनुप सदाय** सुपुत्र स्व. , पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री कल्लर राम** सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उमेर- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(1) वासुदेव राम सुपुत्र स्व. अनुप राम, गाम+पोस्ट- निर्मली, वार्ड न. ०७ , जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(1) श्री बौकू मल्लिक सुपुत्र दरबारी मल्लिक, उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उमेर- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्तिकला-मृर्तिकार कला-

(1) **घूरन पंडित सुपुत्र-** श्री मोलहू पंडित, पता- गाम+पोस्ट_बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **श्री प्रभु पंडित सुपुत्र स्व.** , पता- गाम+पोस्ट- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(1) **श्री जगदेव साहु** सुपुत्र शनीचर साहु, उमेर- ३६, गाम- निर्मली-पुरर्वास, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उमेर- ४५,** पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी- आत्मनिर्भर संस्कृति-

(1) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुबध राउत, उमेर- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उमेर- ३५, गाम+पोस्ट बनगामा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अल्हा/महराइ-

(1) **मो. जीबछ** सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उमेर- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाया- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बच्चन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(1) श्री सुकदेव साफी

सुपुत्र श्री ,

पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रभाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(1) **सुकदेव साफी** सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उमेर- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **लेल्हु दास** सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(1) **मो. गुल हसन** सुपुत्र अब्दुल रसीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **मो. रहमान साहब** सुपुत्र...., उमेर- ५८, गाम- नरहिया, भाया- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(1) **श्री जगत नारायण मण्डल** सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उमेर- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारि/ लोक गीत-

(1) **श्रीमती फुदनी देवी** पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(2) **सुश्री सुविता कुमारी** सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उमेर- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारि, भाया- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(1) **श्री सीताराम राम** सुपुत्र स्व. जंगल राम, उमेर- ६२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उमेर- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

काँरनेट-

(1) **श्री चन्दर राम** सुपुत्र- स्व. जीतन राम, उमेर- ५०, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) **मो. सुभान**, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

बेन्जू वादक-

(1) श्री राज कुमार महतो सुपुत्र स्व. लक्ष्मी महतो, उमेर- ४५, गाम- निर्मली वार्ड नं. ०४, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्री घुरन राम, उमेर- ४३, गाम+पोस्ट- बनगामा, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

भगैत गवैया-

(1) **श्री जीबछ यादव** सुपुत्र स्व. रूपालाल यादव, उमेर- ८०, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) **श्री शम्भु मण्डल** सुपुत्र स्व. लखन मण्डल, पता- गाम- बढियाघाट-रसुआर, पोस्ट मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

खिस्सकर- (खिस्सा कहैबला)-

(1) श्री छुतहरू यादव उर्फ राजकुमार, सुपुत्र श्री राम खेलावन यादव, गाम- घोघरडिहा, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल, पिन- ८४७४५२

(2) बैजनाथ मुखिया उर्फ टहल मुखिया-

(2)सुपुत्र स्व. ढोंगाइ मुखिया,

पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

मिथिला चित्रकला-

(1) सुश्री मिथिलेश कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार' पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

(2) श्रीमती वीणा देवी पत्नी श्री दिलिप झा, उमेर- ३५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

खजरी/ खौजरी वादक-

(2) श्री किशोरी दास सुपुत्र स्व. नेबैत मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

तबला-

श्री उपेन्द्र चौधरी सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री देवनाथ यादव सुपुत्र स्व. सर्वजीत यादव, उमेर- ५०, गाम- झाँझपट्टी, पोस्ट- पीपराही, भाया- लदनियाँ, जिला- मधुबनी (बिहार)

सारंगी- (घुना-मुना)

(1) श्री पंची ठाकुर, गाम- पिपराही।

झालि- (झलिबाह)

(1) **श्री कुन्दन कुमार कर्ण** सुपुत्र श्री इन्द्र कुमार कर्ण पता- गाम- रेबाड़ी, पोस्ट- चौरामहरैल, थाना- झंझारपुर, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०४

(2) **श्री राम खेलावन राउत** सुपुत्र स्व. कैलू राउत, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

बौसरी (बौसरी वादक)

श्री रामचन्द्र प्रसाद मण्डल सुपुत्र श्री झोटन मण्डल, उमेर- ३०, बौसरी/बौसली/बासुरी बजबै छथि। पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री विभूति झा सुपुत्र स्व. कनटीर झा, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- कछुबी, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

लोक गाथा गायक

श्री रविन्द्र यादव सुपुत्र सीताराम यादव, पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पट्टी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री पिचकुन सदाय सुपुत्र स्व. मेथर सदाय, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

मजिरा वादक (छोकटा झालि...)

श्री रामपति मण्डल सुपुत्र स्व. अर्जुन मण्डल, पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

मृदंग वादक-

(1) **श्री कपिलेश्वर दास सुपुत्र स्व. सुन्नर दास,** उमेर- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(2) श्री खखर सदाय सुपुत्र स्व. बंठा सदाय, उमेर- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

तानपुरा सह भाव संगीत

(1) **श्री रामविलास यादव** सुपुत्र स्व. दुखरन यादव, उमेर- ४८, गाम- सिमरा, पोस्ट- सांगि, भाया- घोघड़डीहा, थाना- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

तरसा/ तासा-

श्री जोगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री राजेन्द्र राम सुपुत्र कालेश्वर राम, उमेर- ५८, गाम- मझौरा, पास्ट- छजना, भाया- नरहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक-

श्री सैनी राम सुपुत्र स्व. ललित राम, उमेर- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री जनक मण्डल सुपुत्र स्व. उचित मण्डल, उमेर- ६०, रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक, १९७५ ई.सँ रमझालि बजबै छथि। पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

गुमगुमियाँ/ ग्रुम बाजा

श्री परमेश्वर मण्डल सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल उमेर- ४१, १९८० ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

श्री जुगाय साफी सुपुत्र स्व. श्री श्रीचन्द्र साफी, उमेर- ७५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंका/ ढोल वादक

श्री बदरी राम, उमेर- ५५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाया- निर्मली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

श्री योगेन्द्र राम सुपुत्र स्व. बिल्टू राम, उमेर- ५५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

डंफा (होलीमे बजाओल जाइत...)

श्री जग्रनाथ चौधरी उर्फ धियानी दास सुपुत्र स्व. महावीर दास, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर),जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री महेन्द्र पोद्दार, उमेर- ६५, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाया- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

नङेरा/ डिगरी-

श्री राम प्रसाद राम सुपुत्र स्व. सरयुग मोची, उमेर- ५२, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाया- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर.एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

८) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

९) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

१०) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

११) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१२) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१३) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

Videha_01_07_2016

१४) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला

१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी

VIDEHA 209th issue विदेहक दू सए नौम अंक

Videha_01_09_2016

विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०)

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)
विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)
विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]
विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]
विदेह मैथिली पद्य [विदेह सदेह ७]
विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]
विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]
विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]

The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of original work.-Editor

Maithili Books can be downloaded from:
https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/
Maithili Books can be purchased from:
http://www.amazon.in/
For the first time Maithili books can be read on kindle e-readers. Buy Maithili Books in Kindle format (courtesy Videha) from amazon kindle stores, these e books are delivered worldwide wirelessly:-
http://www.amazon.com/
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२. गद्य

२.१.जगदीश प्रसाद मण्डलक दूटा लघु कथा कोढ़िया सरधुआ आ त्रिकालदर्शी

२.२.नन्द विलास राय-दूटा लघु कथा हमर लॉटरी निकलल आ शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य

२.३.बेचन ठाकुरजीक दूटा एकांकी-नीशा मुक्ति आ बरहम बाबा

२.४.आशीष अनचिन्हार-मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काजपर रिपोर्ट

३.

दूटा लघु कथा कोढ़िया सरधुआ आ त्रिकालदर्शी

२

कोढ़िया सरधुआ

राधेश्याम बाबा घरक बगलेक पोखैरमे स्नान करि एक हाथमे धोती आ दोसर हाथमे अछींजल पानिसँ भरल लोटा नेने डेढ़ियापर पहुँचबे केला कि पाछूसँ रस्तापर सँ लखन टोकलकैन-

“बाबा, अहींसँ कनी काज अछि।”

जहिना राधेश्याम बाबा लखनक बात सुनलैन तहिना आगूक डेग रोकि ठाढ़ होइत बजला-

“केहेन काज छह हौ लखन?”

अनका जकाँ बिटंडी राधेश्याम काका नहि छैथ जे पाछूसँ टोकने टोकानि लगितैन। अपन विचार छैन जइ अनुकूल अपन जिनगीक धार बहै छैन। जे गामे नहि आनो गामक लोक जनैए। लखनकेँ सेहो बुझल छइहे, तँए भरि राधोपुरमे जँ केकरो बिसवास पात्र मानैए तँ ओ मात्र राधेश्याम बाबाकेँ।

बिसवासक संग लखन बाजल-

“बाबा, एकटा नालिस अछि।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबा ठकुआएल ठाढ़ रहैथ। ओना लखनकेँ सेहो चिन्हते छैथ जे मिरचाइ, धनियाँ, हरदी, लसुन, आदीक वेपार लखन आइये नहि,तीसो-चालीस बर्खसँ राधोपुर सहित आनो-आन गाममे करैत आबि रहल अछि। गामक उपकारी लोक तँ छीहे तँए जँ कोनो विघ्न-बाधा रस्तामे एलै तँ ओकर निमरजना हेबेक चाही। मुदा लगले फेर भेलैन जे स्नान केने आबि रहल छी, भीजल धोतियो आ पूजाक अछींजल सेहो हाथेमे अछि, तैबीच लखनक नालिस सेहो अछिए।

थकमकाएल ठाढ़ राधेश्याम बाबाक मनमे उठलैन जे अपनो आगूक काज अछि जे पहिने अँगनाक ओसारपर अछींजलक लोटा रखि घरक चारपर धोती पसारब, पूजा करब, भोजन आ अराम करब तेकर पछाइत ने दुनियाँ-दारीक काजमे जुटब। मुदा लगले भेलैन जे अपने अपन काजमे जखने जुटि जाएब, तखने दरबज्जापर आएल भूखल-दुखल बेकतीक उपकार केना हएत। तहूमे लखन सन लोक, जे तीन बजे भोरे उठि अपन भोरका कर्म पर-पाखाना, कुर्रा-आचमन सँ निवृति होइत चारिये बजेसँ अपना संग अनको दुख-धन्धाक पाछू लगि जाइए।

राधेश्याम बाबाक मनमे उठलैन जे उपकारो तँ उपकार छी। ओहो तँ एक्के रंगक नहियेँ अछि। एक उपकार भेल जे केकरो कएल जाइए आ दोसर भेल जे उपकारीकेँ उपकार करब। जहिना कोनो गाछ जड़िसँ लऽ कऽ छीप तक एक पुरखियाह होइए आ कोनो जड़ियेसँ सघन बनैत जाइए, जड़ियेसँ अनेको डारि-पात हुअ लगै छै तहिना लखनो सघन लोक अछिए...।

राधेश्याम बाबाक मन मानए लगलैन जे पहिने लखनक जे नालिस अछि तेकरे बुझी। अपन जे काज अछि ओ तँ अपना जुतिमे अछि, कनी देरिये ने हएत। तहूमे लखन दस-दुआरी अछि तँ दस रंगक काजो हेतइ...।

ऐठाम अबैत-अबैत राधेश्याम बाबाक मन मानि गेलैन जे पहिने लखनेक काज करब पछाइत अपन करब। मुदा लगले फेर मनमे उठि गेलैन जे कोनो वस्तुक लेन-देन तँ छी नहि जे ओ मंगलक आ अपने घरसँ निकालि दए देलिऐ। वा आगूक समए लऽ लेलौं। नालिस छी, नालिसो-नालिसमे अन्तर अछिए। दू गोरेक बीचक जँ कोनो छोट-छीन बात रहल तँ ओरा लगले निपटा लेब। मुदा जँ नमहर माने एकसँ अधिकक बीचक रहल तँ ओ लगले थोड़े फरिछौल जा सकैए। ओइमे तँ बेसी समए लगबे करत। तँए जँ आगू बढ़ि लखनकेँ पुछिऐ जे की नालिस छह, तखन तँ जड़िसँ छीप धरि बुझै पड़त। तइमे समए केते लगत तेकर कोनो ठेकान अछि...।

तइ बिच्चेमे लखन बाजल-

"बाबा, अहूँकेँ बहुत काज पछुआएल अछि आ हमहूँ चारि बजे भोरेसँ घुमैत-घुमैत थाकि गेल छी। मन गरमा गेल अछि। घरपर जाएब, साइकिल रखि कनी ठंढ़ाएब पछाइत नहाएब-सोनाएब तखन ने खाएब आ अराम करब।"

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मनमे जेना नव विचार लगलैन। नव विचार ई जगलैन जे जे आदमी चारि बजे भोरसँ काजमे जुटल अछि, अखन एगारह बजि रहल छै, ओइ आदमीक भूख-पियास आ अपने जे छह बजेमे ओछाइनपर सँ उठि पर-पाखाना होइत मुँह-कानमे पानि लइत चाह-पान करैत आठ बजेमे काज दिस बढ़लौं,दुनूक भूख-पियास एके रंग थोड़े भेल।

मनमे अबिते दोसर विचार जेना राधेश्याम बाबाक मनकेँ पकैड़ लेलकैन। दोसर विचार ई पकैड़ लेलकैन जे कियो आदमी ओहन अछि जे एक साँझक भूखल अछि आ कियो तीन साँझक भूखल अछि, दुनूक भूख की एक्के रंग भेल। तैठाम पहिने केकरा खाइले भेटौ..?

अबैत-अबैत राधेश्याम बाबाक मनमे थोड़ेक चैन एलैन। चैन अबिते बजला-

"लखन, जखन तूँ नालिस डायर केलह तखन ओ ठाढ़े-ठाढ़ थोड़े हएत। हमहूँ अछींजल ओसारपर रखि, धोती चारपर पसारि अँगनासँ अबै छी आ तोहूँ ताबे साइकिल लगा चौकीपर बैसह।"

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे सवुरक मेवा खसल। जहिना कोनो आम वा आने फलक गाछक पीपही-पौध रोपैकाल ओ फल मनमे नचैत अपन सुआद छिटकाबए लगैए तहिना लखनोक मनमे भेल जे पनचैती हेबे करत।

ओना सुधिया दादी सेहो अँगनाक मुँहथैर लग ठाढ़ भऽ दुनू गोरेक गप-सप्प सुनैत रहैथ। मुदा बजैथ किछु ने। किछु नहि बजैक कारण रहैन जे जखन मरदा-मरदी गप भऽ रहल अछि तखन बीचमे अनेरे बाजब नीक नहि। मुदा तँए मनमे खौंझ नहि उठैन सेहो बात नहियेँ अछि। खौंझ तँ उठबे करैन। भेल जअमे पाथर खसब एकरे ने लोक कहै छइ। भरि दिन नीक-अधला वृत्ति लोक अपन खाइये-पीबैक जोगार-ले ने करैए, सेहो जँ तुकपर नइ भेल तँ की भेल। मुदा दुआरपर आएल केकरो अकची-दोकची कहब सेहो नीक नहियेँ छी।

आँगनक पछबरिया ओसारपर अछींजलक लोटा रखि चारपर धोती पसारि राधेश्याम बाबा दरबज्जापर आबि चौकीपर बैसला। लखन पहिनेसँ चौकीपर बैसल छल। राधेश्याम बाबाकेँ किछु पुछैसँ पहिने लखन बाजल-

“बाबा, अहूँ देखै छी आ दादी सेहो देखैत आबि रहल छैथ, जे ई साल 2017 ईस्वी हमर चालिसम बरीस रोजगारक छी।”

बिच्चेमे राधेश्याम काका बजला-

“हँ, से तँ भेले हेतह।”

राधेश्याम बाबाक समर्थित बात सुनि लखनक मनमे आरो उत्साह बढ़ल। अपन विचारकेँ पसारैत आगू बाजल-

“बाबा, अहीं कहू जे आइ धरि कोनो शिकबा-शिकाइत लऽ कऽ कहियो किछु कहलौं?”

समर्थन करैत राधेश्याम बाबा बजला-

“हँ, से तँ कहियो ने किछु कहलह।”

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे आरो मजगूती आएल। बाजल-

“बाबा, जहिना अपन गाम आ परिवार अछि तहिना पँचकोसीक गामो आ परिवारोकेँ, आइये नहि सभ दिन अपन बुझैत आबियो रहल छी आ कारोबार सेहो करिते छी। नगद-उधार सभ चलिते अछि। धरमागती कहै छी जे ने अपने कहियो केकरोसँ एक पाइ झूठ बाजि बेइमानी केलिऐ आ ने आने कियो एको पाइ बेइमानी केलक।”

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मन कनी घुरियेलैन। घुरियाइक कारण भेलैन जे वेपारी छी तखन झूठ बाजि नइ ठकने हेतइ से सम्भव अछि। तँए कनी मिरमिराइत बजला-

“तइले कहियो किछु कहलियह?”

लखन बाजल-

“बाबा, अहूँ देखै छी आ अपनो-आन देखते छैथ जे झंझारपुर हाटपर समस्तीपुरबला वेपारीसँ समान कीनै छी आ तीस प्रतिशत लाभ लऽ कऽ बेचै छी।”

‘तीस प्रतिशत’ सुनि राधेश्याम बाबाक मन कनी ठमकलैन। ठमैकते बजला-

“तीस प्रतिशत!”

राधेश्याम बाबाक बातकेँ स्वीकारैत लखन बाजल-

"हँ बाबा, तीस प्रतिशतसँ कमपर काज करब तखन पेट भरत।"

राधेश्याम बाबा लखनक कारोबारक तहियाएल बात नहि बुझै छला। रेडियो-अखबारसँ बड़का वेपारी सबहक बात बुझै छला। जे एक प्रतिशत, दू प्रतिशत वा पाँच-दस प्रतिशत लाभपर कारोबार करै छैथ। तैठाम लखन तीस प्रतिशत लाभपर कारोबार करैए, ई तँ सोझे गरदैनकट्टी करैए किने..!

बजला-

"एक प्रतिशत, दू प्रतिशत लाभपर काज करैबला वेपारीकेँ उना-सँ-दूना होइ छै आ तोरा पेटो ने भरतह?"

राधेश्याम बाबाक बात सुनि लखनक मनमे भेल जे राधेश्याम बाबा सुधंग लोक छैथ। सभ दिन खेती-गिरहस्तीपर जीबैत आबि रहला अछि तँए बनियाँ-बेकालक वेपारक बात नइ बुझै छैथ। मुदा जाबे धरि नइ बुझता ताबे धरि हिनका नजैरमे ठक-फुसिआह बनले रहब। जेकरा अपन बजार बनौने छी आ ओइ बजारक बीच कारोबार करै छी जइसँ परिवारो चलैए आ समाजिकता सेहो बनले अछि, तँए पहिने ई बुझाएब जरूरी अछि।

लखन बाजल-

"बाबा, पाँच हजार अपन पूजी अछि आ पाँच हजार वेपारीक माने जेकरासँ समान कीनै छी उधार छइ। दुनू मिला दस हजारक कारोबार भेल। सभ दिन गाम सभ घुमि बेचै छी, जइसँ कहियो पाँच साए आ कहियो दुइयो साइक लाभ होइए। हराहरी बुझू तँ तीन-साढ़े तीन साइक कमाइ होइए। अहाँकेँ अपनो परिवार अछि, सभ किछु मिला खर्च जोड़बै तँ बुझि पड़त जे लखनक कमाइ केते भेल।"

सोल्होअना राधेश्याम बाबाक मन लखनक विचारपर नइ जमलैन मुदा आधा-छिधा नइ जमलैन सेहो नहियेँ कहल जा सकैए।

राधेश्याम बाबा बजला-

"तोरा हिसाबे तँ केतौ गड़बड़ नइ बुझि पेब रहल छी मुदा...।"

'मुदा' सुनि लखनक मनमे भेल जे बाबा सिमरियामे बहैत गंगा वा झंझारपुरमे बहैत कमला वा सुपौलमे बहैत कोसी वा दरभंगामे बहैत बागमतीक बात तँ बुझि रहला अछि मुदा जैठामसँ धार सभ निकलल अछि वा दोसरमे जा-जा मिलल अछि से नहि बुझि पेब रहला अछि। तँए जाबे ओ नइ बुझता ताबे असल बात नहि बुझता।

लखन बाजल-

"बाबा, हमसब खुदरा वेपारी छी। कम आँट-पेटक कारोबार अछि। मुदा अहाँक नजैरमे थौक वेपारी सभ छैथ, हुनका सबहक कारोबार करोड़ो-अरबोमे छैन, तँए हुनकर एक-दू प्रतिशत करोड़ो-अरबो आमदनीक भेल आ हमरा सबहक हजार-बजारक कारोबार अछि तँए सौ-सैंकड़ आमदनीक भेल।"

ओना अपना जनैत लखन नीक जकाँ अपन विचार बुझौलकैन मुदा राधेश्याम बाबाक मन नीक जकाँ नइ बुझि पेलकैन। तँए असमनजस करैत राधेश्याम बाबा बजला-

"हमरा ते होइए जे सभ वेपारीक चालि-ढालि एके रंग अछि, मुदा तोहर विचार तँ...।"

राधेश्याम बाबाक पेटक बात लखन बुझि गेल। बाजल-

"बाबा, केना कोन वौसक दाम बनैए ओ बड़ भारी अछि। ओकरा कहैमे बड़ देरी लागत मुदा एकटा बात नजैरपर-के दइ छी।"

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबा ठमकला। पाछू हटैत बजला-

"खाइ-पीबैक बेर अछि, तँए अनेरे गप-सप्पमे नइ गमाबह। जइ काजे रूकलह तेकरा अगुआबह।"

गप-सप्पक क्रममे लखनक मन जेना भरि गेल होइ तहिना बाजल-

"बाबा, जखन दुनू गोरे बैस विचारिये रहल छी तखन काजो हेबे करत। मुदा एकटा बात पछुआएल अछि से पहिने सुनि लिअ।"

राधेश्याम बाबाक मनमे भेलैन जे भने पहिने वएह सुनि ली। जखने मनक बात मनसँ निकलतै तखने ने मन खाली हेतइ। जइमे कोनो बात आकि नव विचार रखैयोमे बेसी गरगर हएत। बजला-

"पहिने डोरियेलहे विचार सम्पन्न करह। पछाइत नवका काजक गरे करब।"

लखन बाजल-

"बाबा, सड़कक काते-काते पेट्रोल-डीजलक दोकान सभ देखते छिऐ। दस लाख-बीस लाख लीटर पेटरौलो आ डीजलोक स्टॉक ओकरा सबहक अछि। अखन तक वेपारी सभ मुनाफा लइत जइ दरमे बिकरी कऽ रहल अछि, ओ बारह बजे रातिमे अन्हारे-अन्हारमे दू-रूपिया, तीन रूपिया प्रति लीटर बढ़ि जाए, जइसँ हजारक कोन बात जे लाखो-करोड़ो अपने चलि अबैए। से हमरा सभकेँ थोड़े औत। चालीस बर्खसँ धनियाँ-मिरचाइ-हरदी-आदी साइकिलपर लादि गामे-गाम घुमि-घुमि बेचै छी तखन सौ-सैकड़ मुँह आँखि देखै छी।"

एकाएक राधेश्याम बाबा जेना निर्णायक दौड़मे पहुँच गेला तहिना बजला-

"परिवार चलै छह किने?"

परिवारक बात सुनिते लखन बाजल-

"से ने किए चलत। धिया-पुताकेँ पढ़ौनाइ-लिखौनाइ, बिआह-दान जेते भेल से तँ करिते आबि रहल छी। अखनो सात गोरेक परिवार चलैबते छी।"

लखनक बात सुनि बगलमे ठाढ़ सुधनी दादी बजली-

"लखन कि कोनो आइए-सँ भौरी करैए, पाबैन-तिहारमे केते गोरेक ऐठाम खेबो करैए आ अपनो खुऐबते अछि कि।"

सुधनी दादीक समर्थन पेब लखन समरथित होइत (समथारति स्वरुप) बाजल-

"दादी, कमसँ कम एक साए परिवारसँ खाएनो-पीन रखने छी आ बेटा-बिआहमे बरियाती आ बेटी-बिआहमे समाजिक सम्बन्ध सेहो ऐछे। केकरो बेटीक बिआह होइ छै ते मास दिन पहिनहि कहि दइ छिऐ जे मर-मसल्लाक चिन्ता छोड़ि आन चिन्ता करब। तहिना माइयो-बापक श्राद्धमे करिते छी।"

लखनक बात सुनि राधेश्याम बाबाक मन जेना भरि गेल होनि तहिना नरमाइत बजला-

“अखन खाइ-पीबैक बेर अछि लखन। पर-पनचैती तँ निचेनीक काज छी, मुदा तैयो जइ काजे तोहूँ अन-पानि तियागने छह आ हमहूँ तियागने छी से पहिने करह।”

अपन सभ विचारकेँ मनमे कतियबैत लखन बाजल-

“बाबा, पहिने रसियारीवाली कनियाँकेँ बजा लिअ। सोझा-सोझी गप नीक होइए।”

बगले परिवारक रसियारीवाली, तँए सुधनी दादी दरबज्जेपर सँ शोर पाड़ैत बजली-

“हइ रसियारीवाली, कनी एमहर आबह।”

अखन तक रसियारीवालीकेँ ई नइ बुझल जे पनचैती अपने ऊपर अछि। मनो निरविकार। निरविकार ऐ दुआरे जे कोनो गलती केने नहि छेली। रसियारीवाली आबि सुधनी दादीक पँजरा लगि ठाढ़ भेली।

रसियारीवालीकेँ देखते लखन बाजल-

“बाबा, भोरे-भोर बोहनियेँ-काल रसियारीवाली गारिसँ उकैट देलैन। मुदा हम किछु बजलौं नहि। बोहनी-पहर छल। जँ भोरे जतरा कुजतरा भऽ जइतए ते भरि दिन गारिये-फज्झैत ने सुनैत रहितौं। मुदा जखैनसँ सुनलौं तखैनसँ मनमे काँट जकाँ नइ गड़ल अछि सेहो थोड़े नहि...।”

राधेश्याम बाबा बजला-

“लखन तोहर बात नीक जकाँ नइ बुझलौं किए तँ जहिना सौंसे रामायण एकटा छप्पयमे सेहो कहल गेल अछि, मुदा रामायणिक विचारधाराकेँ जँ जिनगीक नजरिये बुझब तँ ओ सौंसे जिनगीक छी, तहिना तोहूँ एक्के सूरेमे सभ बात बाजि गेलह। जइसँ नीक जकाँ नहि बुझि पेलौं। पहिने रसियारीए-वालीक गप सुनह।”

रसियारीवालीकेँ पँचवेदीमे ठाढ़ होइत देख लखनक मनक अदहा दर्द मनक मेटा गेल। बाजल-

“भने अहाँ कहलिऐ, बाबा।”

तैबीच सुधनी दादी रसियारीवालीकेँ चरियबैत बजली-

“निधोखसँ बाजह। कोनो झूठ-फूस नइ बजिहह। पंचवेदीमे ठाढ़ छह।”

रसियारीवाली बजली-

“लखनकेँ किछु नहि कहलौं से बात नइ अछि। बजलौं जरूर मुदा गारि नहि पढ़लिऐ।”

ओना लखनक मनमे ईहो उठैत रहै जे परिवारोमे जखन कनी-मनी भाइए जाइ छै एना समाज तँ ओइसँ नमहर अछिए। तैसंग ईहो तँ ऐछे जे अही समाजक बीच ने जीबो करै छी आ सुख-दुखक गपो-सप्प करै छी। ओना, ईहो विचार लखनक मनमे नचिते रहै जे भोरका समए रहै बेसी लोक सुतले छल, तँए कियो सुननौं ने हएत। आ जँ सुननौं हएत तँ मने-मन विचारिये नेने हएत जे भोरका समैमे कियो अनका थोड़े कहने हएत। तँए लखनोक मनक चितपन कनी निच्चाँ भेले जाइत रहइ। मुदा पँचवेदीमे जँ फुसियाह बनि जाइ सेहो केहेन हएत। बाजल-

“कनियाँ, अहीं अपना छातीपर हाथ रखि कऽ बाजू जे ‘कोढ़िया-सरधुआ’ नइ कहने छेलौं?”

रंग-रंगक परिस्थिति राधेश्याम बाबाक आँखिक सोझमे उपस्थित भऽ गेलैन। तैसंग ईहो होनि जे दुइए गोरेक बीचक बात छी, तेसर कियो अछि नहि जे तीनमे दू-एकक अधारपर निर्णय करब...।

मुदा लगले मनमे एलैन जे मुद्दा ने बेकतीगत भेल। मुदा समाजेक लोक ने दुनू छी तँए मुद्दाक संग समाधानोक विचार किए ने दुनू गोरेसँ पहिने लऽ ली...। राधेश्याम बाबा बजला-

“लखन, तोहूँ कि सोझे भौरीए करैबला वेपारी छह सेहो बात नहियेँ अछि। कहुना ते पचास-पचपनक उमेर भाइए गेल हेतह। तोंही पहिने अपन विचार बाजह।”

लखन बाजल-

“बाबा, माए जखन जीबै छल तखन ओहो कोढ़िया कहै छल आ घरवाली सेहो केता दिन कोढ़िया कहने हएत तेकर ठेकान नहि। तँए कोढ़ियाकेँ छोड़ि दइ छी मुदा सरधुआ जे रसियारीवाली कहली से जँ हमर सराधे भऽ जाएत तखन सात गोरेक परिवारक खरचा वएह देती।”

अधियाएल पनचैती होइत देख राधेश्याम बाबा रसियारीवालीकेँ पुछलैन-

“आब, कनियाँ अहाँ बाजू।”

रसियारीवाली बजली-

“बाबा, खूब भोरे-के लखन आबि दरबज्जापर सँ चिचियाए लगै छैथ जे मिरचाइ, धनियाँ, हरदी लेब अइ ऐ ऐ ऐ...। से यैह कहथु जे भोरका ओहन कड़कड़ाएल नीनकेँ जे दुइर करत तेकरा कोढ़िया-सरधुआ कहिलिऐ ते कोनो बेसी कहलिऐ जे ओ गारि बुझै छैथ।”

रसियारीवालीक विचार सुनि लखनकेँ बुझबैत सुधिया दादी बजली-

“लखन, ‘कोढ़िया-सरधुआ’ गारि नइ छी। ओहुना स्त्रीगण सभ एक-दोसरकेँ कहै छैथ। तँए ऐ बातक जँ कुवाथ भेल हुअए तँ ओकरा मनसँ निकालि लिअ।”

सुधनी दादीक चेहरापर सँ नजैर उठा राधेश्याम बाबाक दिस तकैत लखन बाजल-

“जाइ छी बाबा।”

शब्द संख्या : 2285, तिथि : 06 अगस्त 2017

२

त्रिकालदर्शी

मौसम बदैलते मौनसुनक मन बगैद गेल। ओना अछैते आमक बगिया रहितो भूखले रहल। मुदा भूखो तँ भूख छी, जखने पेटमे लहैर पैसत कि बकबकी शुरू हएत। भलेँ बकैमे कियो बकैन जाइए आ कियो बक्ता बनि जाइए। बकनाइक माने भेल ऐ साल[1] आम नइ फड़ल। हजारो बीघाक उपज मारल गेल। उत्पादनक संग ओहन वस्तुक ह्रास भेल जेकरा फल कहै छिऐ आ ओ शरीरक मात्र पेटभरा भोजनेटा

नहि, पौष्टिक आहार सेहो छी। मुदा तँए कि ओ फल नइ फड़ैक कारण कहत? नहि, ओ कहत जे लोक तेते ने पपीयाह भऽ गेल अछि जे सभटा अमृत फल नर्क दिस जा रहल अछि...। ओना, विचारकेँ रहस्यपूर्ण मानलो जा सकैए मुदा जखन लोक रहस्य गढ़ैक लूरि सीख लेत तखन ने रहस्यक रहस्य बुझत। से तँ अछि नहि, अछि तँ ओहन लोक बेसी जे खेत रहितो पड़ा कऽ नोकरी करए चलि गेल आ खेत रहि गेलै गाममे। जखन खेत छोड़ि पड़ा गेल तखन ओइ खेतक जे भवितव्य छै सहए ने हएत। तँए जिनगी भरिक एक्के बेर खेती करैक खियालसँ आम-कटहरक खेती कऽ लेलक। आम खाइले आ मचानपर बैस बरहमासा गबैले दस दिन गाम अबैए। मुदा गाममे ओहन लोकक कमियोँ तँ नहियेँ अछि जे गामक उन्नैत नइ चाहैए। भलेँ ओ ऐ बातकेँ बुझैत हुअए वा नहि बुझैत हुअए जे बेकतीक विकास मात्रसँ देश वा गामक विकास नहियेँ हएत, जाबे कि ओकरा सामुहिक-समाजिक रूपमे नइ आनल जाएत।

बरसाती मौसमक आगमन होइते बरसा तेना झड़झड़ा गेल जे बाढ़िक रूप पकैड़ लेलक। ओना, बुढ़-बुढ़ानुसक कहब छैन जे जँ अदरे नक्षत्रमे भूमि भरि जाए तँ ओ नीक भेल। मुदा ऐठाम प्रश्न उठैए जे भूमि भरैक की रूप। भूमि अनेको किस्मक अछि। केतौ पोखरिक रूपमे अछि तँ केतौ डोह-डाबर आ कोचाढ़िक रूपमे। केतौ चौरक रूपमे तँ केतौ नीचरस जमीनक रूपमे अछि। जँ चौर वा नीचरस जमीन अगते पानिसँ भरि जाएत तखन ओइ खेतकेँ अबादि केना सकै छी। जेकर अनेको कारणमे बीआक अभाव सेहो अछिए। ऊपरका भूमि जे खेतीक लेल अछि ओकरा अबादैले जँ भूमि भरत तँ नीचला खेत डुमि जेबे करत। मुदा जे हुअए आइ हम एकैसम सदीक किसान छी। हमरा बीच साइबेरियासँ लऽ कऽ आस्ट्रेलियाक सहारा तक आ जापानसँ लऽ कऽ चीन तकक खेतीक जानकारी अछि। तैठाम अपन स्थिति देखैत ने अपनो सभ करब।

अधिक बरखा भेने गाममे पानि जबैक गेल। पानिक निकासक समुचित बेवस्था नहि। तैसंग धार-धूर बीचक गाम छीहे। ओना हमरा गाममे नामित धार एकोटा ने अछि, खाली एकटा चरिमसिया सुपेन[2] अछि। मुदा ओहो कनियेँ-मनियेँ सीमाक भीतर घुसल अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ ऐछे जे चारि कोस पूब कोसी आ दू कोस पच्छिम कमला बीचक गाम छीहे। तँए दुनूक भीतर जे जटा-जूट भेल भुतही बिहूल, गहुमा, बलान इत्यादि धार नइ अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। तँए सोलहन्नी धारक कातक गाम नहियोँ तँ धारक पेटक गाम कहले जा सकैए। ओना गामक बनाबटो आन गामसँ भिन्न अछिए। भिन्न ई अछि जे कोनो गाममे नीचरस जमीन कम अछि आ ऊचरस बेसी अछि। तैसंग उत्तरसँ दच्छिनक ढलान जमीनक अछिये जइसँ उत्तरमे नेपाल तकक पानिक बहाव भाइए जाइए। हमर गाम एक तँ सघन अवादीबला गाम छी जइ अनुपातमे जमीन कम अछि। तैसंग गामक जे बनाबट अछि ओ विचित्र अछि। गामक चारूकात चौर जमीन अछि, जे गामक कुल खेती-जोकर जमीनमे आधासँ बेसी अछि। ऐबेर अगते बरखा भेने गामे जलोदीप भऽ गेल। संगे बाहरी पानिक आमदनी सेहो भेबे कएल। जइ अनुपातमे पानिक आमदनी गाममे भेल तइ अनुपातमे निकास नइ अछि जइसँ पनरह दिनसँ गामक समुच्चा खेत डुमल अछि।

गामक दशा देख अपन बेथाकेँ सामुहिक बेथा मानि सवुर केनहि छी। ओना गामक खेत-पथार डुमने सबहक बेथा एके रंग नइ अछि। कम-बेसी तँ अछिए। माने ई जे जे परिवारक संग बाहर जा नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा, जे गामेमे रहि नोकरी करै छैथ हुनकर बेथा आ जे सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीब

रहला अछि हुनकर बेथामे अन्तर अछिए। एहने लोक माने सोलहन्नी खेतीकेँ जीविका बना जीनिहार देवी काका सेहो छैथ।

ओना हमर घर दोसर टोलमे अछि आ देवी कक्काक घर दोसर टोलमे छैन, मुदा बातो-विचारमे आ जीविको रूपे गढ़गर सम्बन्ध दुनू गोरेक बीच अछिए। अपने छोट गिरहस्त छी तँए नोकसानो कम भेल मुदा देवी काका कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त छैथ तँए हुनका बेसी नोकसान भेबे केलैन अछि। कम जमीन रहितो नमहर गिरहस्त बनैक कारण देवी कक्काक छैन जे सदिकाल विचारोसँ आ काजोसँ गामक उन्नैतिक पाछू लागल रहै छैथ, तँए अनेको रंगक अन्नक खेतीक संग तीमनो-तरकारी, फलो-फलहरी आ मालो-जाल पोसनहि छैथ। जइसँ सदिकाल अपन जिनगीमे रमल रहै छैथ। मनमे भेल जे खुशहालीक समैमे सभ दिन एक-आध घन्टा एकठाम बैस अपनो आ समाजोक विषयमे दुनू गोरे गप-सप्प करिते आबि रहल छी, अखन तँ सहजे कष्टहालीक समए आबि गेल अछि, तँए भेँट करैले जाइ।

एक तँ खेत-पथार पानिमे डुमने काजो पतराएले अछि जइसँ बेसी बैसारीए रहैए, दोसर बेर-बिपैत पड़ने भेँट करब सेहो जरूरी बुझि पड़ल। घर परक काज सम्हारि पत्नीकेँ कहलयैन-

“देवी काकासँ भेँट केने अबै छी।”

पत्नी कहलैन-

“पानि-बुन्नीक समए छी, बेसी देरी नइ लगाएब।”

पत्नीक विचार सुनि देवी काकासँ भेँट करए विदा भेलौं। जूत्ता-चप्पल नइ पहिरलौं। तेकर कारण छल जे एक तँ रस्तामे थाल-खीच बेसी अछि, दोसर तीन ठाम रस्ता टुटल छै जइसँ पानिक रेत सेहो चलैए।

उदास भेल देवी काका दरबज्जापर बैसल मने-मन विचारि रहल छला जे बर्खोक मेहनत नष्ट भऽ गेल। खाली मेहनतेटा रहैत तखन संतोष होइमे बाधा नइ होइत। किएक तँ बुझितिऐ जे समैक संग मेहनत गेल तँ गेल, आगू समैक संग जिनगी चलबे करत। मुदा तेतबे नइ अछि। जखन घुमै-फिरैक उमेर छल तखन आन-आन गाम आ आन-आन जिलासँ लऽ कऽ आन-आन राज्य सभसँ तरकारियो आ फलोक गाछ आनि-आनि संग्रह केने छेलौं, ओ सभटा चल गेल। आब फेरसँ संग्रह करब से संभव नहि अछि। आब घुमै-फिरै-जोकर शरीरमे शक्ति कहाँ रहल..! ऐठाम आबि देवी कक्काक मन चहकए लगलैन। चहकए ई लगलैन जे जेकरा संग-संग जिनगी बीतबै छेलौं ओ संग छोड़ि चलि गेल जे पुन: आब नइ औत। संगी जकाँ जहिना ओकरा पाछू माने फलक गाछ अपने लगल रहै छेलौं, तहिना ओहो ने सदिकाल अपन-अपन समयानुसार पौष्टिकक संग स्वादिष्ट फलो दइ छल। जहिना ओकरा (माने गाछ-बिरीछक) संग अपन जिनगी बीतै छल तहिना ने ओकरो जिनगी अपना संग बीतैत रहइ। सहचर जकाँ दुनू छेलौं, मुदा आब ओहन सहचरी बना पएब? नहि बना पएब! जँ कनी संभव अछियो तँ बेसी नहियेँ अछि। माने संभव ई भेल जे जँ कोनो उपायसँ गाछो आ बीओ भाइयो जाएत तैयो तँ गामक खेत-पथारक जे रूप-रेखा बनि गेल अछि ओ तँ प्रतिकूल भाइए गेल अछि। प्रतिकूल ई जे पूर्ववर्त्ती सोचक जहिना सरकारी महकमा तहिना ने ठरो-ठीकेदार आ गामक कर्तो-धर्तो अछिए। जे गाम-समाजकेँ के कहए जे अपनो नीक-बेजाइक ने काज बुझैए आ ने बात-विचार। जइसँ गाममे जे पानिसँ दुर्दशा हएब शुरू भेल अछि ओ लगले थोड़े मेटा जाएत..! ऐठाम अबैत-अबैत देवी कक्काक मन ठमैक गेलैन। ठमैकतो फुरलैन जे तखन तँ गामक भविस अन्हरा जाएत! गामक भविस अन्हरा जाएत

तखन अन्हारमे लोकक जिनगी आ जीवन की हएत? की मनुख विहीन धरती भऽ जाएत आकि धरती विहीन मनुख। जहिना मनुख बिना धरतीक कोनो मोल नहि तहिना ने धरतियोक बिना मनुखक कोनो मोल नहियेँ रहैए। ओना, जिनगीक अनुकूल अपन-अपन धरतियो होइए। मुदा ऐठाम किसानी जिनगीक प्रश्न अछि। एकाएक देवी कक्काक मन ठहकलैन। ठहैकते विचार ठहकियेलैन। ठहकियेलैन ई जे जेकरा हम पूर्ववर्ती सोच-विचार कहि अपनाकेँ परवर्ती बुझै छी, ऐमे केतौ-ने-केतौ गुण छीपल अछि जेकरा हम या तँ बिसैर रहल छी वा दृष्टिहीन छी..! दृष्टिहीन मनमे अबिते देवी कक्काक नजेर त्रिकाल दर्शन दिस बढ़लैन। त्रिकाल दर्शन दिस बढ़िते त्रिकाल जिनगीक इजोत भक-दे मनमे एलैन। अबिते विचार उठलैन जे ने आइये एहेन परिस्थितिसँ लोककेँ भेँट भेल अछि आ ने लोक अपन जिनगीक पाछू तकैत रहि गेल बल्कि आगू बढ़ैत गेल। भलेँ जिनगीए किए ने केतौ पछुआ गेल होनि, आकि जिनगी पछुएलासँ विचार-विवेक धकिया गेल होनि मुदा सोलहन्नी मरि गेलैन सेहो तँ नहियेँ कहल जा सकैए आ जँ से रहैत तँ हजारो बर्खक जिनगीक रूप-रंग आइ नइ देखतौं। से तँ देख रहल छी। एकाएक देवी कक्काक मनमे जिज्ञासा जगलैन। जिज्ञासा जगिते जिज्ञासु जकाँ पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा केलैन। पूर्ववर्त्ती जिनगीक जिज्ञासा करिते मनमे उठलैन- जे धरती साइयो-हजारो त्रिकालदर्शी पैदा केने अछि ओही धरतीपर ने आइ हमहूँ ठाढ़ छी! देवी काकाकेँ जेना हूबा जगलैन। हूबा जगिते त्रिकालदर्शीपर नजैर अँटकलैन। मनमे उठलैन- त्रिकालदर्शी की? भूत, वर्तमान आ भविसकेँ जननिहार। भूत तँ भूत भेल जेकर लिखित-अलिखित इतिहास छै, वर्तमान सोझामे अछि मुदा भविस तँ हेराएल अछि ओकरा केना बिसवासक संग ताकि लेब..! ऐठाम आबि देवी कक्काक विचार महाभारतक साइयम श्लोक जकाँ चौमुड़िया गेलैन। चौमुड़ियाइते विचार पनपलैन। पनैपते मन कलशलैन। कलैशते बदलल विचार <u>माने</u> परिमार्जित विचार <u>मनमे</u> जगलैन। जगलैन ई जे जीता जिनगीमे त्रिकाल तँ अबिते अछि। माने ई जे कखनो कष्टकर समए अबैए तँ कखनो समगम आ कखनो नीकमे नीक। अही तीनू समैक बीच जिनगी चलैए। मुदा छी तँ तीनू जिनगीए, तँए तीनू जिनगी जीबैक लूरि चाही। जखने जीबैक लूरि सीखब तँ नीक-बेजा समए अबैत-जाइत रहतै आ जिनगी अपना गतिये कखनो दौड़ कऽ तँ कखनो डेगे-डेगी तँ कखनो ठाढ़े-ठाढ़ चलबे करत। देवी कक्काक मनमे रसे-रसे उदपन उठए लगलैन...।

तैबीच देवी कक्काक लगमे पहुँच पएर छुबि प्रणाम केलिऐन। ओना मने-मन काका पिताएल जकाँ रहबे करैथ मुदा सभ दिन नीक असिरवाद देनिहार आइ केना अपन दुख हमरेपर झाड़ि देता। हम कि कोनो आन गाम रहै छी जे ओ नइ जनै छैथ। पएर छुबि गोड़ लागि चानिपर हाथ लेलौं मुदा बजलौं किछु ने। ओना प्रणाम करैक तीनू चलैन अछिए। केतौ पएर छुबि गोड़ लागि गोड़ लागब सेहो बाजल जाइए। मुदा क्रियागत जिनगी जननिहार बिनु बजनौं ओते बुझि कऽ मानि लइते छैथ। केतौ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम कहल जाइत आ केतौ खलिये मुहेँ सेहो प्रणाम कहले जाइए। मुदा जे अछि देवी काका हाथ उठा माथकेँ थपथपबैत बजला-

"भगवान सभकेँ इष्ट करथुन।"

कक्काक असिरवाद सुनि मन झुझुआए लगल जे अपना दिससँ काका किछु नहि कहि भगवानपर फेक देलैन। भगवान की इष्ट करता! ओ तँ अपने इष्ट-अनिष्ट दुनू छैथ। मनमे रंग-रंगक खटुका सभ उठए लगल जे देवी काका बुझि गेला। बजला-

"गौरी, मन किए खट-मधुर भेल छह?"

बजलौं-

''मन किए खट-मधुर हएत। अपनेक असिरवाद नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं।''

देवी काका बजला-

''बौआ, दुनियाँमे बुझहक आकि गाम-समाजमे दू रंगक लोक अछि। ओना सगपतिया लोक सेहो बहुत रंगक अछि। सगपतिया लोकक माने भेल ओहन लोक जे कनी इष्टो केलैन आ कनी अनिष्टो केलैन। तहिना कियो अनिष्ट कम केलैन आ इष्ट बेसी केलैन, आ किछु एहनो लोक छैथ जे इष्ट कम आ अनिष्टे बेसी करै छैथ।''

बिच्चेमे बजा गेल-

''केना बुझब जे बेसी इष्ट करैबला छैथ आकि बेसी अनिष्ट करैबला?''

हमर बात सुनिते, जेना चौरीमे केशौरक पन्ना भेटते उखारनिहारकेँ बिसवास जगि जाइए जे आब केशौर भेटबे करत आ उखड़बे करत, तहिना बिसवासक संग देवी काका बजला-

''जेकरा मनमे जेहेन अभिष्ट रहल से तेहेन इष्ट वा अनिष्ट करैए।''

देवी कक्काक कनी-मनी बात बुझबो केलौं आ कनी-मनी नहियेँ बुझलौं। मुदा मनमे खोंचार पड़ए लगल जे पनरह दिनक जिनगीक गप करए एलौं आ अनेरे कथा-पिहानीमे वौआ रहल छी..!

अपन विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

''काका, ऐबेरक समए तँ अजीब भऽ गेल।''

'अजीब' सुनिते देवी कक्काक मन जेना हुरकलैन तहिना हुरकैत बजला-

''अजीब भेल कि सजीब से एना नइ बुझबहक।''

देवी कक्काक आत्मा जहिना परमात्म स्वरूप छैन तहिना बुधियो प्रवुद्ध छैन आ विचारो परम छैन्हें तँए मन सकपका गेल जे हिनका केना कहबैन जे काका अहाँक आगूक जिनगी गरथाहमे पड़ि गेल। जँ से कहबैन आ जँ ई कहि दैथ जे एके गाममे ने दुनू गोरे छी तखन जहिना तोहर चलतह तहिना ने हमरो चलत। तइसँ हुनकर बेथा-कथा थोड़े बुझि पएब। तखन तँ अपने विषयमे किए ने कहिऐन जे जे समस्या अपनो अछि सएह ने वृहत् रूपमे हुनको छैन। ऐसँ एते तँ विशेष लाभ हेबे करत जे जखने कोनो समस्याक समाधानक वृहद् रूप दृष्टिगोचर हएत तखने ओ समस्या बिच्चेमे दहलाए लगत। जखने दहलाए लगत तखने ओकरा या तँ हाथेसँ वा कोनो मेही वस्तुसँ छानि कऽ कातमे फेक देब। विचारमे मजगूती आएल। बजलौं-

''काका, आब जीवन कठिन भऽ गेल, तँए जैठाम सुवन भेटत तैठाम चलि जाएब।''

जहिना देवी काका कान रोपि सुनलैन तहिना आँखि उठा देखबो केलैन। प्रश्नक उत्तर दैत बजला-

''बौआ गौरी, जखन अपन एते गेल तैयो जी-रोपि अपनाकेँ ठाढ़ केने गाममे छी, मुदा तोहर तँ बड़ छोट समस्या छह, तूँ किए गामसँ पड़ेबह। हँ, सुवनक बात कहलह,ओ गामोमे बनि सकैए वशर्ते जँ जी-जान रोपि जीवनकेँ पकैड़ लेबह।''

ejournal 'विदेह' 232 म अंक 15 अगस्त 2017 (वर्ष 10 मास 116 अंक 232) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

ओना देवी कक्काक सभ गप सुनलौं मुदा बुझलौं अदहे-छिदहे। अदहा-छिदहा ई जे गामोमे सुवन बनि सकैए, एहेन विचार मनमे आइ धरि उठले ने छल जे एको-आध मिनट ऐ विषयक विषयमे विचारितौं। तँए नइ बुझल छल, जइसँ नीक जकाँ नइ बुझि पेलौं। ओना, कक्को बुझि गेला जे गौरी नीक जकाँ हमर विचार नइ बुझि पौलक। तैबीच बजलौं-

“काका सुवन..?”

‘सुवन’ बाजि वाणीकेँ ऐ दुआरे रोकलौं जे जँ एहेन बात बजा जाइए जइसँ प्रश्ने खण्डित भऽ जाइए तखन तँ उत्तरो खण्डित हेबे करत। जखने उत्तर खण्डित हएत तखने किछु-ने-किछु विचारो आबिये सकैए जे उतारक हुअए। मुदा ऐठाम तँ प्रश्नकेँ उतारैक नहि बल्कि चढ़बैक अछि। जे विचार देवी कक्काक मनमे पहिनहि जगि चुकल छेलैन। बजला-

“बौआ गौरी, जहिना सरयुग नदीक तटपर बसल अयोध्या अछि, जे रामक जन्मभूमि रहल तहिना यमुना नदीक तटपर वृन्दावन सेहो अछि जे कृष्णक लीला-धाम रहलैन। तहिना गामोमे जखन सुविचार जगत तखन सुकर्म सेहो जगबे करत। जखने सुकर्म जगत तखने सुकृत्ति रूपक कर्मभूमि बनत। आ जेना-जेना सुकृत्ति सुवृत्ति बनैत जाएत तेना-तेना जीवन सुवन दिस बढ़ैत जाएत।”

ओना देवी काका तीन जुगक इतिहास सुना देलैन मुदा अपन मन तँ जबदाह भाइए गेल छल। जबदाहो केना ने होइत, जखन पानिमे डुमल गामे जबदाह भऽ गेल अछि तखन कि अपने गामसँ हटल थोड़े छी जे ओइसँ वंचित रहितौं। जबदाह मन रहने नीक जकाँ देवी कक्काक विचार नइ बुझि पेलौं। मन घुरिया गेल जे अपन जिनगी जे जबदाहसँ जबदी दिस बढ़ि गेल अछि तेकर की उपाय हएत। तँए विचारकेँ मोड़ैत बजलौं-

“काका, बड़ सेहन्तासँ पाँचटा केराक गाछ केरलसँ अनने छेलौं। पाँचो पानिमे डुमि कऽ नष्ट भऽ गेल!”

घावपर मलहम लगबैत देवी काका मुस्कियाइत बजला-

“तोरो अपना इलाकामे केराक गाछ नइ भेटलह जे देशक सीमापर सँ आनए गेलह।”

एक तँ मन केलहा काजपर माने केरलसँ केरा गाछ आनि रोपैक प्रक्रिया तकमे नचैत रहए तैपर तेहेन बात देवी काका कहि देलैन जे विचारे उनैट गेल। बजलौं-“काका, सीमा-सुमीक बात नइ अछि, केरासँ सिनेह अछि। रामेश्वरम गेल रही। ओइठाम सौंसे बजारमे सभसँ ललिचगर केरे बुझि पड़ल।”

बिच्चेमे देवी काका टोकला-

“तखन तँ रामेश्वरम सोल्होअना फलहारे केने हेबह।”

हमरो मनमे रामेश्वरम् स्थान नचिते छल, तहूमे केराक बजारक बात, मन मिठाएल रहबे करए, बजलौं-

“काका सेहन्ते एक हत्था कीनलौं। हत्थोकेँ लोकक हाथ जकाँ पाँचे आँगुरक छल, बत्तीस छीमीक हत्था छल। ओ दन्तार छीमी। नीको आ सस्तो बुझि पड़ल। खूब खेलौं।”

बिच्चेमे टोकारा दैत देवी काका बजला-

“खेबे टा केलह आकि ओकर सुआदो पौलह?”

हमरो सुतरल। बजलौं-

“बिनु सुआद पौनहि एतेक दूरसँ बैजनाथ बाबाक कामौर जकाँ गाड़ीमे केराक गाछ टँगने एलौं।”

हमर बात सुनिते देवी काका आगू बढ़ि बजला-

“जखन रामेश्वरम्-सँ केराक गाछ अनलह तखन जँ कनियेँ आरो आगू बढ़ि लंका पहुँच जइतह तखन तँ हनुमानजी जकाँ आरो फल-फलहरी अनबे करितह किने?”

विचारक धारामे विचड़ैत रहबे करी, अनासुरतीए बजा गेल-

“तइमे कोन राहु-केतु बाधा होइत।”

तैबीच दुर्गा काकी चाह नेने पहुँचली। चाह देख मन हलैस गेल मुदा उदासीपन छाड़ने छल, जे दुर्गा काकी आँकि लेलैन। जहिना डाक्टर ऐठाम आकि अस्पतालमे साधारण रोगबला रोगी पैघ रोगसँ रोगाएल रोगीकेँ देख मने-मन खुशी होइत जे जखन एहेन रोगी बँचि सकैए तखन तँ हम बँचले छी, तइले अनेरे मनकेँ खट्टा केने रहब नीक नहि, तहिना आश्वस्त करैत दुर्गा काकी बजली-

“बच्चा गौरी, हमर बड़का काका सदिकाल पोता सभकेँ कहैत रहथिन जे ‘नअ दहार तखनो ने किछु उघार’, तखन एक दहार की बिगार...।”

दुर्गा काकीक बातो सुनैत रही आ चाहो पीबैत रही। एक तँ सुअदगर चाह, तैपर दुर्गा काकीक मधुराएल विचार सुनि आरो मन मीठा
गेल। बजलौं-

“काकी, जखन नान्हि-नान्हिटा चुट्टी घोदा-माली भऽ आड़ि-धुरसँ निकैल बाढ़िक वेगमे हेलैत समुद्र तक पहुँच जाइए, तखन अपना सभ तँ कहुना मनुख भेलौं किने...।”

हमरा विचारमे दुर्गा काकीकेँ की भेटलैन से तँ ओ जानैथ मुदा मन हरियरीसँ भरि-पूरि जरूर गेलैन। जेकरा देख देवी काका विचार छिनैत बिच्चेमे बजला-

“बौआ गौरी, यएह विडम्बना अछि!”

देवी कक्काक आगूक विचार सुनैले अपनाकेँ साकांच केलौं। साकांच करैक कारण मनमे उठल जे नीक विचार सुनैले जहिना अपन कानकेँ कनखारऽ पड़ैए तहिना ने धियानकेँ धियानी सेहो बनबए पड़ैए। सएह करैत बजलौं-

“की विडम्बना काका?”

हमर बात सुनि देवी कक्काक मनक विचार जेना हुमैर कऽ कुदए चाहलकैन तहिना देवी कक्काक मुखड़ामे लौकलैन। लौकते बजला-

“बौआ, जहिना पवित्र लोकक देवालपर देवालय ठाढ़ अछि तहिना गुँहचोरा-ले सेहो अछिए ने।”

देवी कक्काक विचारकेँ नीक जकाँ नइ बुझि पुछलयैन-

“से केना?”

विहुँसैत देवी काका बजला-

''ओना, बेकतीकेँ भीतर[3] सेहो सुकृत्ति कुकृत्ति अछि, मुदा ओ बेकतीकेँ प्रभावित करैए। मुदा ऐठाम से नहि, ऐठाम समाजिक प्रश्न अछि। समाज सेहो नीक-अधला करैबलाक समूह छी जे किछु अज्ञानतासँ सेहो आ किछु ढीठपनासँ सेहो होइए। जैठाम अज्ञानता होइए ओ क्षम्य अछि ओना क्षम्योक सजाए चेतौनी रूपमे जरूरी अछिए। मुदा जैठाम ढीठपनासँ होइए तैठाम समूहकेँ जगि कऽ जगबए पड़त। आ जँ से नइ हएत तँ समाज जेते उठए चाहत ओते निच्चाँ खसि-खसि पड़त। तँए...।''

किछु-किछु विचार देवी कक्काक बुझबो केलौं आ किछु-किछु नहियोँ बुझलौं। मुदा बिच्चेमे पत्नीक बात मन पड़ि गेल जे बेसी देरी नइ लगाएब। तँए मन कछमछा लगल। बजलौं-

''काका, हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता अछिए। अखन छुट्टी दिअ।''

मुस्की दैत देवी काका बजला-

''छुट्टीए-छुट्टी छह। मुदा छुट्टीए-मे कहीं अपने ने जिनगीक धारमे छुटि जइहह।''

देवी कक्काक विचारकेँ जँ नीक जकाँ बुझैत जइतौं तब ने, से तँ बुझिये ने पेब रहल छेलौं। तँए सिनेमाक कटल रील जकाँ विचार कटि-कटि जाइ छल। मुदा तैयो बजलौं-

''जीता-जिनगी जँ ई सभ नइ हएत तँ जिनगीक परीक्षा केना हएत।''

हमर विचार देवी कक्काक संग दुर्गा काकीकेँ सेहो नीक लगलैन। सह दैत दुर्गा काकी बजली-

''दुर्गा दुर्गत हारिणी छथिये किने।''

शब्द संख्या : 2838, तिथि : 25 जुलाइ 2017

---

[1] एक्के सीजन आम फड़ैए तँए साल

[2] सुपर्णा

[3] जिनगीक क्रियाक बीच

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

श्री नन्द विलास राय-

दूटा लघु कथा हमर लॉटरी निकलल आ शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य

१

हमर लॉटरी निकलल

झंझारपुर रेलबे टीशनक बगलमे एकटा दवाइ दोकान अछि, नाओं छिऐ- नवीन फार्मेसी। ओइ दोकानक ई विशेषता छै जे निर्मलीक डाक्टर पुरजा हुअए वा दरभंगाक डाक्टरक, फुलपरासक डाक्टरक पुरजा हुअए वा तमुरियाक डाक्टरक सभ दवाइ भेट जाएत। तँए दोकानमे खरीदवालक भीड़ हरिदम लगले रहैत अछि।

हमरो पत्नीक इलाज चलि रहल अछि। डाक्टर साहैब कहने रहथिन जे छह मास धरि दवाइ खाए पड़तैन। पाँच मास तँ बीति गेल आब छठम मासक दवाइ चलतैन। तँए हमहूँ दवाइ कीलैले झंझारपुर विदा भेलौं। चारिये बजे भोरबामे उठि कऽ तैयार भऽ भपटियाही स्कूल लग मुख्यमंत्रीबला सड़कपर एलौं। ओइठामसँ टेम्पू पकैड़ परसा हाल्टपर पहुँचलौं। परसा हाल्टपर टिकट कटा छह बजिया ट्रेनक प्रतीक्षा करए लगलौं।

बगलमे बैसल एक गोरे बाजल-

“ट्रेन आइ निर्मली सबेर गेल अछि तँए छह बजे धरि ऐठाम पहुँच जाएत।”

मोबइलमे समए देखलौं, पौने छह बजै रहए। ठीक छह बजे ट्रेन परसा हाल्टपर पहुँचल। हम एकटा कोठरीमे चढ़ि गेलौं। सबेर रहितो ट्रेनमे भीड़ छल।

ट्रेन घोघरडीहा टीशन पहुँच कऽ रूकल। एकटा महिला जे सलवार-समीज पहिने रहए, हमरे कोठरीमे माने जइ कोठरीमे हम बैसल रही, ओहीमे चढ़ल। घोघरडीहा टीशनपर ट्रेनमे भीड़ बढ़ि गेल दल। ओ महिला जैठाम हम बैसल रही, ओहीठाम आबि चारूदिस हिया कऽ तकलक। केतौ खाली जगह नै देख हमरसँ कहलक-

“बाबा, कने हमरो बैसए दिअ।”

ओइ महिलाक बाबा कहब सुनि हम छगुन्तामे पड़ि गेलौं। आखिर हमरा ई औरत बाबा किए कहलक। भाइजी कहैत तँ ठीक छेलइ। कक्को कहैत तँ ओतेक सोच नहि होइतए। बाबा किए कहलक..!

हम हिया कऽ निच्चा-सँ-ऊपर धरि ओइ महिलाकेँ देखए लगलौं। तैबीच ओ फेर टेकलक-

“एना की निंगहारि-निंगहारि देखै छी। कहियो मौगी नै देखने छिऐ की? कनेक घुसकु ने।”

आब तँ भेल औरो पहपैट। हमरा भेल जेना कोनो चीज चोरि करैत पकड़ा गेलौं। हम कनी खिसैक गेलौं। ओ महिला हमरा देहमे सटि कऽ बैस गेली। दोसर कियो रहैत तँ ओइ महिलाक सटब नीके लगिते। धरमागती पुछू तँ हमरो नीक लगैत मुदा ओ औरत जे बाबा कहने छेली तही सोचमे डुमल रही। सोची जे एतेक बुढ़ भऽ गेलौं जे ई महिला हमरा बाबा कहलक..?

गाड़ी सीटी देलक आ ससरए लगल। एकटा बीस-बाइस बर्खकलड़की जेकरा कोरामे एकटा लकधक साल भरिक बच्चा रहै, ओ खिड़की लग प्लेटफार्मपर ठाढ़ छेली, ओइ औरतसँ बजली-

“मम्मी ठीकसँ जइहेँ। गाम पहुँचते फोन करिहेँ।”

फेर कोरैला बच्चासँ कहली-

"बौआ, नानीकेँ टाटा कऽ दियौ।"

ओ महिला खिड़कीसँ हाथ निकालि हिलबए लगली।

हमर मन खसल रहए। हम सोचैत रही, आखिर ई महिला हमरा बाबा किए कहलक! जखन कि ओकरो नाति-नातिनभेल छै जे अखने देखलौं हेन।

हम ओइ महिला दिस हिया कऽ तकलौं तँ बुझि पड़ल जे ओकर केश रंगल छइ। सलवार-समीज तेतेक कसल रहै जे शरीरक अंग, जे परदामे रहबाक चाही ओ अदहासँ बेसी वेपर्दा भऽ जाइ जखन ओ कनेको निहुरए। शरीरक रंग एकदम गोर। दोहरा हार-काठ। शरीर ने बेसी मोटे आ ने बेसी पातरे। एकदम छरहर। आँखिमे काज लगौने, कानमे आधुनिक डिजाइनक बाली पहिरने। एन-मेन सोनाक लगइ। एकटा हाथमे गोल्डेन चेनबला टाटा क्वार्ज घड़ी। दोसर हाथमे कीमती चूरी। ठोरमे गाढ़ लाल रंगक लिपिस्टिक, नाकमे पाथर पड़ल छक, गरदैनमे मोतीक माला। आँगुर सभमे पाथर पड़ल औंठी। आँखिमे गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा। कन्हामे पर्स लटकल। हाथमे मेहदी लगौने। जखन ओकरा पएर दिस तकलौं तँ तकिते रहि गेलौं। दुनू पैरमे आरत लगौने जे ओकर पैरक सुन्दरतामे चारिचान लगबैत। हमरा कोनो कविक दोहा मोन पड़ि गेल-

"न पैरो में महावर रचाओ गोरी

संगमरमर का कलेजा पिघल जाएगा।"

हम अन्दाज लगेलौं, ऐ महिलाक उमेर कमतीमे 40-42 बर्खसँ कम नै हेतइ। मुदा तेना कऽ मेन्टन केने अछि जे तीस-बत्तीस बर्खक लगैत अछि। की कहू,मन घोर-घोर भऽ गेल रहए। किछु सोहेबे ने करए। ताबत ऐगला टीशनपर पहुँच ट्रेन रूकल। हम उतैर गेलौं। पानक दोकानपर जा ऐनामे अपन चेहरा निंगहारि कऽ देखलौं तँ बुझाएल जे अदहासँ बेसी केश पाकि कऽ उज्जर भऽ गेल अछि। सोचलौं, सुआइतई महिला हमरा बाबा कहलक। फेर सोचलौं, ओकरो केश तँ रेगलेरहइ। फेर ऐनामे देखलौं तँ अपन गाल पचकल बुझाएल जखनकि ओइ महिलाक गाल पुआ जकाँ फूलल छेलइ। तहूँ सेव जकाँ लाल। फरे ऐनामे देखलौं तँ आँखि एक हाथ तरमे बुझाएल। पानक दोकानदार टोकलक-

"पान खाएब की? केहेन पान खाइ छी, मीठा पत्ता आकि...।"

बिच्चेमे हम कहलिऐ-

"नै यौ बाबू, पान नइ खाएब।"

दोकानदार पुछलक-

"एना किए कननमुँह जकाँ बजै छी? की कियो रूपैआ-तुपैआ नै तँ निकालि लेलक हँ?"

"से तँ नै भेल अछि।"

ई कहैत हम ससैर कऽ मोसाफिर खानामे आबि एकटा ब्रेंचपर बैस गेलौं। मन हुअए बोम फारि कऽ कानए लागी। हमरा कौलेजक समै गप मन पड़ि गेल। की जिनगी छल। फिल्मी हीरोक स्टाइलमे रहै छेलौं। अमिताभ बच्चनक स्टाइलमे बाबरी राखी। अन्दर सुटिंग करि पेन्ट-सर्ट पहिरैत रही। आँखिमे करिक्का चश्मा रहैत छल। कौलेजक लड़की सभ हमरा राजेशखन्ना कहए। एक दिन घटना मोन पड़ि गेल। एकटा

लड़की जेकर नाओं अलका रहइ, ओ एकटा कागज हमरा कॉपीमे रखि देलक। हम कॉपी खोललौं तँ ओ कागज देखलिऐ। ओइमे लिखल रहै- आइ लव यू अलका। हम बुझू अकासमे उड़ए लगल छेलौं किएक तँ अलकाकेँ कौलेजक छौड़ा सभ कौलेज क्वीन कहैत छेलइ। ओ बड़ सुन्दर छेली। दोसर दिनसँ अलका कौलेज नइ अबैत रहए। पता चलल जे अलका बेमारपड़ि गेल अछि। बादमे पता चलल ओकर बाबूजी जे पीएनबी बैंकमे मैनेजरक पदपर काज करै छला, हुनकर प्रमोशन क्षेत्रीय प्रवंधकक पदपर दरभंगामे भऽ गेलैन हेन। तँए ओ सपरिवार दरभंगा चलि गेला। अलका आब दरभंगेमे पढ़त। एक मास तक हम अलकाक गममे गमगीन रहलौं।

तावेतमे ट्रेनक सीटी सुनलौं। मुसाफिर खानासँबाहर एलौं, गाड़ी टीशनपर पहुँच चुकल छल। गाड़ीमे चढ़ि गेलौं।

परसा हाल्टपर ट्रेनसँ उतैर टेम्पू पकैड़ गाम आबि गेलौं। धोती-कुरता पहिरनहि बिछौनपर जा पड़ि रहलौं। पत्नी चूल्हि लग छेली, ओ देखली तँ लगमे आबि पुछली-

“मर! की भेल हैँ जे एना बिना कपड़े बदलने पड़ि रहलौं। मन-तन ठीक अछि किने?”

हम किछु नहि बजलौं। हमरा हुअए जे बोम फारि कानए लागी।

पत्नी फेर पुछली-

“दवाइ आनलिऐ की?”

हम तैयो किछु ने बजलौं।

पत्नी सोचए लगली आन दिन जे झंझारपुर दवाइ आनए जाइ छला तँ अढ़ाइ-तीन बजे धरि घुमि कऽ गाम अबै छला। आइ साढ़े दसे बजे आपस आबि गेला। भरिसक पाकेटमार रूपैए नहि तँ निकालि लेलकैन। बजली-

“रूपैआ ने तँ पॉकेटमारी भऽ गेल?”

हम फेरो किछ ने बजलौं।

हमर पत्नी सोचली जे आखिर ई बजैत किए ने छथिन। ओ हमरा माथपर हाथ दैत पुछलैन-

“माथ ने तँ दुखाइत अछि?”

हम किछु ने बजलौं। हमर पत्नी हमर हाथ अपना हाथमे लऽ कऽ बड़ प्यारसँ बजली-

“अहाँक हमर सप्पत छी, कहू की भेल। एना किए उदास भऽ कऽ पड़ल छी।”

हम कनैत जकाँ बजलौं-

“की हम बुढ़ भऽ गेलिऐ।”

तैपर हमर पत्नी बजली-

“किए, से किएक पुछै छी। के अहाँकेँ बुढ़ कहैत अछि। हम तँ आइ धरि नै कहलौं हेन।”

हम कहलिऐ-

“आइ ट्रेनमे एकटा मौगी हमरा बाबा कहलक।”

हम ओइ औरतक पूरा हुलिया अपना पत्नीकेँ बता देलिऐ।

हमर पत्नी ठहक्का लगा कऽ हँसल। हँसैत बाजल-

"तँ ई बात छिऐ!"

हम कहलिऐ-

"अहाँ दिल खोलि कऽ हँसै छी। हमरा मन होइए जे भोकारि पाड़ि कऽ कानए लगी।"

पत्नी बजली-

"ऐमे केकर दोख। केतेक दिन कहलोँ जे समराट बनि कऽ रहू। मुदा अहाँ छी जे खादीक धोती, झोलंगाबला कुरता पहिर कन्हापर गमछा लऽ केतौ विदा भऽ जाइ छी। ने दाढ़ी कटबै दी आ नेकेशे सीटै छी। तँ बाबा नैकहत तँ बौआ कहत।"

हम कहलिऐ-

"सम्राट जे कहै छिऐ से कोनो हम राजा महराजाक बेटा छी जे सम्राट बनि कऽ रहब।"

तैपर हमर बेटी जे टीशन पढ़ि कऽ आएले छल, बाजल-

"पापा, मम्मी सम्राट नहि स्मार्ट कहैत अछि।"

तैपर हमर पत्नी बजली-

"हँ, हँ की कहलीही, बुच्ची असमाट?"

हमर बेटी जे आइ.एस-सी.मे पढ़ैत अछि बाजल-

"असमाट नै स्मार्ट।"

हम पत्नीकेँ कहलिऐ-

"अहूँ तँ कहियो काल कहैत रहै छी जे, आब अहाँकेँ के पुछत?"

पत्नी हमर हाथ अपना हाथमे लऽ बजली-

"उ तँ प्यारसँ मजाकमे कहलौं।"

तैपर हम बजलिऐ-

"के कहलक मजाकमे कहलौं छी आकि...।"

बिच्चेमे हमर पत्नी हमर बात कटैत बजली-

"अहाँक देह छुबि कऽ कहै छी जे ई गप हम मजाकमे कहलौं। आब मजाकोमे नै कहब। उठू, मुँह-हाथ धोउ ताबत हम चाह बना नेने अबै छी।"

बजलौं-

"अखन हमरा चाह-पान किछ ने सोहाइत अछि।"

तैपर पत्नी तोष दैत बजली-

ejournal 'विदेह' 232 म अंक 15 अगस्त 2017 (वर्ष 10 मास 116 अंक 232) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

"अहाँ एक्को मिसिया मनमे टेंशन नै लिअ। एक्के मासमे अहाँकेँ गोविन्दा जकाँ हीरो बना देब। फेर देखबै जे सोलह सालक लड़की अहाँसँ केहेन बेवहार करैत अछि।"

बिहाने भने हमर पत्नी हमरा संग केने निर्मली एली। पहिने डाक्टर रमेश बाबूक क्लीनिकपर अनली। डाक्टर साहैबकेँ हमरा देखबैत हमर पत्नी बजली-

"डाक्टर साहैब, हिनकर तेना कऽ इलाज करि दियौन जे गाल पुआ जकाँ फुलि जाइन।"

तैपर डाक्टर साहैब कहलखिन-

"गाल फुलबेटा नहि करतैन बल्कि सेब जकाँ लालो भऽ जेतैन मुदा दवाइक संग खानो-पान नीक हेबाक चाही।"

पत्नी बजली-

"डाक्टर साहैब, अहाँ जे-जे कहबै से-से खुएबैन मुदा गाल फुलबाक चाही।"

डाक्टर साहैब किछु केप्सूल आ तीन फाइल टॉनिक लिख, खेनाइमे की-की हेबाक चाही से सभ हमरा पत्नीकेँ समझा देलखिन।

डाक्टर साहैबक क्लिनीकसँ निकैल हम सभ बजार गेलौं। बजारमे एक किलो मनक्का, पाँच किलो सेब, पाँच किलो बदाम कीनि पत्नी झोरामे रखली। तेकर बाद क्लॉथ इंपोरियममे जा विमल सूटिंग-सर्टिंग दू-दूटा पैन्ट-शर्टक कपड़ा सेहो किनलैन। कपड़ा लऽ कऽ हम सभ मॉडर्न टेलरमे जा कऽ नाप दऽ कपड़ा सिबए लेल देलिऐ। पत्नी टेलर मास्टरकेँ कहलकैन-

"फिटिंग एकदम ठीक-ठाक हेबाक चाही।"

तैपर टेलर मास्टर जवाब देलखिन-

"मैडम, अहाँ एक्को रत्ती चिन्ता जुनि करू, कपड़ा पहिरलाक बाद सर बिल्कुल गोविन्दा जकाँ लगथिन।"

दर्जीकेँ कपड़ा देलाक बाद पत्नी हमरा लऽ कऽ हनमुमान रेडीमेडपर एली आ सेल्समेनकेँ हमरा देखबैत कहलखिन-

"हिनका लेल दूटा नीक जीन्स पैन्ट आ दूटा टी-शर्ट निकालू।"

सेल्समेन पुछलकैन-

"की रेन्जमे निकाली मैडम?"

तैपर पत्नी बजली-

"रेंजक चिन्ता नै करू। स्टेनडरसँ स्टेनडर निकालू।"

सेल्समेन पच्चीस-तीस पीस जीन्स पैन्ट आ पच्चीस तीस पीस टी-शर्ट हमरा सबहक आगाँमे पसारि देलक। ओइमे सँ एकटा ग्रे कलर आ एकटा ब्लू कलरक जीन्स पैन्ट पसिन केलौं। तेनाहिये एकटा लाल रंगक टी-शर्ट आ दोसर ब्लू रंगपर उज्जर धारीवला टी-शर्ट पसिन केलौं। चारि हजार टकाक बिल बनल। दोकानदार केँ बिल भुतान कऽ चश्माक दोकानपर गेलौं। ऐठाम गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा खरिदली। चश्मा

खरीदलाक बाद जूता दोकानपर जा एक जोड़ा खादिम कम्पनीक लेदरबला फूल जूता आ एक जोड़ा सैन्डिल खरीदली।

ई सभ खरीदलाक बाद पत्नी पुछली-

"आर किछ बाँकी तँ नइ रहल ने।"

हम कहलिऐ-

"दूटा रूमाल, दूटा कोठारी गंजी आ एकटा टाई।"

पत्नी बजली-

"ठीके, चलू पंसारी रेडीमेड सेन्टरमे ई सभ लऽ लइ छी।"

गंजी, टाइ आ रूमाल कीनलाक बाद पत्नी हमरा लऽ कऽ मुम्बइ सैलूनमे गेली। ओइठाम पत्नी हजामसँ कहली-

"हिनका फिल्मी असटाइलमे बाबरी छाँटि दियौन आ केशो रंगि दियौन।"

जाबे हजाम हमर केश बनौलक ताबेमे पत्नी एकटा नीक रेजर, एक पैकेट टोपाज ब्लेड, ब्रश बा बढ़ियाँ क्रीम आ फेयर इन लवली क्रीम सेहो कीनि कऽ आनली।

सभ समान कीनलाक बाद हम सभ मुन्ना होटलमे मासु-भात खेलौं। आ कनीकालक बाद मोसाफिर खानामे अराम कऽ चारि बजेमे टेम्पू पकैड़ आपस गाम आबि गेलौं।

दोसर दिनसँ भोरमे अढ़ाइ साए ग्राम सेबक फलाहार करी। फल खेलाक एक घन्टाक पछाइत साए ग्राम औंकुरल बदामक संग गुड़ खाइ। फेर एक गिलास दूध पीबी। खानामे पालकक साग सेहो खाइ। रातिमे सुतैसँ पहिने मनक्का देल एक गिलास दूध पीबी। आ तेकर बाद डाक्टर साहैबक लिखल केप्सूल आ टॉनिकक सेहो सेवन करी। पनरह दिनपर केश रंगी आ तेसरा दिनपर ढाढ़ी बनाबी। जहिया केतौ जेबाक हुअएतँ जाइसँ पहिने दाढ़ी बना कऽ फेयर इन लवली क्रीम लगौनाइ नहि बिसरी।

एक मास बीतैत-बीतै हमर गाल पुआ जकाँ तँ नहि फूलल मुदा सटकलो नहियेँ रहल। चिनाए गेलौं। चेहरापर रौहानी आबि गेल।

संयोजसँ पितियौत सारक बिआहमे सासुर जेबाक रहए। गेलौं। बरियाती जाइ काल जखन ब्लू जीन्स पैन्ट आ ललका टी-शर्ट पहिर गोल्डेन फ्रेमबला चश्मा लगा विदा भेलौं तँ हमर सारि जे एम.ए.मे पढ़ै छैथ, बजली-

"पाहुन तँ गोविन्दा जकाँ लगै छथिन।"

तैपर हमर पत्नीबजली-

"गइ छौरी, एना नहि हमरा दुल्हाकेँ आँखि लगाबही।"

हमर मन तँ बुझि अकासमे उड़ए लगल। बिआहसँ पहिने जखन बरमाला भऽ रहल छल तँ दुल्हिनक संग चारि-पाँचटा लड़की सभ बरमालाबला मंचपर ठाढ़ छेली। ओइ चारि-पाँचटा लड़कीमे एकटा सत्तरह-

अठारह बर्खक बड़ सुन्नैर जे एन-मेन करीना कपुर जकाँ लगै छेली ओ एकटकसँ हमरे दिस निहारि रहल छेली। जखन हमर आँखि हुनकर आँखिसँ मिलल तँ ओ हँसए लगली।

बरमालाक बाद जखन ओ दुल्हिनक संग जाए लगली तँ हमरा लग आबि बजली-

"हेल्लो, फेर भेँट हएब।"

ई कहि ओ आगाँ बढ़ि गेली।

हमरा भेल जेना लाख टकाक लॉटरी भेँट गेल।

शब्द संख्या : 1990

२

शिक्षाक अन्तिम उद्देश्य

रामनगर डिग्री महाविद्यालयक स्थापनाक स्वर्ण जयन्ती समारोहक आयोजन भेल। तीन दिवसीय कार्यक्रम रहए। पहिल दिन दू बजे दिनमे कार्यक्रमक उद्घाटन माननीय शिक्षा मंत्री एवम् कुलपति संयुक्त रूपसँ केलैन। उद्घाटनक पछाइत पहिल सत्रमे कौलेजक इतिहासक संग कौलेजमे की कमी आ की बेसी अछि ऐपर विद्वान-वक्तालोकैन अपन-अपन विचार रखलैन। ई कार्यक्रम साँझक पाँच बजे धरि चलल।

दोसर सत्रमे साँझक छह बजेसँ कौलेजक छात्र-छात्रा नृय, प्रहसन आ गीतनाद प्रस्तुत केलैन।

दोसर दिन, दिनक एगारह बजे छात्र-छात्राक बीच भाषण प्रतियोगिताक आयोजन छल। जेकर विषय छेलै- 'लोक किए पढ़ै-लिखैए, शिक्षाक अन्तिम उदेस की अछि?'

प्रतियोगिताक जूरीमे कौलेजक प्राचार्य महोदय, शिक्षक संघक अध्यक्ष आ छात्र संघक अध्यक्ष छला।

कार्यक्रममे कौलेजक शिक्षकगण, कर्मचारीगण आ पत्रकार लोकैन सेहो उपस्थित छला।

अध्यक्षक आदेशसँ प्रतियोगिता प्रारम्भ कएल गेल। पहिल वक्ताक रूपमे बी.ए. फाइनलमे पढ़ैत छात्र आलोक ठाढ़ भेला।ओ अपना भाषणमे बजला-

"पूज्यनीय अध्यक्ष महोदय, पूज्यपाद गुरुजन, उपस्थित वुजुर्ग आ वुद्धिजीवी लोकैन, छात्र-छात्रालोकनि-आजुक समैमे पढ़ाइ-लिखाइक बड़ महत अछि। जँ ई कहल जाए जे शिक्षा रोशनी छी तँए कोनो अनुचित नहि हएत। बिनु पढ़ल-लिखल मनुख आँखि रहितो आन्हर छैथ। शिक्षाक मूल उदेस ज्ञानी बनब छी। आ ज्ञानी बनि कऽ अपन चरित्र निर्माण करब थिक। ऐ सन्दर्भमे पूज्य बापू गाँधीजी कहने छैथ- शिक्षाक अन्तिम उदेस चरित्र निर्माण छी। चरित्र निर्माणक पश्चात राष्ट्र निर्माण करब सेहो छी। और सभसँ पैघ बात ईजे चरित्र निर्माणक संग मानवक सेवा शिक्षित मनुखक सभसँ पैघ कतर्व्य अछि।"

ई कहि आलोक बैस जाइ छैथ। जोरदार थोपड़ी बजा श्रोता लोकैन हुनका भाषणक समर्थन केलखिन।

दोसर वक्ताक रूपमे अंजली ठाढ़ होइ छैथ। अंजली बी.ए. द्वितीय वर्षक छात्रा छैथ, मैक पकैड़ सम्बोधनक पश्चात अंजली बजै छैथ-

"अखन जे पूर्व वक्ता आदरणीय आलोक भाय बजला जे शिक्षाक मूल उदेस चरित्रनिर्माण, राष्ट्र निर्माण ओ मानवक सेवा थिक, हम हुनका विचारसँ बिल्कुल सहमत नइ छी।"

श्रोतामे वुद्धिजीवी लोकैनक कान जाइत अछि। अंजली आगाँ बजै छैथ-

"हम तँ कहब शिक्षाक अन्तिक उदेस मात्र ढौआ कमेनाइ छी। देखियौ, लोक पढ़ि-लिख कऽ पैघ-सँ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर, कलक्टर, एस.पी; बी.डी.ओ;प्रोफेसर, मास्टर नहि जानि की की बनै छैथ। मुदा किनकोमे चरित्रक निर्माण कहाँ होइ छैन। घूस लऽ कऽ अकूट सम्पैत जमा करए लगै छथिन। डाक्टर सभ कमीशनक लेल अनावश्यक जाँच, कमीशनबला दवाई आ बिनु जरूरतक ऑपरेशन करै छैथ। प्रोफेसर सभकेँ डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहा भेटै छैन, मुदा की ओ सभ निष्ठा पूर्वक अपन कतर्व्यक निर्वहन नइ करै छैथ। डेढ़-डेढ़ लाख टका दरमाहाक बादो हुनका सभकेँ सन्तोख कहाँ छैन जे ट्यूशनक पाछाँ बेहाल रहै छैथ। हम तँ कहब जे विद्वानसेबेइमान आ जे डाक्टरसे डाकू!"

श्रोता दिससँ जोरदार थोपड़ी बजैत अछि।

अंजली आगू बजै छैथ-

"आलोक भाय बाजल छला- राष्ट्रक निर्माण...। यौ देखबे करै छिऐ जे पैघ-पैघ इंजीनियर, डाक्टर ढौआक लेल अपन देश छोड़ि विदेश जाइ छैथ आ अपन गाम-घर, देश छोड़ि विदेशमे बसि जाइ छैथ। एकटा बात आलोक भाय आरो बाजल छला जे मानवक सेवा। यौ जे अपन बुढ़ माए-बापक सेवा नहि कऽ रहल छैथ ओ आन मनुखक सेवा केना करता। तखन मानवक सेवा केना भेल आकि मान्वताक की भेल? हँ, पत्नीभक्त भऽ सकैत छैथ। हमर अनुभव अछि जे विद्वान लोकैन माए-बापसँ बेसी मोजर पत्नीकेँ दइ छथिन।"

ई कहि अंजली बसि जाइ छैथ। हिनका भाषणपर बड़ीकाल धरि थोपड़ी बजैत रहैत अछि।

तेसर वक्ताक रूपमे विवेक ठाढ़ होइत बजला-

"हम पहिलुका दुनू वक्ताक विचारसँ बिल्कुल असहमत छी।"

श्रोताक कान एकबेर फेर ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

विवेक आगाँ बजै छैथ-

"शिक्षाक उदेस चौवनिया नेता गिरी केना थिक। चौवनियाँ नेतागिरी कऽ ब्लौक, थानामे दलाली आ गाम-घरमे झगड़ा लगा अपन उल्लू सोझ करब आइ-काल्हिक पढ़ल-लिखल लोकक मुख्य काज रहि गेल हेन। जेतए तक पाइ कमेबाक बात अछि तँ ओइ लेल शिक्षित भेनाइ जरूरी नहि छइ। हमरा ओतए एकटा डीलर अछि, हँ-हँ वएह डीलर जे जनताक चाउर-गहुम आ मटिया तेल दइ छै, मोशकिलसँ दसखत करए अबै छै, मुदा ढौआ कमाइमे बड़का-बड़का इंजीनियर-डाक्टरक कान काटै छइ। पाँच बर्ख पहिनेसँ बोलेरो गाड़ीपर चढ़ैत अछि। मनुखोक सेवा करिते अछि। केकरो बेटीक बिआहमे पान-दस लीटर मटिया तेल दऽ दइ छइ। पाँच-दस गोरेकेँ चौक-चौराहापर चाहो-पान करा दइते छइ। फगुआमे किछ गोरेकेँ दारूओ पियाइए दइ छइ।"

ई कहि विवेक बैस जाइ छैथ। हिनको भाषणपर थोपड़ी बजैत अछि।

चारिम वक्ताक रूपमे अलका माइक पकड़ै छैथ। ओ अपना भाषणमे कहै छथिन-

“हम पहिलुका तीनू वक्ताक विचारसँ कनिक्रो सहमत नै छी। यौ आजुक समैमे शिक्षाक अन्तिम उदेस बिआहमे बेसी-सँ-बेसी दहेज लेब थिक।”

वुद्धिजीवी लोकैन एक-दोसरक मुँह दिस देखए लगला। अलका आगू बजै छैथ-

“देखियौ, डाक्टरक बिआहमे केतेक दहेज भेटै छै, फेर इंजीनियरकेँ देखियौ, कलक्टर-एस.पी. आ बी.डी.ओ; सी.ओ.क तँ बाते किछु और छै जे लड़िका कौलेजमे पहुँच जाइत अछि बुझियो हुनकर माए-बापक लौटरी निकैल जाइत अछि। ओइ लड़काक बिआहमे दस-बीस लाख टका नगद एकटा मोटर साइकिल,दू चारि भरि सोन दहेजक रूपमे भेटब आम बात भऽ गेल अछि। तेतबे नहि, डाक्टर-इंजीनियरकेँ बिना चारि चक्का गाड़ी आ कमतीमे बीस-पच्चीस लाख टका नगदसँ बिआहे ने होइत अछि। अहाँ कहबै ई तँ लड़काक बात भेल, लड़कीकेँ सुनू- पढ़ल-लिखल लड़कीक मांग बेसी छइ। जे मिडिलो पास लड़का छै ओहो अपन कनियाँ कमतीमे इन्टर पास तकै छइ। किए तँ नै बेसी तँ कम-सँ-कम इन्टर पास लड़की मास्टर तँ बनियेँ जाएत। पढ़ल-लिखल लड़कीक बिआहमे दहेजोमे किछु छूट भेटै छइ। यौ हम अपने परिवारक गप कहै छी। हम दू भाँइ आ दू बहिन छी। जेठ दुनू भैया छैथ। बड़ा भैयासँ छोटा भैया एक बर्खक छोट छैथ। बड़का भैया छठा तक पढ़ि खेती गृहस्तीक काज देखए लगला। छोटका भैया कौलेजमे पढ़ै रहथिन। बड़का भैयापर जे बरतुहार सभ आबथिन आ हुनका सभकेँ जखन पता चलैन जे लड़का छठे धरि पढ़ल छै तँ ओ सभ जे आपस गाम जाथि से फेर घुमि कऽ नै आबैथ। मुदा छोटका भैयाक बिआहक लेल बरतुहारक लाइन लागल रहए। बड़का भैयाक बिआहमे बाबूजीकेँ अपना तरफसँ खर्च करए पड़ल रहैन। तँए हम कहै छी जे शिक्षाक उदेस दहेज लेब छी आर किछु नहि।”

ई कहि ओ बैस जाइ छैथ। हिनको भाषणपर बड़ीकाल धरि थोपड़ी बजैत रहल।

भाषण प्रतियोगिताक प्रथम पुरस्कार अलकाकेँ भेटलैन। हम सोचै रही जे प्रथम पुरस्कार आलोक नहि तँ अंजलीकेँ भेटतैन। मुदा से नहि भेल। हम छगुन्तामे रही। सोचैतरही प्राचार्य महोदय भेटता तँ पुछबैन। संयोग नीक बैसल। एकटा कथा गोष्ठीमे प्राचार्यमहोदय भेटला। हम पुछि देलिऐन-

“श्रीमान्, स्वर्ण जयन्ति समारोहमे कोन आधारपर अलकाकेँ प्रथम पुरस्कार देलिऐन?”

प्राचार्य महोदय गम्भीर होइत बजला-

“शिक्षक संघक अध्यक्ष आ छात्र संघक अध्यक्षक विचार प्रथम पुरस्कार आलोकेँ देबाक रहैन, मुदा हम अड़ि गेलिऐ आ हमरा आगाँ हुनका दुनू गोरेकेँ किछु ने चललैन।”

हम पुछलयैन-

“अपने कोन बिन्दुपर अडि गेलिऐ?”

तैपर ओ जवाब देलैन-

“हमरा अपन बेटाक बिआह मोन पड़ि गेल रहए, जखन हमरा बेटाक बिआहक लेल बरतुहार एला तँ हम स्पष्ट कहि देलिऐन- हमरा बेटाक इंजीनियर बनेबामे बारह लाख टाका खर्च अछि। तँए ओकरा बिआहमे कमतीमे पच्चीस लाख टका लेब। लड़कीबला सहर्ष पच्चीस लाख टका दइले तैयार भऽ गेल छला।”

ejournal 'विदेह' 232 म अंक 15 अगस्त 2017 (वर्ष 10 मास 116 अंक 232) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

शब्दसंख्या : 1073

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

बेचन ठाकुरजीक दूटा एकांकी-

नीशा मुक्ति आ बरहम बाबा

१

नीशा मुक्ति

पात्र परिचय : नीशा मुक्ति

1. शंकर : एकटा गरीब किसान
2. सुनैना : शंकरक पत्नी
3. सुन्नर : शंकरक बड़का बेटा
4. खखन : शंकरक छोटका बेटा
5. शान्ति : शंकरक बड़की बेटी
6. चानी : शंकरक छोटकी बेटी
7. खट्टर : शंकरक दोस
8. मीना : सतमा वर्गक छात्रा
9. राजीव : मीनाक इसकूलक छात्र
10. रौशन : मीनाक इसकूलक छात्र
11. केदार सिंह : पहिल पुलिस

12. बदरी सिंह : दोसर पुलिस

13. रघुनाथ : पहिल चौकीदार

14. देवनाथ : दोसर चौकीदार

15. मटरा : स्थानीय किराना दोकानदार

16.रामनाथ : रेल यात्री

17. प्रभुदयाल : रेल यात्री

18. नन्द किशोर : रेल यात्री

19. प्रियंका : रेल यात्री

20. शशिकान्त : प्रधानाध्यापक

21. सोमदेव : सहायक शिक्षक

22. अनूप : सहायक शिक्षक

23. सोनी : सहायक शिक्षिका

24. चन्दन : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

25. गुंजन : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

26. रानी : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

27. अमन : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

28. महारानी : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

29. कपिलदेव : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

30. रामदेव : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

31. हरिदेव : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

32. ललिता : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

33. कविता : मानव श्रृंखलाक विद्यार्थी

34. महेश्वर : मानव श्रृंखलाक हाकिम

35. दिनेश : फोटोग्राफर

36. बच्चन : एकटा समाजिक बेकती

37. राम शरण : बच्चनक सहयोगी

38. रामलाल : एकटा समाजिक बेकती

39. रामबाबू : चाह दोकानदार

40. ललन : रामबाबूक सहयोगी

दृश्य एक

(स्थान- शंकरक घर। शंकरक पत्नी सुनैना। दूटा बेटा। सुन्नर आ खखन तथा दूटा बेटी शान्ति आर चानी मंचपर उपस्थित अछि। सुनैना परिवारिक दयनीय स्थितिक सम्बन्धमे चिन्तामग्न अछि। शान्ति आर चानी तीती-तीती खेलैए। सुन्नर आर खखन गुल्ली डन्टा खेलैए।)

शान्ति- ती था।

चानी- ती था।

शान्ति- ती था। ई हमर राज भेलौ। हमरा राजमे पएर नै दीहें।

चानी- ती था। ई हमर राज भेलौं। तूँ हूँ हमरा राजमे पएर नै दऽ सकै छें।

शान्ति- *(चानीक राजमे जा कऽ)* हम एबौ तोरा राजमे। तूँ की करभिन?

चानी- तूँ हमरा राजमे सँ चलि जो। नै तँ कोनो बाप काज नै देतौ।

शान्ति- नै जेबौ गइ, नै जेबौ।

चानी- एक दू तीन कहै छियौ मारबौ। नै तँ हमरा राजमे सँ अपना राजमे चलि जो।

शान्ति- मारि कऽ देखही तँ। बापसँ भेँट करा दइ छियौ।

(दुनूमे मारि फँसि गेल। दुनू उट्ठम-पटका करैए। सुनैना दौग कऽ आबि दुनूकेँ छोड़ा दू दिस केलक।)

सुनैना- सरधुआकेँ खाली जनमाबै ले होइ छइ। प्रतिपाल करैमे करौआ लागल छइ। दारू-ताड़ी-गाजा पीऐ ले होइ छइ। मुड़ी मचरूआकेँ एकौटा नीशा नै छूटल छइ। भाँग खाइए। खैनी खाइए, बीड़ी-सिकरेट पीते अछि। जर्दाबला पान खाइते अछि। चाह पीबते अछि। हे मैया सरसत्ती, एहेन घरबला सात घर दुश्मनोकेँ नै देबइ।

(सुनैना फेर माथा-हाथ दऽ बैस रहली।)

सुन्नर- *(गुल्ली फेंक कऽ)* ओत्तैसँ पढ़ैत आ।

खखन- *(एक टाँगपर)* चैत-कबड्डी, चैत कबड्डी, चैत कबड्डी चैत कबड्डीऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ।

(खखनकेँ रस्तेमे साँस टुटि गेल।)

सुन्नर- सार नै भेलौं, फेर पढ़।

खखन- *(फेर जगहपर जा कऽ)* चैत कबड्डी आबए दे, तबला बजाबऽ दे। गीत-नाद गाबए दे, नटुआ नचाबऽ दे ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ। *(खखन ठाढ़ भऽ हकैम रहलए।)*

सुन्नर- फेरो नै भेलौ सार। फेरो जो। पढ़ गऽ।

खखन- *(तुरैछ कऽ)* हम नै जेबौ सार। हम हकैम गेलौं हेन। *(सुन्नर खखनकेँ एक सटका बैसा देलक। खखन चिचिआ कऽ कानऽ लागल आर हाथ पएर पटकऽ लागल।)*

माए गै माए, बाप रौ बाप, सार सभ मारि देलक, जे सार हमरा मारलकै ओकरा माएके।

(सुनैना उठि कऽ दौगली। दुनूकेँ एक एक चाट मारि अपना लग लऽ जा कऽ बैसेली। दुनू एक-दोसरपर कन्हुआइए।)

सुनैना- तूँ सभ इसकूल किए ने गेलहीन? घरपर गुल्ली-डन्टा खेलै छें आर मारि-गारि करै छें।

सुन्नर- कॉपी छे नहियेँ तँ इसकूल केना जेबै?

खखन- हमरो पेन नइए तँ मुड़ी लऽ कऽ जेबै इसकूल?

सुनैना- बापसँ पाइ मांगए जाइ गेलहीन?

सुन्नर- मंगलिऐ तँ कहलक- पाइ नै छौ। बुढ़बाकँ दारू-गाँजा पीऐ ले होइ छै पाइ आर कॉपी ले नै होइ छइ।

खखन- हरदम बुढ़बा खिसियाएले रहै छइ। हम मंगलिऐ तँ कहक-जो ने कहिऐं माएकँ।

सुनैना- हँ हँ, किए ने? हमरा थैली देने छै रखै ले। अपना ले लल आर गोइठा बीछऽ चल। अपना दारू-ताड़ी, गाँजा-भाँग ले पाइए नै होइ छै आर हमरा रखै ले पाइ दइए। एत्तै केतौ नीशाँ केनाइ होइ छइ। बाप रे बा, हरदम नीशेमे चूर। चकेठबा जेतै कहियो चटपटमे। टुनकीबा कमाइ कम नै छइ। मुदा पीऐ ले बेहाल रहै छइ। हम सभ अन्न बेगैर मरे छी। धिया-पुता कुकुर-बानर जकाँ एमहर-ओमहर ढहनाइए। हे भगवान, हे दाता दिनकर, ओकर नेत सुधारहक। नै तँ हमरा सभकेँ मौगैत दऽ दएह।

(सुनैना कानए लगली।)

सुन्नर- माए गइ, खाइ ले दे। बड़ भूख लागलए।

खखन- *(कनैत)* केतए सँ देबौ। की देबौ? घरमे किच्छो नै छौ।

शान्ति- खाइले दे नऽ माए। हमरा बड़ भूख लागलए।

चानी- *(कनैत)* खाइले दे नऽ गइ। खाइ ले दे नऽ गइ।

सुनैना- *(खिसिया कऽ)* खाइ जाइ जो नऽ हमर देह। नोचि ले हमर देह आर खाइ जाइ जो।

(सुनैना कानऽ लगली। झूमैत-झामैत शंकरक प्रवेश।)

शंकर- की भेलै हन? सुन्नर माए किए कनै छें? शान्ति, की भेलौ हेन माएकँ?

शान्ति- खाइ ले मंगलिऐ तँ कानऽ लागल।

शंकर- सुन्नर माए, तूँ कनलें किए? हमरा कहितैं। खाइक जोगार हम करितिऐ।

सुनैना- आबो की भेलै? दहक पाइ। कीन आनै छी।

शंकर- *(जेबी- ढट्ठामे ताकि कऽ)* पाइ कहाँ छौ जे देबौ? पाइ तँ छेलै हन। की भेलै? लगैए केतौ खसि पड़लै। अच्छा जो, आइ केकरोसँ उधारी आनि लीहें।

सुनैना- जा नऽ तूँही। आनि दहक नऽ। हमरा कोइ उधारी नै दइए। सभकेँ धरने छिऐ। सभ खोंखिया कऽ दौगैए। तूँही आनि दहक।

शंकर- तूँही जो। हमरा तँ आओर कोइ नै दइए। तूँही जो। तोरा दऽ देतौ। तूँ मौगी छिहीन।

सुनैना- हम नै जाएब, हम नै जाएब, हम नै जाएब। हम मुँह नोचबै ले जाउ गऽ।

शंकर- *(खिसिया कऽ)* तोरा जाए पड़तौ। हमर कहल करए पड़तौ। नै तँ देखा देबौ।

सुनैना- हम नै जाएब। हमरा कोइ उधारी नै दइए। अपने जा।

शंकर- *(खिसिया कऽ)* हमर कहल नै करभिन तँ देखही हमर खेल।

(शंकर सुनैनाकेँ अनधून मारऽ लागल चारू धिया-पुता कानऽ लागल। सुन्नर आर शानति शंकरकेँ अपन-अपना दिस घीच कऽ छोड़बऽ लागल आकि सभ धियो-पुताकेँ अनधून मारऽ लागल। सभ कियो जोर-जोरसँ चिचियाए लागल- माए गै, बाप रौ। अन्तमे सुनैनाकेँ मारऽ लागल। सुनैनाक मुहसँ खून खसैत देख शंकर भागल।)

पटाक्षेप।

दृश्य दू

(स्थान- समूदायिक भवन। शंकर आर खट्टर दारू पी रहलए। दुनू गोरे दोस छैथ। दुनू चखनो खा रहलए।)

शंकर- रौ बैंह खट्टरा, औझका दारू बड़ सुअदगर छौ। आइ भरि मन, भरि छाँक पीबौ।

खट्टर- शंकर सार, आइ मटराक दोकानक ताला तोड़ै के छइ। छेनी, मरिया आर रीन्च लऽ लीहें।

शंकर- लै के कोन जरूरी छइ। संगेमे छइ।

(फाँड़सँ निकालि खट्टरकेँ देखौलक।)

खट्टर- सार, तूँ पहुँचल फकीर छें रौ।

शंकर- तब नऽ मलफै उड़बै छिऐ।

(एकटा तेरह बर्खक सुन्नैर लड़िकी मीना बस्ता लऽ कऽ गुजरली।)

खट्टर- रौ सार शंकर, किछु देखबो केलही?

शंकर- कथी रौ?

खट्टर- समान। चारा।

शंकर- कथी कहै छिहीन रौ? खोलि कऽ बाज नऽ।

खट्टर- एगो लड़की इसकूल जाइ छेलै। उ छेलै कमाल के।

शंकर- चल नऽ कनी देखिऐ। सुनसान हेतै तँ देखबै।

(शंकर आर खट्टर अन्दर गेल। मीना जोर-जोरसँ माए गै, बाप रौ चिचिआ रहलए। कनीकालक पछाइत मीना दम तोड़ि देली।)

खट्टर- *(अन्दरसँ)* रौ सार शंकरबा, तोरा बुते मरलै।

शंकर- *(अन्दरेसँ)* रौ बैंह खट्टरा, तोरा बुते मरलै।

खट्टर- लऽ चल एकरा। केतौ सड़क कातमे फेंक देबै।

शंकर- जल्दी चल। विद्यार्थी सभ अबै छइ। पकड़ा जाइ जेबें।

(शंकर आर खट्टर मीनाकेँ उठौने प्रवेश केलक। शीघ्र दुनू गोरे मीनाकेँ मंचपर पटैक भागि जाइ गेल। राजीव आर रौशनक प्रवेश। दुनू विद्यार्थी मीनाक लाश देख डरि कऽ चौंकल।)

राजीव- रौ रौशन, उ तँ मीना छै। अपने इसकूलमे पढ़ै छइ। इसकूलक डरेशो पहीरने छइ।

रौशन- राजीव, हमरा बड़ डर होइ छौ। भाग एतए सँ। जल्दी चल, इसकूलमे सरकेँ कहबै।

(राजीव आर रौशनक तेजीसँ प्रस्थान। कनियेँ कालक पछाइत दूटा पुलिस केदार सिंहआ बदरी सिंह अपन दूटा चौकीदार रघुनाथ आर देवनाथक संग प्रवेश केलैथ। चारू गोरे लाशकेँ देखलैथ।)

केदार सिंह- रेहे चौकीदार, लाश को लादो गाड़ी में।

बदरी सिंह- सर, ई लड़की इसकूल जा रही थी। रस्ता मं मौका पाकर कोइ दारूबाज इसका जान ले लिया। साला निशेवाज सभ, हरामी बच्चा ऐ भोली-भाली बच्ची को लगत काम करके मारकर फेंक दिया।

केदार सिंह- रेहे चौकीदार सभ, मुँह का देखता है? जल्दी लादो लाश को गाड़ीमे।

(रघुनाथ आर देवनाथ लाशकेँ उठा कऽ अन्दर लऽ गेलैथ। दुनू पुलिस सेहो पाछू-पाछू अन्दर गेलैथ। कनैत-कनैत मटराक प्रवेश।)

मटरा- *(छाती पीटैत)* माए गै माए, बाप रौ बाप। जुलुम कऽ देलक चोरबा जनमल सभ। हमर बाल-बच्चा आब केना जीयत? बाप रौ बाप। सार चोरबाकेँ पकैड़तिऐ तँ टेंगारीसँ कुट्टी-कुट्टी काटि दैतिऐ।

(रघुनाथक प्रवेश।)

रघुनाथ- की भेलह हन मटरा भाय?

मटरा- बाप रौ बाप, जुलुम भऽ गेलह हौ चौकीदार। डिल्लीसँ कमा कऽ एलौं। एक लाख पूजी लगेलौं। किराना दोकान खोललौं। महिनो नै कमेलौं। साला चोरबा ताला तोड़ि देलक। सभटा समान लऽ गेलऽ। आब कथी हम बेचबऽ? धिया-पुता कथी खेतऽ? आब हम की करबै हौ चौकीदार? हमरा किछु नै फुराइ छह हौ चौकीदार।

रघुनाथ- ई गप तूँ थानामे इन्ट्री करा दहक।

मटरा- हमरा माहुरो खाइले पाइ नै छह। तँ थानापर केना जेबै? तूँही मदैत करऽ ने?

रघुनाथ- छोड़ि दहक। हमहीं बाड़ा बाबूकेँ कहि देबैन।

(रघुनाथक प्रस्थान)

मटरा- लगैए, शंकरबा सार लऽ गेल समान। मुदा हम देखलिऐ तँ नहि। जौं पकैड़तिऐ तँ सारकेँ टेंगारीसँ कुट्टी-कुट्टी काटि ओतै राखि दैतिऐ।

पटाक्षेप।

दृश्य तीन

(स्थान- सामूदायिक भवन। शंकर आर खट्टर दुनू दोस चखनाक संग ताड़ी पी रहल अछि। दुनू मस्तीमे अछि।)

शंकर- सार खट्टर, तूँ अनाड़ी छें। कनियेँ ले रातिमे बाँचि गेलें। नहि तँ दुनू गोरे धरा जैतें। चौकीदर अबै छेलै हन।

खट्टर- सार शंकर, तूँही अनाड़ी छें। केहेन-केहेन पुलिस हमरा पकैड़ नै सकल। ई चौकीदरबा कोन माल-मे-माल छइ। बेसी एमहर-ओहमर करतै तँ ओकरो घरमे चोरि कऽ लेबै। लैत रहत गदहाबला।

शंकर- औझका की प्रोग्राम छौ से कह सार खट्टरा।

खट्टर- औझका हमर विचार ई जे बहुत परदेशी सभ फगुआमे गाम अबैत हेतै दिल्ली-पैंजाब-मुम्बइसँ कमा कऽ सभ लग बहुत-बहुत पाइ हेतइ। होशियारीसँ सबहक जेबी मारि लेबै। चल आइ टीशनेपर।

शंकर- ठीक विचार छौ। चल टीशनेपर। जेबी नै सुतरतै तँ बैग-एटैची सुतरतै नऽ। मुदा जाइसँ पहिने गाँजा पी कऽ मूड बना ले।

सट्टर- हमरो तँ सएह मन छेलौ। जेबी मारनाइ आकि बैग-एटैची पार केनाइ भीड़ेमे बढ़ियाँ होइ छइ।

(दुनू गोटे गाँजा पीलक। फेर दुनू गोरे सिकरेट धरा कऽ पीबैत टीशन दिस विदा भेल।)

शंकर- रौ बैंह खट्टरा, टीशनपर छौड़ी-मौगी सभ बड़ रहै छइ। एक-पर-एक सुन्नैर सभ रहै छइ। अपना सभकेँ जएह किछु तँ संतोख हेतइ।

खट्टर- शंकरबा सार, हमरा ओत्तै नै पढ़ा। हम अपने ओइ सभसँ रिटाइर छी। भीड़मे केत्तेकेँ हम की नै करै छी। चल, चल। जल्दी चल। गाड़ीक समए भऽ गेलै हन।

(दुनू गोरे टीशन जा रहलए। दुनू गोरे क्षणिक समए ले अन्दर गेल। क्षणिक पटाक्षेप भेल। अन्दरमे रामनाथ, प्रभु दयाल, नन्द किशोर आर प्रियंका ट्रेन पकड़ै ले तैयारअछि। शंकर आर खट्टर मंचपर आएल। शीघ्र पर्दा हटल। यात्री चारू गोरे कुरसीपर बैसलए। शंकर दुनू गोरे घुमि रहलए।)

शंकर- गाड़ी आबि रहल अछि। पॉकीटमार सँ सावधान। *(यात्री चारू गोरे उठलैथ। प्रभुदयाल जेबी टटोललैथ। शंकरसहैट कऽ प्रभुदयाल लग आर खट्टर प्रियंका लग गेल। शंकर दुनू गोरे पॉकेट मारऽ लागल आकि धरा गेल। चारू आदमी शंकर आर खट्टरकेँ मारि रहलए। मार सार के- मार सार केँ हल्ला भऽ रहलए। केदार सिंह आर बदरी सिंह प्रवेश कऽ दुनूकेँ अनधुन मारऽ लागल। शंकर दुनू गोरे ओंघरा रहलए। बदरी सिंह शंकरकेँ आर केदार सिंह खट्टरकेँ मारि रहल छैथ।)*

अनुवोधक- *(अन्दरसँ)* यात्रीगण कृपया ध्यान दें। जयनगर से चलकर नई दिल्ली को जानेवाली गरीब रथ एक्सप्रेस प्लेटफॉर्म नं. १ पर आ रही है।

(अनुवोधक ऐ गपकेँ दू बेर कहलैथ।) चारू यात्री अन्दर गेल। दुनू पुलिस शंकर दुनू गोरेकेँ मारनाइ छोड़ि देलैथ। दुनू उठि कऽ हाथ-पएर झाड़लक।)

बदरी सिंह- ला साला, माल-पानी।

शंकर- आइ नै देब सर। आइ बड़ मारलौं हन।

केदार सिंह- तूँ बड़ी चौंसठ बा। बहोत माल मारता है। लाउ एक हजार।

खट्टर- आइ किन्नौं नै देब। अहाँ बड मारलौं हन।

केदार सिंह- ना मारी तँ पब्लिक कैसे बुझी। पब्लिक के बुझाना हाय जे हम पुलिस हाय। कुछ शो भी करना पड़ता हाय नऽ। जो ही कुछ देना है दे दऽ।

खट्टर- आइ हम किन्नौं नै देब। हमरा दवाइ कराबऽ पड़त।

केदार सिंह- जाउ साला सभ, जाउ। आज छोड़ देते हैं।

(शंकर आर खट्टर लड़खड़ाइत-लड़खड़ाइत अन्दर गेल।)

बदरी सिंह- केदार भाय, एगो गप बुझलिऐ हन की नहि, दारूक सम्बन्धमे?

केदार सिंह- नहि, की भेलै से?

बदरी सिंह- दारू बन्न भऽ गेल। हम भोरे पेपरमे पढ़लौं। हेन सरकार चाहै छैथ जे देवराज्यकेँ नीशा मुक्त करी। कारण ऐ सँ राज्यमे अनेक तरहक घटना दुर्घटना भऽ रहलै हन। जेना- चोरी-

डकैती, छीनरपनी, बैमानी, लूट-पाट, बलत्कारी इत्यादि। ऐ सभ तरहक शिकाइत सरकारकेँ बहुत भेलै हन। तही दुआरे सरकार नीशाँ मुक्तिक करगर कदम उठेलक हन। *(दुनू पुलिस कुरसीपर बैसलैथ।)*

केदार सिंह- कदम जदी सफल भऽ जेतैन तँ देवराज्य सरकारकेँ दुनियाँमे नीक प्रतिष्ठा भेटतैन। मुदा भाय, अपना सभकेँ बड़ दिक्कत भऽ जाएत। कारण ओइ बेगैर अपना सभकेँ एको दिन नै निमहत। अपना सभ ले सरकार किछु जोगार करतै, की नहि?

बदरी सिंह- उम्मीद कम आर भरोस ज्यादे। ओना पेपरमे दारू, ताड़ी, गाँजा, भाँग, खैनी, बीड़ी, सिकरेट, पान इत्यादिपर रोक लगाएल गेल हन। कारण सभ मे नीशा छै आर उ नीशा कोनो-ने-कोनो रूपमे देहक लेल नोकसानदायक अछि। जेना खैनीमे निकोटीन पएल जाइए जइसँ कैंसरक सम्भावना रहैए। ओही खैनीसँ बीड़ी, सिकरेट, पान मशाला इत्यादि बनैए। सोभाविक छै उ समान अपना सभकेँ नोकसान करत। दारूसँ फेफड़ा जरै छै, कीडनी फेल करै छै। गाँजासँ फेफड़ा जरै छै, दम्मा होइ छइ। ऐ तरहें हम कहि सकै छी जे प्राय: सभ नीशाबला पदार्थ देहक लेल खतरनाक अछि जेकरा तियागने स्वास्थ्यक रक्षा हएत।

केदार सिंह- भाय बदरी, सरकारकेँ जे करबाक हो, से करौ। मुदा हमरा ले दारूक जोगार सरकार करैत रहौ।

बदरी सिंह- अहाँ बताह जकाँ गप करै छी भाय। अहाँ आब दारूसँ छातीपर मुक्का मारि लिअ।

केदार सिंह- भाय, हमरा ओइ बेगैर नै बनत।

बदरी सिंह- किए नै बनतै? मनकेँ जेत्ते चसकेबै, मन ओते चसकतै। मन जेते काबूमे रहत, ओते मानवतामे धनिक रहब। मने सभ किछु छिऐ। कोनो शायर कहने छथिन- मन ही देवता, मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोय। मन उजियारा जब जब फैले, जग उजियारा होइ।

केदार सिंह- भाय, अहाँ केँ अध्यात्मिक ज्ञान बड़ अछि यौ।

बदरी सिंह- हमरा अध्यात्मिक ज्ञान सूइयाक नोको बरबैर नै अछि। ओना, समए निकालि कखनो-कखनो कोनो-कोनो अध्यात्मिक पोथी पढ़ि लै छी। सरकारक नीशा मुक्ति कदमक स्वागत करैत हम आइ संकल्प लै छी जे हम कोनो नीशा नै करब, नै करब, नै करब।

पटाक्षेप।

दृश्य चारि

(स्थान- शंकरक घर। सुनैना सूपमे चाउर फटैक रहलए। सुन्नर आर शान्ति एक दिस तथा खखन आर चानी दोसर दिस भऽ कबड्डी खेल रहलए।)

सुन्नर- कबड्डी, कबड्डी, कबड्डी, कबड्डी, कबड्डीऽऽऽ।

खखन- चैत कबड्डी, चैत कबड्डी, चौत कबड्डी, चैत कबड्डीऽऽऽ।

शान्ति- कबड्डी कबड्डी, कबड्डी खेल।

घृणा त्यागि, राखू मेल।

चानी- चैत कबड्डी अड्डा, बाप तोहर बुड्ढ़ा।

तोड़ि देबौ नेंगरी, बना देबौ बोंगरी।

सुन्नर- चैत कबड्डी एला, माए तोहर लैला।

बाप तोहर मजलूम, तूँ बाबा मखदूमऽऽऽऽ

(खखन आर चानी सुन्नरकेँ टाँग पकैड़ घीचैए अपना दिस आर सुन्नर अड्डा दिस घीच कऽ लऽ जाइए। सुन्नरकेँ अड्डासँ पहिने साँस टुटि गेल। खखन आर चानी थोपड़ी बजा कऽ खूम हँसए लागल।)

खखन- कबड्डी कबड्डी, तोड़ि देबौ हड्डी।

निकालि देबौ पोंटा, मारबो दू सोंटाऽऽऽऽ।

(खखन शान्तिकेँ घीचने-घीचने पढ़ैत-पढ़ैत अपना घर लऽ गेल। फेर खखन आर चानी थोपड़ी बजा कऽ हँसए लागल।)

खखन- *(नचैत-नचैत)* हरा देलियौ, हरा देलियौ।

चानी- *(हारि गेलें हरूआ, खा ले गूँहके तरूआ।)* 3

(चारू भाए-बहिनमे मारि फँसि गेल। सुन्नर-खखन आर शान्ति-चानी उट्ठम-पटका करैए। सुनैना चाउर फटकनाइ छोड़ि दौग कऽ आबि झगड़ा छोड़ाबऽ लगली। चारूकेँ दू-दू चाट दऽ कऽ सुनैना अलग-अलग केली। चारू हकमैत एक-दोसरपर कन्हुआ रहलए।)

सुनैना- तूँ सभ झगड़ा किए करै जाइ गेलें?

सुन्नर- तोहर बेटी हमरा किए कहलकौ- हारि गेलें हरूआ, खा ले गूँहक तरूआ? तीन बेर कहलकौ।

सुनैना- आब नै कहतौ। झगड़ा नै करै जाइ जो। भाए-बहिनमे झगड़ा करै जाइ जेबहीन तँ लोक बुड़बक कहतौ।

खखन- माए गै, पापा केतए रहै छै? काए दिनसँ घर पर नै देखै छिऐ।

सुनैना- केतौ रहौ सरधुआ। ओम्हरै मरि जाउ।

शान्ति- पापाकेँ गारि किए दइ छिहीन गै?

सुनैना- तोहर पापा ताड़ी-दारू-गाँजा पी कऽ बुच्च रहै छौ। अपना सबहक पेटक जोगार नै करै छौ। हमरा मजूरी कऽ पेटक जोगार करए पड़ैए। तोरा सबहक पढ़ैक जोगार नै करै छौ। दोकानदार सभकेँ उधारीबला पाइ नै दै छौ। अही सभसँ दिल बड दुखाएल अछि। तँए ओकरा गरियबै छिऐ।

शान्ति- ओहेन पापाकेँ हमहूँ गरियेबै। ओहेन पापाकेँसुपैन धारमे देबै, गजहर गाछमे सुतेबै।

(शंकरकेँ पकड़ने खट्टरक प्रवेश। खट्टर साधुक भेषमे अछि। शंकर एककातमे नीशामे ठाढ़ भऽ असथिरे-असथिरे हिलैए आर खट्टर ओकरा पकड़ने ठाढ़ अछि।)

खट्टर- दोसतीनी, दोसकेँ परसू साँझमे घुमैकाल एन.एच.पर एगो बोलेरोबला ठोकर मारि देलकै। हम उठा-पुठा कऽ टेम्पूमे लादि होस्पीटल लऽ गेलौं। डाक्टर जाँच-परतालक पछाइत कहलैन- हिनकर फेफड़ा जरल छैन आर किडनी सेहो फेल छैन। ई बहुत सिरियस छैथ। ई दू-चारि दिनक मेहमान रहि गेल छैथ। हिनका घरेपर लऽ जाउ।

सुनैना- अहाँ तँ एकरा बहसा कऽ तूल कऽ देलिऐ। दारू पीआ-पीआ जान लऽ लेलिऐ निशेवाज कहीं के।

खट्टर- दोस्तीनी, जहियासँ सरकार नीशा बन्न केलकै तहियासँ हम नीशेबाजी छोड़ि देलिऐ। बबाजी बनि गेलौं हन। देखै छिऐ, हमर बगे।

सुनैना- झूठा नहितन। देखबैले बबाजी भऽ गेल हन।

खट्टर- *(कण्ठी देखा छुबैत)* हम कण्ठी छुबै छी। झूठ नै कहै छी। हम सभटा नीशा छोड़ि देलौं।

(शंकर बैस गेल। खट्टर ठाढ़े रहल।)

सुनैना- तँ दोसोकेँ किए नै छोड़ा देलिऐ?

खट्टर- दोसकेँ हम कहलिऐ। मुदा ओ नइ मानलैथ। केना-ने-केना केतौ-ने-केतौसँ ऊपर कऽ कनी-मनी पीए लै छैथ।

सुनैना- अखनो तँ दोस पीनेए।

खट्टर- हमरो लगैए। हमरा आश्चर्य लगैए जे केना उपरा कऽ मारि दै छथिन।

सुनैना- *(खिसिया कऽ)* बड़ पीयाक छै तँ भने ओम्हरे होस्पीटलेमे मरि जइतै से नहि।

शंकर- *(खिसिया कऽ झूमैत)* तोरा बापक कमाइकेँ नै पीलौं हन। अपना कमा कऽ पीलौं हन। हमरा अपने बड़ मन खराप अछि। तैपर खिसियबैए।

खट्टर- दोसतीनी, हम जाइ छी। सोसराइरमे साइरकेँ बिहा छिऐ। दोसपर नीक जकाँ धियान देबइ।

(खट्टरक प्रस्थान।)

सुनैना- दारू-गाँजा पीऐत-पीऐत मन खराप कऽ लेलक हन। परिवारपर कोनो धियाने नहि। लेबरमे खटि-खटि हम कौहना पेट चलबै छी। एकरा एकर कोनो लाज नहि।

(शंकर टगि कऽ मरि गेल। सुनैना माए गै, बाप रौ चिचियाए लगल। चारू धिया-पुता सेहो खूम कानए लागल।)

केतए चलि गेलहक हौ सुन्नर पापा। केतए चलि गेलहक हौ शान्ति पापा। आब केना रहबै हौ चानी पापा।

पटाक्षेप।

दृश्य पाँच

(स्थान- एन.एच.। नीशा मुक्ति हेतु मानव श्रृंखलाक पूर्ण तैयारी भऽ चुकल अछि। प्रधानाध्यापक शशिकान्त आर सहायक शिक्षक सोमदेव नीशा मुक्तिक सम्बन्धमे गप-सप्प करै छैथ।)

शशिकान्त- सोमदेव बाबू, देवराज्य सरकारकेँ नीशाबन्दी कानून बड़ नीक रहलैन। प्राय: सम्पूर्ण राज्य नीशा मुक्त भऽ गेल हन। दारू बाज सभ तँ छरपटाइए। मुदा केतौ दारू नै भेटैए ओकरा सभकेँ। दारूए-टा नहि, ताड़ी, भाँग, गाँजा, खैनी, बीड़ी, पान, सिकरेट सेहो बन्न भऽ गेल।

सोमदेव- सर, देवराज्य सरकारक ई कदम बहुत सराहनीय रहल। मुदा किछु हेहर, पतीत अखनो चोरा-नुका कऽ दारू-ताड़ी-गाँजा मारिए लै छइ। आखिर रजबुधिसँ चोरबुधि भारी होइ छै किने।

शशिकान्त- से जे हौउ। मुदा सरकारक ई नीशाबन्दी नीशामुक्ति कार्यक्रम 99 प्रतिशत सफल रहल। ऐ ले हम सरकारकेँ हार्दिक धैनवाद दै छिऐन। अहिना जदी सरकार अपराधपर नियंत्रण करै तँ देवराज्य देवलोक बनि जाएत।

सोमदेव- सरकारेक मन छिऐ। ऊहो भऽ सकैए। सर, अखैन धरि विद्यार्थी सभ नै जुटल हन। कहीं चेकमे अपना सभ पकड़ा नै जाइ।

सुनैना- पकड़ेबै किए? हाकिम नै बुझै छथिन ठंढाक समए छइ। सभ विद्यार्थी खा-पीब कऽ मजगूत भऽ कऽ आएत किने। कारण एन.एच.पर रौदमे ठाढ़ हुअ पड़तै। गाम-गामसँ विद्यार्थीकेँ पहुँचैमे कनी-मनी अबैर-सबेर हेबै करतै।

(सहायक शिक्षक अनूपक संग चन्दन, गुंजन, अमन, रानी आर महारानी अन्दरमे नारा लगा रहलए।)

चन्दन- ताड़ी-दारू बन्न करू। *(शशिकान्त सोमदेव उठि कऽ टहैल रहल छैथ।)*

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

(सभ कियो प्रवेश केलैथ। चन्दनक हाथमे झण्डा छैन। अनूप सभसँ पाछू छैथ झंडापर नीशामुक्त देवराज्य लिखल अछि।)

चन्दन- गाँजा-भाँग बन्न करू। *(घुमि-घुमि कऽ)*

सभ कियो- बन्न करू बन्न करू।

चन्दन- खैनी-बीड़ी बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

चन्दन- सिकरेट-पान बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

(अनूप सभ विद्यार्थीकेँ पतयानीमे लगेलैथ। सहायक शिक्षिका- सोनीक संग कपिलदेव, रामदेव, हरिदेव, ललिता आर कविता अन्दरमे नारा लगा रहलए। अनूप अपन टीम लग ठाढ़ छैथ।)

(शशिकान्त आर सोमदेवक प्रस्थान।)

कपिलदेव- ताड़ी-दारू, बन्न करू।

सभ कियो- नीरोग रहू, नीरोग रहू।

(सभ कियो प्रवेश केलैथ। कपिलदवेक हाथमे झण्डा छैन। सोनी सभसँ पाछू छैथ। झण्डापर नीशा हटाउ, देवराज्य बँचाउ लिखलए।)

कपिलदेव- गाँजा-भाँग बन्न करू। *(घुमि-घुमि कऽ)*

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- खैनी-बीड़ी बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- सिकरेट-पान बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- सुपारी-गुटका बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

(सोनी सभकेँ पतयानीमे लगेलैथ। सोनी अपन टीम लग ठाढ़ छैथ।)

अनूप- *(घुमि कऽ)* सभ गोरे ठाढ़ रह। ऊपरसँ हाकिम सभ एथिन। फोटो झीकैबला एथिन। फोटो झीका कऽ जाइ जइहें। सभ कियो सटि-सटि कऽ ठाढ़ रह आर नारा लगबैत रह।

सोनी- *(घुमि कऽ)* जखन तोरा सभकेँ टाँग दुखा जेतौ तँ बैस जाइ जइहें। बिना फोटो झीकेने कोइ नइ जाइ जइहें।

कपिलदेव- नीशा हटाउ, नीशा हटाउ।

सभ कियो- राज्य बँचाउ, राज्य बँचाउ।

चन्दन- नीशा छोड़ू, पाय बँचाउ।

सभ कियो- धिया-पुता, पढ़ाउ-लिखाउ।

(एकाएकी सभ गोरे बैस गेल। रामशरण आर बच्चनक पानि लऽ कऽ प्रवेश। सभ गोरे ठाढ़ भऽ जाइ गेल। रामशरण आ बच्चन पानि बँटै छैथ। पानि बाँटि दुनू गोरे प्रस्थान केलैथ। रामलाल बिस्कुट लऽ कऽ प्रवेश केलैथ। रामलाल बिस्कुट बँटै छैथ। बिस्कुट बाँटि रामलालक प्रस्थान। राम बाबू आर ललनक चाह लऽ कऽ प्रवेश। ई दुनू गोरे चाह बँटै छैथ। चाह बाँटि दुनू गोरे प्रस्थान केलैथ।)

अनूप- चन्दन, नीशामुक्तिपर जे ऊ गीत तैयार केने छेलहीन से, गाबही ने।

चन्दन- जी सर, गाबै छिऐ।

(चन्दन आर रानी एक दिस झड़नी लऽ कऽ तथा गुंजन आर ललिता दोसर दिस झड़नी लऽ कऽ गीत गाबैले तैयार भेल।)

चन्दन+रानी- हाँऍजीऽ ऽ ऽ ऽ, दारू-ताड़ी बन्न भेलइ।

बन्न भाँग गाँजा।

खैनी बीड़ी सिकरेट बन्न भेलैजी।

गुंजन+ललिता- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, गुटको पान सुपारी हटलै।

रोगी सभ निरोग भेलइ।

राज्य नीशामुक्त भेलैजी।

चन्दन+ललिता- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, चोरी हटलै डकैती घटलै अपराध बलत्कारी भगलै।

समुचित शिक्षा बढ़लै जी।

गुंजन+रानी- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, अनुशासन, शिष्टाचार एलै।

सुख-शान्ति बहार एलै।

सहानुभूति परेम बढ़लैजी।

चन्दन+रानी- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, आब नै कहियो नीशा औतै।

औतै सत्यानाश हेतै।

सम्हरल घर बिगैड़ जेतैजी।

गुंजन+ललिता- हाँएजीऽ ऽ ऽ ऽ, चोरबुद्धी भारी रहलै।

रजबुद्धी हल्लुक।

चोर उपरा कऽ पीतैजी।

(थोपड़ीक बौछार भेल।)

अनूप- *(फोन रिसिभ कऽ)* हेल्लो, सर प्रणाम। जी जी। जी सर। हम सभ तैयार छी। *(फोन कटि गेल)*

सोनीजी, अहाँ एक-एक हाथपर लाइन लगबा लिअ। हाकिम आर फोटोग्राफर आबि रहल छैथ।

सोनी- जी सर, हम लाइन लगबा लै छी। सभ कोइ एक-एक हाथपर लाइन लगबै जाइ जो।

(सोनी एक-एक हाथपर सभ विद्यार्थीकेँ लाइनमे लगेलैन।)

(शाशिकान्त आर सोमदेवक प्रवेश।)

चन्दन- नीशेवाजी बन्न करू।

सभ कियो- बन्न करू, बन्न करू।

कपिलदेव- नीशा भगाउ, इज्जत बँचाउ।

सभ कियो- इज्जत बँचाउ, इज्जत बँचाउ।

(नीशाबन्दी कार्यक्रमक प्रखण्ड स्तरीय हाकिम बैचयुक्त महेश्वर आर फोटोग्राफार दिनेशक प्रवेश। महेश्वर निरीक्षण करै छैथ आर दिनेश फोटो झीकै छैथ।)

महेश्वर- अनूपजी आर सोनीजी, हमरा दुनू गोटेक गेला पछाइत अहूँ सभकेँछुट्टी। सरकारक नीशामुक्ति कार्यक्रम पूर्ण सफल रहल।

(महेश्वर आर दिनेशक प्रस्थान।)

अनूप- आब सभ विद्यार्थी अपन-अपन घर ओरिया कऽ जाइ जाइ जो। एन.एच. नीक जकाँ पार करिहें दुनू कात देख कऽ।

(सभ विद्यार्थीक प्रस्थान भेल। शशिकान्त, सोमदेव, अनूप आर सोनी हाथ जोड़ि प्रणाम कऽ मुड़ी झूका लेलैथ।)

पटाक्षेप। इति शुभम।

२

बरहम बाबा

पात्र-परिचय

(1.) बौकु- एकटा गरीब किसान

(2.) फूलो- बौकुक पत्नी

(3.) बुधन- बौकुक पड़ोसी

(4.) चानोदाइ- पहिल कारणी

(5.) रामबती- दोसर कारणी

(6.) बदरी- पहिल दर्शक

(7.) कारी- दोसर दर्शक

(8.) भूल्ला- तेसर दर्शक

(9.) अशर्फी- चारिम दर्शक

(10.) राम उदगार- पाँचिम दर्शक

(11.) मुसना- बौकुक दू बर्खक बेटा

(12.) राम कुमारी- बौकुक बड़की बेटी

(13.) रामपरी- बौकुक छोटकी बेटी

दृश्य- एक

(स्थान- बरहम बाबाक गहबर। समए-साँझका बौकु आ फूलो बरहम बाबाक पूजा ले सभ श्रमजानक संग उपस्थित छैथ। फूलो गहबर साफ कऽ रहली अछि। तखने बुधन मृदंग आ झालिक संग प्रवेश करैए।)

बुधन- भैया, बरहम बाबाक महिमा अगम अथाह छैन। सुनलौं, हुनके किरपासँ तोरा बेटा भेलह। मन बड़ हर्षित भेल। आब ठीक छह- दूगो बेटी आ एगो बेटा।

बौकु- हुनकासँ पैघ दुनियाँमे आर के? हिनका शरणमे जे कियो एला, हुनकर कल्याण आइ धरि भेल हन आ अग्रिमो हेबे करत। तँए ने हमर मुसना माए हुनक पूजामे जी-जान लगौने रहैए।

बुधन- भैया, तूँ केतेक दिनसँ भीख माँगै छेलह?

बौकु- तीन पहिनासँ बेसीए बुझीन।

बुधन- ऐ बेर बरद नै ने बेचए पड़तह?

बौकु- से नै पूछ। ओइ बेरुका मारल अखैन धरि छी। होश नै भेल हन। ओइ बेर पनरह दिन भीख माँगने रही। मुदा ऐबेर दुनू परानी तीन महिनासँ भीख ले कोन-कोन गाम नै बौआकेँ कोरामे लऽ

कऽ वौएलौं। लगैए ऐ बेर नै घटतै। ओहीसँ पेटो चलै छेलए किने। साँझू पहर घर चलि अबै छेलिऐ।

बुधन- अँए हौ, पूजा ले भीख माँगै छेलहक आ ओहीसँ पेटो चलबै छेलहक? ई नीक बात नै भेलह। अइसँ पुन नै पापे हेतह।

बौकु- की करबै, हमरा तँ और कोनो जोगार नै छेलए। बाबा नै बुझै छथिन जे हमरा भगतकैं पाँच आदमीक पलिवार छइ।

(अपन-अपन डालीक संग चानोदाइ आ रामबतीक प्रवेश। पूजाक सभ तैयारी फूलो कऽ लेली अछि। बौकु झालि आ बुधन मृदंग बजबैत भगैत गाबि रहल अछि। फूलो ध्यानस्थ भेली। बदरी, कारी, भूल्ला, अशर्फी आ राम उदगारक प्रवेश। राम कुमारी कोरामे मुसनाकैं लऽ कऽ प्रवेश केली। संगमे बहीन-रामपरी सेहो अछि।)

बौकु+बुधन- बरहम अँगनमामे, पीपरकेर गछिया हे।

तै पर देवी ऽ, दे ऽ वता हे।

बरहम अँगनमामे...।

कौन फूल चढ़ै देवी, कौन फूल देवता हे।

कौने फूल चढ़ै बरहम, बाऽ बाऽ हे।

बरहम अँगनमामे...।

अरहुल चढ़ै देवी, गेंदा फूल देवता हे।

गुलाब फूल चढ़ै बरहम, बाऽ बा हे।

बरहम अँगनमामे...।

फूल दीप मधुर देवी, लड्डू पान देवता हे।

खीर पूड़ी बरहम, बाऽ बा हे।

बरहम अँगनमामे...।

(फूलोक देहपर बरहम बाबा अबै छथिन। मृदंग बजनाइ बन्न भऽ जाइए। सभ कारणी शान्त भऽ हाथ जोड़ि लइ छैथ।)

फूलो- बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, के छियह तूँ?

फूलो- बोल जय गंगा। हम बरहम छियह। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। बड़ी कालसँ कारणी सभ बैसल छइ। कनी एकरो सभकेँ कल्याण करहक।

फूलो- हम कोन जोकरक छी जे लोककेँ कल्याण करबै। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हम बुझै छिऐ किने तूँ कोन जोकरक छहक से। एत्ते दूरसँ जे कारणी अबै जाइ छै से बिन कल्याणे अबै छइ। तूँ हीरा छहक। हीरा अपन मोल नै बतबै छइ।

फूलो- बोल जय गंगा। हमरा बुत्ते जे हेतह तइमे हम नै चुबहक। सएह ने। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हे, ऐ कारणीकेँ देखहक।

फूलो- *(चानोदाइ दिस ताकि)* हइ, तोहर घरबला कमाइ बड़ छह मुदा भाभंश नै होइ छह। पाँच आदमीक परिवार छह। तीनि साए टाका रोज कमाइ छह। कहियो बैसलो नै रहै छह। मुदा पेटोपर आफद रहै छह। इएह बात छै की ने?

चानोदाइ- *(घोघ तरसँ मुड़ी डोलबैत)* हँ।

फूलो- हम जे कहबह, से करबहक की ने?

चानोदाइ- हँ, करबैन।

फूलो- सत्त करह। बाजह- 'एक सत्त दू सत्त, ब्रह्म विषुण सत्त अहाँक कहल जे नै करए, अस्सी कोस नरकमे खस।

चानोदाइ- एक सत्त दू सत्त, बह्म विषुण सत्त

अहाँक कहल जे नै करए, अस्सी कोस नरकमे खस।

फूलो- बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा।

फूलो- तोहर घरबला दारू आ गाँजा पीऐ छह। काजो करैले जाइ छह तँ पीकऽ बुच्च रहै छह। ओकरा कखैन की हेतह, कोनो ठेकान नहि। अँए हइ, तीन साए टाकामे दू साए-अढ़ाइ साएक पीए लेतह तँ बँचल-खोंचलसँ की भाभंश हेतह? तहूमे मँहगाइ अकास छूने जा रहल अछि।

घरवलाकेँ कौहुना ई आदैत छोड़ाबह। कहक- 'दारू-गाँजाक बदलामे दूध-दही-घी खाउ। थकान ले हम सभ दिन मालिश कऽ देब।' आ करबो करहक। अइसँ पहिने तूँ कहियो मालिश नै करै छेलहक। की, बात साँच छिऐ, की नइ?

चानोदाइ- हँ, साँचे छिऐ।

फूलो- बोल जय गंगा।

बौकू- जय गंगा।

फूलो- घरवलाकेँ हँसा कऽ खेला कऽ मालिश कऽ आ ओकरामे पैस कऽ रसे-रसे कड़ाइ करबहक तँ उ अबस्स चेत जेतह। उ सुधरतह आ तोहर सभटा दुःख भागि जेतह। बाजह हमर कहल करबहक की ने?

चानोदाइ- हँ, अबस्स करबैन।

फूलो- जा, तोहर कल्याण हेबे करतह।

(हाथ जोड़ि प्रणाम कऽ चानोदाइक प्रस्थान।)

बोल जय गंगा। और के छह?

बौकु- *(रामबती दिस इशारा करैत)* सरकार, ई छथिन।

फूलो- बोल जय गंगा। तोहर दूटा बेटा आ एगो बेटी नै सुधैर रहल छह। हरदम नरहेर जकाँ एमहर-ओहमर करैत रहै छह। तीनूक पाछू तोरा बड़ पाय खरच होइ छह। मुदा कोइ रस्तापर नै आबि रहल छह। तोरा अपन दियादनीपर शक होइ छह जे वएह किछु कऽ देलक हन। सएह ने?

रामबती- *(मुँह उधारि)* हँ, बाबा। अपने अंतर्यामी छथिन बाबा।

फूलो- बोल जय गंगा। हइ, दियादनीक कोनो दोख नै छह। तोहर अपने दोख छह। तीन साल पहिने परमानन्द मासाएबसँ छअ महिना पढ़बा कऽ फील ले आइ-काल्हि, आइ-काल्हि करै छेलहक। एक दिन बेचारा खगने कनी जोरसँ पाय माँगलखुन तँ तूँ सभ हुनका सातू पुरखाकेँ उकटलहक आ मारबो करै जाइ गेलहक। बेचारा कानि कऽ दुआरिपरसँ गेलह। हुनके आप छयह। कहह तँ वेचरा टीशन कऽके गुजर-बसर करै छथिन। बेचारा बड़ असथीर लोक छथिन। हुनका संग हुनके बोनि ले एहेन खराप बेवहार! ई बड़ पैघ गलती भेलह। बोल जय गंगा।

रामबती- बाबा, आब ओकर कोन उपाए छइ?

फूलो- बोल जय गंगा। *(कनीकाल किछु सोचि कऽ)* दुनू परानी हुनका ऐठाम जा कऽ पएर पकैड़ क्षमा माँगहक। उ दयालु लोक छथिन अबस्स क्षमा कऽ देथुन। तेकर पछाइत हुनका बाँकी फीसक दोबर फीस दऽ दिहौन आ हुनकासँ अनुनय-विनय करीहक। जे धिया-पुताकेँ फेर पढ़ा दियौ। अहीं बुत्ते उ सभ सुधैर सकै छइ। आब अहाँकेँ नै छोड़ब आ ने अहाँ संग गलती करब। बोल जय गंगा। हइ, हमरा बिसवास छह जे उ मानि जेतह। जा, अक्खैन जा। उ घरेपर छथिन।

(हाथ जोड़ि प्रणाम कऽ रामबतीक प्रस्थान।)

बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, हम जे सकलियह तइमे जी-जान लगा कऽ पूजा केलियह आ एहिना करैत रहबह।

फूलो- बोल जय गंगा। हमर पूजा करै छह, नीक बात। मुदा हमरा पूजा खातिर तूँ बीकि जाह वा तकलीफ उठाबह वा प्रतिष्ठा हनन करह, से बात हमरा एक्को रत्ती पसीन नै छह। हम तोरा पूजासँ एक्केअना प्रसन्न छिअ। तोहर पूजा पनरहअना बेकार भेलह। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। हम तँ जी-जान लगा पूजा केलियह जइसँ सरकार हमरापर सोलहन्नी खुश रहथिन आ मनसँ असिरवाद देथिन। मुदा केतए की गलती भेलै, उ तँ सरकार अपने कहबै।

फूलो- हमरा पूजा खातिर तूँ बरद बेचलहक। से किए? आ जँ बरद रहितह तँ हरो जोति गुजर-बसर करितह। कहह तँ, केते दिन कमेबह तँ बरद कीनबह? तहूमे पेटोक सवाल छइ। गरीब किसान छह। बरद तोहर हाथ-पएर छह। बरद खातिर तोरा तकलीफ भऽ रहल छह। ओइसँ हमरो तकलीफ छह।

तूँ भीख माँगि पूजा करै छह से किए? अपन पसेनाक कमाइसँ पूजा करबहक तँ बेसी फल हेतह। भीख माँगि कऽ करैमे भीख देनिहार तोहर फल बाँटि लइ छह। कनी देरी वा बेसी देरी हेतै पूजामे, सएह ने? तँ की भऽ जेतइ? हम तँ केतौ भागल नै जा रहल छी। तहूमे बेसी खरचा करबाक कोन खगता छइ। हम खीरक भूखल नै छी। हम प्रेम-श्रद्धाक भूखल छी। प्रेमसँ जे किछु भेलै आ जेतबे भेलै, वएह बड़ भेलइ। जी-जान लगेबाक कोनो खगता नै छै। बोल जय गंगा।

बौकु- जय गंगा। सरकार, दोसर बेरसँ ऐ सभ बातकेँ धियान रखबै। अखैन धरि जे किछु घट्टी-कुघट्टी भेल हो, ओकरा माफ करिहक।

फूलो- जा, माफ छह। आन बेरसँ लगती माफ नै हेतह। आब जाइ छिअ। केसटोलीमे पूजा ढारल छइ। बोल जय गंगा।

(फूलो धरतीपर माथ टेकलैथ। बौकू गंगाजल छींटलैथ। फूलो उठि देह-हाथ झाड़ि सम्हारि कऽ बैसली। दुनू परानी दर्शककेँ हाथ जोड़ि प्रणाम केलैथ। थोपड़ीक बौछार भेल।)

इति शुभम्

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आशीष अनचिन्हार

मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काजपर रिपोर्ट

विदेह सदिखन वास्तिविक आ सामयिक काज करए बलाकेँ सलाम ओ प्रोत्साहित केलक अछि। एखन बाढ़ि पीड़ितक बीच जाहि तरहें मिथिला स्टूडेंट यूनियन (MSU) काज कऽ रहल अछि से आगूक लेल एकटा उदाहरण बनत। ई पहिल बेर अछि जखन कि मिथिलाक नामपर बनल कोनो संस्था जनताक बीच गेल आ ओकरा समर्थन भेटलै। ई समर्थन काज केलासँ भेटलैए। खाली मौखिक समर्थन नै तन-मन-धन तीनू भेटलैक अछि आ मिथिला स्टूडेंट यूनियन साबित केलक जे हँ ओ भविष्यमे नमहर दायित्व सम्हारि सकैए। विदेहक किछु पछिला अंकमे सेहो मिथिला स्टूडेंट यूनियनक काजकेँ रेखांकित कएल जे अछि जे कि संपादकीय वा रिपोर्टक रूपमे सुरक्षित अछि। मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर बाढ़ि पीड़ित फंडमे दान देबाक लेल सभ गोटा स्वतंत्र छी। चाहे रुपया हो कि एक लाभ। निच्चामे बैंक डिटेल देल जा रहल अछि–



मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर सभसँ बड़का विशेषता अछि मिथिलाकेँ दरभंगा-मधुबनीसँ बाहर करब। मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर ई प्रवृति निश्चिते भविष्यमे वृहद मिथिला राज्यक गठन लेल बाट खोलत। ता धरि मिथिला स्टूडेंट यूनियन केर एहि काजक लेल फेसँ सलाम करैत किछु चित्र परसि रहल छी जे कि सेनानी सभहँक मनोबलकेँ आर आगू बढ़ाएत–




मिथिला













ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

श्री कपिलेश्वर राउतजीक

आधा दर्जन लघु कथा-

चाहबला

"बाबू आब चाहक दोकान छोड़ि दियौ। हम सभ भाँइ आब कमाए-खटाए लगलौं। आब अहाँक उमेरो पचपन-साठि भेल। सभ दिन कि काम-धन्धा करिते रहब।"

"बौआ कहलह तँ बड़ नीक बात, मुदा चाहे दोकानक बदौलत तूँ सभ मनुख बनलह आ आइ शहर जा रूपैआ-पैसा देखै छहक। हम तँ कौहुना अपन रोजगारमे लागल रहै छी। देहकँ धुनि गुजर-बसर करै छी।

कमाएल-खटाएल देह अछि, जेतेक शरीरकेँ चलाएब-फिराएब तेतेक ने देहक खून चालू रहत आ अपनो दुरुस्त रहब। तूँ सभ तँ हमरा काहिल बनबैक बात कहै छह। जाबत धरि पैरुख अछि ताबत धरि हम कमेबे-खटेबे करबह। रफिक मियाँकेँ नहि देखलहक, पाँचटा बेटा छै, पाँचो कमासुत, वेचाराकेँ सभ काम-धन्धा छोड़ा देलक। काज छुटिते वेचरा लोथ भऽ कऽ मरि गेल। नोकरियोबला केँ तहिना होइ छइ। जहाँ ने कि काजसँ रिटायरमेन्ट भेटल कि वेचारा अपनाकेँ कोनो जोकरक नहि बुझऽ लागल। जिबाक बीस बर्ख तँ जीबत पाँच बर्ख। मने झूस भऽ जाइ छइ।"

सुखल नून, एकटा मोटगर रोटी आ एक लोटा पानि नेने रमाकान्त बाबू बालेसरकेँ पनपियाइ लऽ कऽ गेल छल। आरिपर ठाढ़ भऽ कऽ जोरसँ बजला-

"रौ बाले, पनपियाइ कऽ जो।"

बालेसर आसा-बाटीमे रहबे करए। झट-दे बरद ठाढ़ कऽ आरिपर आबि, हाथ मुँह धो जलखै करए लागल।

भूखलमे जहिना गुल्लैरो मीठ होइ छै तहिना बालेसर हाँइ-हाँइ पाँचे-सात कौरमे रोटी खा गेल आ एक्के नीशामे भरि लोटा पानि सेहो पीब गेल। मुदा आरो पानि पीबैक इच्छा रहइ। तैबीच रमाकान्त बाबूसँ बालेसर कहलकैन-

"मालिक थोड़ेक कालक बाद एक लोटा पानि लऽ कऽ आएब।"

रामाकान्त बाबू किएक पानि लऽ कऽ जेता! पानि लऽ नहि गेला।

चैत-बैशाखक कर-करौआ रौद, तैपर पछिया हवा चलि रहल छल। एहेन समयमे बालेसर गहुमक खेतकेँ जोति रहल छल। पानिक आशा-बाटी तकैत रहल। मुदा जखन मालिक पानि लऽ कऽ नहि गेलैन तँ खिसिया कऽ हर खोलि देलक।

हर-बरद नेने घरपर पहुँच, बरदकेँ खुट्टापर बान्हि हरकेँ गठुल्लामे राखि अघोर मने बालेसर अपना घरपर आबि गेल। थोड़ेक सुसतेलाक बाद भरि इच्छा पानि पीलक, तहन मन कनी शान्त भेलइ। मुदा मनमे तेसरे तरहक उड़ी-बिड़ी धऽ लेलकै।

रमाकान्त बाबूक परिवार गामक भगिनमान। सभतूर पढ़ल-लिखल। रमाकान्त बाबूक पीत्ती दरभंगा महराजक ओइठाम नोकरी करैत, कियो दिवान तँ कियो पटबारी। रमाकान्त बाबू अपने सात भैयारी, सातो भाँइमे दू भाँइ गामपर रहैत छला बाँकी पाँचो भाँइ कियो सरकारी नोकरी तँ कियो प्राइवेट नोकरी करैत। रमाकान्त बाबूक मझिला भाए- विनोद आ अपने गामक खेती-बाड़ीक काज देखैत छला। ऊपरसँ निच्चाँ परिवारक सभतूर धूर्त नम्बर एक, जालफरेबी नम्बर एक। कियो सोनाक कंगना लऽ कऽ नदीक कछेरमे बैसल तँ कियो बहुरूपिया रूप धऽ कऽ अपन उल्लू सोझ करैत। सिरिफ छोटका भाए जेहने नाम विनोद तेहने काम विनम्र।

बालेसरक पिताक नाओं रामकिसुन। रामकिसुन अपना जातिक मैनजन छल। शरीर एकदम हट्टा-कट्टा रहै रामकिसुनक। रहबो किए ने करितै अखड़ाहा परक खेलेलहा देह रहै किने। अपना जवानीमे रमाकान्त

बाबूक अमलदारीसँ पूर्व हुनके परिवारमे हरवाहि करैत छल। पछाइत जखन रामकिसुन हरबाहि छोड़ि देलक तहन बेटा पकैड़ लेलकै, माने बालेसर हरबाहि करए लागल।

आइ बालेसर जखन तबधल मने घरपर आएल तँ मनमे एकटा संकल्प केलक। संकल्प ई जे आब अनकर हरबाहि नहि करब। अपन रोजगार करब। अपन काज करब।

बिहान भने रमाकान्त बाबू जखन हरबाहि लेल बालेसरकेँ कहलखिन तँ ओ साफ-साफ कहि देलकैन-

“आब हम हरबाहि नइ करब। आ ने अहाँक ओइठाम कोनो आने काज करब।”

रमाकान्त बाबू पुछलखिन-

“किए ने हरबाहि करमे? आ हमर जे कर्जा-बर्जा अछि से पहिने दऽ दे। बापे तेतेक खेने छौ से कहल ने जाए।”

बालेसर ने आव देखलक आ ताव, तर-दे बाजल-

“हिसाब कऽ लिअ।”

“ठीक छै, घरपर आ हिसाब कऽ ले।”

ई कहैत रमाकान्त बाबू अपना घरपर चलि गेला।

ऐ घटनाकेँ आइ मास-दू-मास बीति गेल। तैबीच रूपौलीमे कोनो महतोक घरमे डकैती भेलइ। डकैत घरवारीकेँ मारबो-पीटबो केलकै आ लाखो रूपैआक समान सेहो लूटलकै।

रमाकान्त बाबू जालफरेबी लोक तँ छथिए। ब्लॉकक प्रमुख सेहो छैथ। दरोगासँ मिल कऽ बालेसरक पिताकेँ डकैती केसमे फँसा देलक।

रामकिसुनक घरपर पुलिस सभ दौर-बरहा करए लगल। आब रामकिसुन बोन-झाड़मे नुकाएल फिरए। घरक सभ समांग सबहक मुँहपर फुफरी उड़ए लगलै।

अन्तमे रामकिसुन रमाकान्त बाबूक पएर-दाढ़ी पकैड़ केससँ उबारैक आग्रह-बात करए लगल। बालेसरो हारल नटुआ जकाँ फेर रमाकान्त बाबूक हरबाहि करए लगल।

ओही समयमे पाहीपट्टीक एकटा मालिकक जमीन छेलइ। जइ जमीनक सटले रामकिसुनक घर सेहो छेलइ। ओ पाँचो बीघा जमीन मालिक बेचैक सूरसार करए लगला। रमाकान्त बाबू पाँचो बीघाक गप कऽ लेलैन। लिखबै बेरमे रमाकान्त बाबू ओइ पाँच बीघाक अलाबे रामकिसुनक जे पाँच कट्ठा जमीन सहित घराड़ी छेलै तेकरो खाता-खेसरा आ रकबा चढ़ा लेलैन।

दखल-कब्जा बेरमे बालेसर रोकलक तैपर रमाकान्त बाबू बजला-

“रौ बाले, चूप रह। ई जमीन मालिकक छेलै ओ हमरा लिखि देने अछि। हे देखही दस्ताबेज।”

बालेसर मुर्ख तँए अनकासँ दस्ताबेज देखा चूप भऽ गेल। चुपे नहि भेल बल्कि बौक भऽ अँगना चलि आएल। किछु फुरबे ने करइ।

रामकिसुनकेँ तीन लड़का। जेठकाक नाओं- बालेसर, मझिला- राजशेखर आ छोटका- चन्द्रशेखर। बोनि-बुत्ता करि कऽ कोनो धरानी सभ समांगक गुजर-बसर चलैत रहइ।

बालेसर नून-तेलक दोकान खोलने छल मुदा दोकान चलबै छेलै राजशेखर। समय बीतैत गेलइ। मुदा जखन समय खराप होइ छै तँ बारहोरंगक बसात बहए लगिते छै, सएह भेलै बालेसरकेँ। वेचाराकेँ तेतेक ने दोकानक उधारी लागि गेलै जे अन्तमे नून-तेलक दोकान छोड़ए पड़लै। पूजीक अभाव भेने वेचारा चाहक दोकान खोललक। कम पूजीमे चाहक दोकान नीक होइते छइ। चाहक दोकान खूब चललै। समय आब बोलसरक आपस एलइ।

बालेसरकेँ तीन लड़का। जेठका लड़काक नाओं- चन्द्रमोहन, मझिलाक- कृष्णमोहन आ छोटका नाओं छेलै- इन्द्रमोहन। तीनू भाँइ पढ़ि-लिख कऽ दिल्लीमे नोकरी करैले चलि गेल। नोकरियो नीक ठाम लगलै। एक एकाउण्टेंट, दोसर संचार विभागमे आ तेसर कृषि विभागमे तृतीय श्रेणीक काज करए लगल।

बालेसरक मझिला भाए- राजशेखरकेँ सेहो दू लड़का। पहिल उमाकानत आ दोसर कृष्णकान्त। उमाकान्त एगारहवी केलाक बाद बम्बइ चलि गेल आ कोनो सेठक ओइठाम ड्राइवरी करए लागल। आ छोटका लड़का चन्द्रशेखरकेँ एक लड़का जेकर नओं छेलै लालमोहन जे पढ़लक-लिखलक नहि। जहन पन्द्रह बर्खक भेल तँ भागि कऽ मामा गाम चलि गेल। आ एक गोरेक संगे लुधियाना जा रहए लगल। लुधियानामे ओ कोनो किराना दोकानमे काज करए लगल।

परिवारमे चारू दिससँ आमदनी भेने बालेसर तीनू भाँइक मन हरदम खुशीए-खुशी रहए लगलै। जहिना अदरा नक्षत्रमे झम-झमौआ बरखा भेने, अगहनमे नीक उपजा भेने किसानक मन हर्खित होइ छै तहिना बालेसरोक परिवारमे सबहक मन हर्खित रहए लगलै।

किछु दिनक बाद रामकिसुनक मृत्यु भऽ गेलैन।

बालेसर अपन पिताक श्राद्ध-कर्म नीक जकाँ केलक। रसगुल्ला-लालमोहनक भोज केलक। घरो-दुआर नीक बना लेलक। ट्रेकटर सेहो खदीर लेलक। शानसँ गुजर-बसर कऽ रहल अछि।

बालेसर मुदा चाहक दोकान करिते रहल। धिया-पुता सभ जहन गाम आबै तँ चाहक दोकान चलबैत पिताकेँ देख मन झूस भऽ जाइ।

बालेसरक परिवारक उन्नैत देख रमाकान्तक परिवार गलल जाइ। दुष्ट बुधिक लोक छलाहे।

एमहर उमाकान्तक जेतए धनकुटिया मशील चलैत रहै, तेतइ छेलै एकटा आमक गाछ। बालेसरे ओकरा रोपने छल आ अपनेसँ गाछक सेवा सेहो केने छल। मुदा ओ गाछ कब्जामे छेलै रमाकान्त बाबूकेँ, ओकर फल वएह खाइ छला। संयोगसँ एक दिन एकटा आम दुआरे झंझट भेलै, माने रक्का-टोकी भेलइ। एक दिन उमाकान्त ओही आमक गाछपर दाबा ठोकि देलकै। झंझट उठलै। केस-फौदारी भेलइ। कोर्ट-कचहरीक आबा-जाही शुरू भेल। रमाकान्त बाबू बजैथ-

“चाहक दोकानबला कि हमरासँ केस लड़त।”

उमाकान्तक पिता- राजशेखर अलगसँ कोर्टमे जमीन-जत्था सम्बन्धी एकटा मोकदमा कऽ देलक, जइमे बाप-दादाक अरजलहा जमीन जे रमाकान्त बाबू लिखा नेने छला तैपर मुकदमा चलए लगल।

रमाकान्त बाबूकेँ अपन केलहा पाप सभ भूत भऽ आगाँमे नाचए लगलैन। सबूतक जखन देख-भाल मजिस्ट्रेटक कोर्टमे होमए लागल तँ मजिस्ट्रेट रमाकान्त बाबूसँ कहलकैन-

"आपको विवादित जमीन कैसे हाँसील हुआ और जिससे आप जमीन लिखबाये उनको ये विवादित जमीन कैसे प्राप्त हुआ, इसका सबूत दाखिल करें।"

रमाकान्त बाबूकेँ तँ ऊपर-निच्चाँ सुझए लगलैन। दिनेमे तरेगन देखा लगलैन।

एमहर बालेसरक समांग सभ चौक-चौराहापर बजैथ-

"बहुत धन खेलेँ रे बगरा आ पड़लौ मरदसँ रगरा। जेतेक बेइमानी करि कऽ अरजने छेँ से सभटा आब बेरा-बेरी निकलतौ। नहि तँ एकटा सभ्य मनुख जकाँ समाजमे रह। हम तँ कौहुना अपन रोजगार इमानदारी पूर्वक करैत चाहे दोकानसँ आगाँ बढ़लौं। अपनापर हमरा अपन कर्मक बिसवास अछि। ठकि-फुसला कऽ तँ नहि ने। कमाइबला खेतइ आ लूटैबला जेल जेतइ।"

यएह सभ बात आइ बालेसर अपन चाहक दोकानपर चन्द्रमोहनकेँ कहि रहल छला।

शब्द संख्या : 1279

गामे बीरान भऽ गेल

किसुन देव दुआर परहक चौकीपर असमंजस भेल बैसल छला। तेकर कारण छेलै जखन तीस-पैंतीस बर्खक उमेर छेलैन, माने आइसँ साठि बर्ख पूर्व- जहन जुआनी चढ़ल छेलैन, तेहेन अवस्थामे कमाइ-ले मोरंग चलि गेला। गाममे कहियो कोनो साल रौदी, कोनो साल दाहीमे भूखमरीक समस्या उत्पन्न भऽ जाइत। मुट्ठी भरि लोकक हाथमे जमीन-जत्था, अधिकतर मजदूर तबकाक लोक। बोइन-बुत्तापर जीनिहारकेँ विकट समय रहने कएक साँझ उपासे रहऽ पड़ै छेलैन।

अही सभ बातक सोच आइ किसुन देव भायकेँ भेल छेलैन। हाथमे चाहक कप देना पत्नीकेँ एक घन्टा भऽ गेल छेलैन। चाह पानि-पानि भऽ गेल छल। तखने राम सेवक चाह पीबैले किसुन देव भाइक घरे लगक चाहक दोकानपर जाइ छला।

राम सेवक किसुन देव दिस तकैत पुछलखिन-

"भाय एना किए मन झूस अछि। की केकरोसँ झगड़-झंझट भेल हेन, मुँह किए तुरुछ केने छी?"

समाजिक रिस्तामे किसुन देव आ राम सेवकक बीच 'भाय-भाय' चलैत रहैन।

किसुन देव बजला-

"नहि भाय, कोनो बात नहि अछि, पैछला जिनगीक बात सभ मोन पड़ि गेल हेन। आबह-आबह बैसह, केतए जाइ छह। चाह पीब लएह, तैबीच किछु गपो-सप्प हेतइ।"

राम सेवक ससैर कऽ किसुन देव लग जा चौकीए-पर बैसला। आ किसुन देव पत्नीकेँ हाक देलखिन-

"यइ सुलोचनाक माय, कनी एमहर आउ, नहि तँ एक गिलास चाह आरो बनौने आउ।"

अपना हाथक सरेलहा चाह किसुन देव एके घोंटमे पीब लेला। आ बजला-

"राम सेवक भाय, की कहब आब तँ हमर उमेर अस्सी-पचासीक लगभग भऽ गेल। पाँचटा बेटा अछि। सबहक बिआह-दुरागमन भऽ गेलै, सभ बेटा धिया-पुता आ कनियाँ लऽ कऽ दिल्लीमे जमीन लऽ घर बना ओतै रहैत अछि।"

राम सेवक कहलकैन-

"भाय साहैब, से तँ नीके ने अछि, अपन कमाइए आ धिया-पुताक गूजर-बसर करैए। अहाँकेँ कोनो तरहक जवाबदेहियो तँ नइ अछि।"

बिच्चेमे टोन दैत किसुन देव कहलकैन-

"नइ हौ सेवक भाय, से बात नै छइ। हम दुनू परानी बुढ़ा-बुढ़ी की कऽ सकै छी। कियो एक लोटा पैनो देनिहार नइ अछि। गाममे की रोजगारक आब कमी छइ। पहिने ने रोजगारक कोनो साधन नहि छेलै, लोक ढाका, बंगाल, मोरंग, दिनाजपुर, सिल्लीगुरी जा कऽ धन रोपनी, मरूआ रोपनी आकि पटुआ झाड़ै छल, आ केते गोरे बहलमानी सेहो करै छल। चन्द किसिमक रोजगार करै छल।

हमहीं एक दिन बिराटनगरसँ पाँचटा बहलमानक संग कटही गाड़ी लऽ कऽ जंगल लकड़ी आनैले जाइत रही। तीन दिनका रस्ता छेलै, रातिमे बाघक दुआरे गाड़ीकेँ गोल कऽ कऽ राखि दिऐ, बीचमे बरदकेँ बान्ही आ काते-कात चारू कोणपर लकड़ीए-केँ घूर कऽ दिऐ आ एक गोरे सिरपैह लऽ कऽ खड़ा पहरा दिऐ आ बैली सभ सुती। बिहान भने गाड़ी जोति कऽ विदा होइ। एक दिन लकड़ीसँ लादल गाड़ी छल। जंगलमे एकटा बाघ घात लगौने छल, डेरासँ दस लग्गा गाड़ी जोइत कऽ आगाँ गेल हएब आकि ऐगला गाड़ीक एकटा बरदक ऊपर बाघ झपटलक आ घिचने-तिरने घोर जंगल दिस लऽ गेल। कोनो तरहेँ बिराटनगर एलौं।"

राम सेवक पुछलकैन-

"ऐँ यौ भाय, तहन तँ प्राण उड़ि गेल हएत, डर नहि भेल जंगलसँ बहराइत?"

किसुन देव कहलकैन-

"डर कहूँ नै हुअए, हिम्मते ने कठिन-सँ-कठिन काजकेँ हल्लुक बना दइ छइ। हमरा सभकेँ तँ रेहल-खेहल रहए, एहेन-एहेन घटना सभसँ।"

राम सेवक कहलकैन-

"यौ भाय साहैब, हम जौं रहितौं तँ एक तँ प्राणे उड़ि जाइत आ जँ बँचियो जइतौं तँ नानी ने मरिहें जे फेर जंगल दिसक रस्ता दोहरा कऽ धरितौं!"

"हे सुनू एक बेरका घटना कहै छी।" किसुन देव मुँहपर हाथ फेरैत बजला-

"सिल्लीगुरीमे पटुआ झाड़ैत रही,भरि जाँघमे जोंक धऽ लेलक। से की कहब तमाकुल चुना कऽ रखने रही, हँसूआ सेहो रखने रहैत छेलौं। ऊपरमे आबि हँसूआसँ सभ जोंककेँ खड़ैर दिऐ आ चुनेलहा तमाकुल सबहक मुँहपर दऽ दिऐ। कियो सुइया-डोरा सेहो रखने रहैत छल, सुइएसँ गाँथि कऽ डोरामे धऽ लटका दिऐ आ डाँरमे खोंसि लिअए। जोंक सभ पानिमे दहलाए लगए तहन पटुआ झाड़ी।"

राम सेवक कहलकैन-

"यौ भाय, तहन तँ बड़ जीबटगर काज करी।"

किसुन देव भाय फेर कहलखिन-

"तोरा एतबेमे अचम्भा लागि गेलह। हे सुनह- गाम आबी तँ सत-सत कट्ठा खेतमे हम आ हमर भजार अच्छेलाल मिल कऽ राति-के कोदारिसँ तामि दिऐ। दू-दू कट्ठा खेतमे असगरे धान-मरूआ रोपि ली। तब ने अस्सी बर्खक उमेरमे दुरुस्त छी। मरूआ सनक निरोग अन्नकेँ लोक त्यागि देलक।"

बिच्चेमे राम सेवक पुछि देलकैन-

"अच्छेलाल के छल?"

"नै चिन्हलहक, पितमराक बाप छल। ओकरा तेतेक तागत छेलै जे सात मनक पटुआ सोनक गठियाकेँ बिराटनगरमे असगरे उठा कऽ गोदाममे राखि दइ। एक दिन गोदामक चौकीदार देखलकै, ओ जा कऽ नेपालक थानामे कहि देलकै, वेचाराकेँ पकैड़ कऽ जेलमे दऽ देलकै। तहिना खाइयोमे छल, एक किलो चौरक भात कल्लौमे आ सातटा मरूआ रोटी जलखैमे खाइ छल। एक किलो राहैरक उसना तँ ओकर बामा-दहिना हाथक खेल छल। केतेक कहब बितलाहा गप-सप्प। अखुनका धिया-पुताकेँ देखै छिऐ जे दबाइयेपर खेपैए। झरो फिरैले साइकिल वा मोटरे साइकिलसँ जाइत अछि। बीसो किलो गहुमक मोटरी लऽ कऽ पिसबैले नइ जा होइ छै,ओहूले जने चाही। काजसँ देह चोरबैत रहतह।"

राम सेवक बाजल-

"भाय साहैब, आब तँ गाम-घरमे लोके माने जुआन-जहान कहाँ अछि। खेत सभ परती पड़ल रहैत अछि। नहि तँ गाछ-बिरीछ लगौल अछि। गाम जेना सून भऽ गेल हेन।"

किसुन देव भाय बजला-

"यौ सेवक भाय, हमरा तँ बुझना जाइत अछि जेना गाम उनैट गेल हेन आकि गाम सुनैट गेल हेन से बुझने ने जाइत अछि। कान तँ सोन नहि, आ सोन तँ कान नहि।"

गाममे देखबहक जे पहिने कच्ची सड़क छल से आब पक्कीकरण भऽ गेल। जैठाम गाममे सबहक दुआरपर, केकरो एक पल्ला तँ केकरो जोड़ भरि बरद छल भैंस छेलै, गाए छेलै तैठाम आब देखबहक जे दस हजार लोकक बस्तीमे पाँच जोड़ा बरद नै भेटत। जहिना बड़का माछ छोटका माछकेँ खा जाइत अछि तहिना खेतीक उपकरण भेने भऽ गेल। आब ट्रेक्टर भेने जमीनक जोत-कोर, अन्नक दौनी, फसिलक कमठान इत्यादि सभ तरहक काज हल्लुक भऽ गेल हेन। तहिना अन्नक फसिलक बीआ-बैल भेने, सुख-सुविधा तँ भऽ गेलै मुदा लोक गामे छोड़ि कऽ पड़ा गेल हेन तखन खेती तँ बीरान हेबे करत।"

"हँ से तँ भाइये गेल हेन।" राम सेवक बाजल।

तैपर किसुन देव बाजल-

“यौ भाय, एम.बी.बी.एस. डाक्टरकेँ देखबै जे मनुखक खून-पैखानाक जाँच करत। हमरे पोती डोली दिल्लीसँ गाम आएल छल, दसमीमे पढ़ैत अछि। एक दिन दलानपर बैसल रही, तखने गाए गोबर केलक, पोतीसँ कहलिऐ ‘गइ डोली गोबर कनी कोदारिसँ हटा दहिन तँ।’ मुदा पोती हमरापर आँखि गुड़रैत अँगना दिस चलि गेल। से कहू तँ कोदारियोसँ गोबर उठबैमे घिरना भेलइ!”

बिच्चेमे राम सेवक किछु बाजए लागल मुदा किसुन देव रोकैत फेर बाजल-

“यौ भाय, गोबर तँ ओहन वस्तु अछि जइसँ पूजाक ठाँउ नीपल जाइत अछि। खेतमे दियौ तँ उर्बरा शक्ति बढ़त, भानस कऽ सकैत छी, गोबरक छौरसँ माल-जालक थैरकेँ साफ कऽ सकै छी। कोनो फिनाइल वा अन्य दबाइक जरूरत नइ पड़त। बरतन-बासन साफ कऽ सकै छी। से कहू भाय, देहात सनक शुद्ध कोनो वस्तु शहरमे भेटते। तेहेन गामकेँ त्यागि कऽ लोक परदेशमे बास करैत अछि। शहरमे जेकरा लेल रूपैआ लगै छै से गाम-घरमे मंगनियेँमे भेट जाइ छइ।

थोड़ेकाल चुप भऽ कऽ किसुन देव फेर बाजल-

“आब कि ओ गाम रहलै जे सभ वस्तु लेल लोक कलहन्त छल। आब तँ गली-गलीमे पक्की सड़क छै, घरे-घर टी.बी. छै, मोटर साइकिलकेँ के पुछैए चरिचक्किया गाड़ी केतेको भऽ गेल अछि गाम-घरमे। स्कूल छै, अस्पताल छै, बिजली छै मुदा जुआन-जहान लोकक अभावमे गाम बीरान भऽ गेल अछि, एकदम्म सुनसान जकाँ।”

राम सेवक अपन मुड़ी डोलबैत किसुन देव दिस तकैत रहल। मुदा किछु बाजल नहि।

शब्द संख्या : 1162

तीलकेँ तार

लाल काकी साँझ दइले दीप नेस कऽ तुलसी चौरा लग जाइ छेली। अँगनामे गहुमक बोझ जह-पटार राखल छेलइ। दोगे-दोग लाल काकी तुलसी चौरा लग पहुँचली। तखने पछिया रमकल। लाल काकीक नजैर रहैन तुलसी चौरापर। हवा आ गर्मीसँ गहुमक बोझ हरनाठ भेले छल, कखैन-ने-कखैन एकटा बोझमे दीपसँ

आगि लपैक लेलकै। तखन लाल काकी किछु ने बुझि सकली। जखन बोझसँ धुआँ निकलए लगल कि मझिली पुतोहु हल्ला केलखिन-

“आगि लागि गेलइ।”

घरक सटले दऽ कऽ पक्की सड़क छेलै, लोकक आवाजाही तँ छेलैहे। कियो बगलक गाम कछुबी-दे बाजल- ‘नवटोलियामे आगि लागल छइ।’

ओतुक्का लोक दौड़ल। कियो कछुबीकेँ तँ कियो तमुरिया दिस गेल। ओ बाजल-

“नवटोलिया सुड्डाह भऽ गेल!”

आब तँ नवटोलियाक जेतेक कुटमैती लागिमे छेलै ओ सभ दौड़ल। जहिना कोनो नीक बात होइ कि अधला बात आकि कोनो समदिया एक दोसरक संग बात-चीत कहैमे किछु तिलिया-फुलिया लगा दैत अछि, आ किछु बातकेँ घटा-बढ़ा कऽ कहैत अछि, तहिना भऽ गेल।

जहन देखए गेल तँ मात्र एकटा गहुमक बोझक किछु अंश झरकल छल।

तैबीच सुन्दरी पुतोहु बजली-

“यै लाल काकी, देखियौ लोकक किरदानी! एतेक ने तीलकेँ तार बना कऽ बाजल जे कर-कुटुम तकक लोक पहुँच गेल।”

लाल काकी बजली-

“यै कनियाँ, अहिना लोक सभकेँ बजैमे कोनो कि टका-पैसा खर्चा होइ छै, गपकेँ छिलैन करैत-करैत केकरोसँ केकरो मुहोँ-ठुठी करा देतह। केकरो अपना बातसँ झूका देतह वा होशे उड़ा देतह। सही बात बुझत नहि, आ तीलकेँ तार बना उड़बैत रहत।”

शब्द संख्या : 227

एक चुनौटी तमाकुल

महान क्रान्तिकारी जुझारू समाज सेवी कम्युनिष्ट नेता शुभंकर बाबू। अंग्रेजक शासन अन्तिम अवस्थामे पहुँच गेल छल, गाम-घरसँ लऽ कऽ शहर तकमे गाँधी बाबाक पूर्ण अजादीक घोषणा भऽ चुकल छल। जँहि-पटार क्रान्तिकारी सभ रेलक पटरी, टीलीफोनक तार, सरकारी कागजातसँ लऽ कऽ भवन आ थाना तकमे तोड़-फोड़ केलक, आगि लगा-लगा जारलक। क्रुर अंग्रेजक हाकिम आ पलटन सभ सेहो क्रान्तिकारी सभकेँ पकैड़-पकैड़ केतेकेँ गाछमे टाँगि फँसरीपर चढ़ा दैत तँ केतेकोकेँ कालापानीमे भेज दैत छल। केतेक माए-

बहिनकेँ माँगक सिनूर घुअ पड़लै। केतेक भायकेँ शहीद हुअ पड़लै। केतेककेँ जेलमे सड़ा देल गेलइ। केतेको लोक ललका मुरेठा देख घरमे ढुकल रहैत छल।

शुभंकर बाबू सेहो कएक बेर जेल गेला। नमक सत्याग्रहमे भाग लेलैन अंग्रेजकेँ भगबैमे जहाँ तक जे बुधि छेलैन ओ गुलामीसँ मुक्तिक लेल लगौलैन। भंझारपुररेलक पटरी उखाड़ैमे हिनको जेलमे ठुसि देलकैन। जाबत जीला ताबत धरि कहियो लोभ-लालच, घूस-पेंच आदिसँ दूर रहला। साधारण भेष-भूषा छेलैन शुभंकर बाबूक।

शुभंकर बाबूकेँ एकटा बेटा दिवाकर। पढ़ैमे तेजगर तँ नहि, मुदा जहिना गाइक नाँगैर पकैड़ वेतरणी पार होइत अछि तहिना दिवाकर दसमी तक पढ़लक आ ब्लौकमे किरानीक नोकरी भेट गेलैन, सेहो स्वतंत्रता सेनानी शुभंकर बाबूक लड़का छथिन तँए। वेचारे शुभंकर बाबू तँ आब ऐ दुनियाँमे नइ छैथ मुदा हुनक कृत अखनो गाम, जिला आ राज्य तकमे छैन्हें।

हमरा एकटा वोरिंगक जरूरत भेल। ब्लौकसँ सत्तैर प्रतिशत छूटपर भेटैत रहइ। हमहूँ दरखास देलिऐ आ बाँकी रूपैओ जमा कऽ देलिऐ। दिवाकर बाबूक प्रमोशन भेलैन। हुनका नाजीर आ बड़ा बाबूक काज देल गेलैन।

हम वोरिंग उठबैले गेलौं। नाजीरकेँ माने दिवाकर बाबूकेँ कहलयैन-

“सर, हमर जे वोरिंग उठबैक आदेशबला कागज छै, ओ देल जाए।”

दिवाकर बाबू कहलैन-

“जाबत किछु खर्चा-वर्चा नै करब ताबत कोना कागज देब।”

पुछलयैन-

“सर, हम तँ सभ रूपैआ आ जमीनक कागजात जमा कऽ देने छी। तहन फेर कोन खर्च-बर्च?”

दिवाकर बाबू बजला-

“से नहि बुझलिऐ, ऑफिसमे चन्द तरहक ने खर्च-बर्च छै किने, तइमे किछु पैसा लगबे करत।”

ताबत एक गोरे सेहो नाजीर लग काज करेबाक लेल आएल। हुनको यएह बात कहलखिन।

हम बाहर आबि वेवेकसँ सभ बात कहलिऐ ओ कहलैन-

“यौ बाबू, हिनक हालत मैत पुछू। आश्चर्यक बात छै जे हिनक पिता श्री शुभंकर बाबू गरीब लोकक लेल, देशकेँ अजाद करक लेल कोन-कोन यातना ने सहलैन। मुदा हिनका तइ सबहक एको रती लाज-विचार नइ छैन। जाउ किछु एमहर-ओमहर करि कऽ काज करा लिअ।”

हम दिवाकर बाबूक कुरसी लग फेर गेलौं आ कहलयैन-

“सर, हमर काज कऽ दिअ ने।”

दिवाकर बाबू बजला-

“लाउ दू साए रूपैआआ हे लिअ कागज।”

हम कहलयैन-

“सर, हम गरीब छी। सभ पाइ खर्चा भऽ गेल। हमरा लग आब रूपैआ नइ अछि।”

दिवाकर बाबू बजला-

“गरीबकेँ तँ भगवानो सहायता नहि करै छथिन। अहीं कहू त ँकोनो भगवान आकि इष्टदेवता बिना चढ़ौआ लेने केकरो काज करै छथिन? तहन हम मनुख भऽ कऽ कोना छुच्छे कऽ देब..!”

हम कहलयैन-

“सर अहाँक पिताश्री तँ महान स्वतंत्रता सेनानी छला। गरीबेक हितक लेल ने जहल गेला। माहूर खेलैन। एते तक जे स्वतंत्रता सेनानीबला पेंशनो नै लेलखिन आ सरकारीए कोषमे जमा करक लेल कहलखिन। ओ एहेन तियागी छला। आ अहाँ...।”

तैपर दिवाकर बाबू बजला-

“तँए ने, पाँच बीघा जे जमीन छेलैन तइमे सँ लोके सबहक सेवा करैत-करैत तीन बीघा जमीन बेच लेलैन। बेसी गप-सप्प नहि करू। लाउ एके साए रूपैआ आ कागज लिअ।”

हम कहलयैन-

“दिवाकर बाबू, हमरा लग तँ एकोटा टाका नइए, तहन हम केतए-सँ दिअ।”

दिवाकर बाबू आँखि गुड़ैत कहलैन-

“पचासोटा टाका लाउ, नहि तँ पचीसोटा टाका दिअ।”

हम कहलयैन-

“सेहो नइ अछि।”

फेर दिवाकर बाबू दराजसँ तमाकुलक डिब्बी निकालि कऽ दैत कहलैन-

“तँ जाउ, दोकानसँ एक चुनौटी तमाकुले नेने आउ। हम ताबत कागज तैयार कऽ दइ छी।”

हम सोचलौं आब की करी की नहि, चुनौटी लेलौ आ पाँच रूपैआक तमाकुल लेल विदा भेलौं।

हमरा परोछ भेलाक बाद दोसर किरानीसँ दिवाकर बजला-

“एहेन बुड़ि लोककेँ नहि देखलौं। पाँचोटा टाका लऽ नहि आएत ब्लौक! फोकटेमे काज कराएत!”

हम जाबत तमाकुल लऽ कऽ एलौं ताबत कागज तैयार छल। हाथमे कागज दैत दिवाकर कहलैन-

“ई देब घर छिऐ, बिना देने काज नै ससरत।”

कागज लऽ कऽ माल गोदाम दिस जाइत रही कि हमरा पंचायतक ग्रामसेवक जदूवीर पासवान भेट गेला। हुनका सभ बात कहलयैन।

सेवकजी कहलैन-

“दिवाकर बाबूकेँ आदते एहने छैन। जहन हमरो सभकेँ कहता जे तूँ सभ बड़ माल मारैत छह, चलह चाह-पान कराबह। केकरो बिना किछु नेने काजे ने करै छथिन। तूँ तमाकुल देलहक ओकरा की करता तँ

पत्नीमे झाड़ि कऽ राखि लेता आ दोसर जे कियो काज करबए लेल औत, तँ ओकरा फेर ओ चुनौटी धरा देथिन जे एक चुनौटी तमाकुल नेने आबह।”

“कियो देखनिहार-सुननिहार नहि अछि एहेन चूप्पा चोर सभकेँ।” -हम कहलयैन।

तैपर सेवकजी बजला-

“नाजीरक पिते ने तेहेन त्याग-तपस्या केने छैन जे दिवाकरक मुहँ देख छोड़ि दइ छइ। जहिना कियो बाप-दादाक कृतसँ उद्धार होइत चलैत अछि तँ कियो अपना बदौलत बाप-दादाक काजकेँ उद्धार करैत अछि। कियो हारि कऽ जीतैत अछि तँ कियो जीतला बाद हारैत अछि। जेकर ओजने एक चुनौटी तमाकुल, तेकरासँ की उमीद कऽ सकै छह।”

शब्द संख्या : 794

आब कहिया चेतब

25 अप्रैल 2015 इस्वीक घटना छी। कियो स्नान करैत छल, कियो स्नान करि कऽ खेनाइ खा रहल छल, कियो अराम कऽ रहल छल। कियो ट्रेक्टरसँ खेत जोता रहल छल जे रौदीमे जोतलाहा खेतक दुभि मरि जाएत आ खेत निरोग रहत। समय पहिल दिनुका सबा बारह बजे आ दोसर दिनुका साढ़े एगारह बजेक लगभग छिऐ। एकाएक धरती डोलए लगलै। अफरा-तफरी मचि गेल। के धनीक, के गरीब सभ एकरंगाह भऽ गेल, जेलक खेनाइ बेरुका समय जकाँ सभ कियो घरसँ निकैल फलि जगहमे चलि गेल। घरसँ निकलैमे आ अफरा-तफरी भेने केतेक गोरेकेँ टाँग-हाथ टुटल। केतेक घर-दुआर तहन-नहँस भेल। कोन दैंत-दानो छेलै जे देवालयकेँ सेहो नइ बकसलक। केतेकेँ छातीक धड़कन बढ़ि गेल। अस्पतालमे रोगीकेँ रखैक जगह नइ रहलै। एके अछियापर दस-दसटा मुर्दाक डाह-संस्कार भेल। केतेक गोरे तँ मकानक मलबाकेँ तरेमे रहि गेल। जेकरा मशीनसँ धरतीए-मे पचा देल गेलइ।

बाबाक नाम छेलैन छोटे लाल दास, लोक हुनका पारखी बाबा कहैत छेलैन। उमेर करीब 85-90 बर्खक छेलैन। पत्नी सुशीला जीबते छेलैन। बबो स्नान करि कऽ भोजनपर बैसले छला। दू कर भात-दालि खेने हेता कि नहि, पत्नी सुशीला कलपर सँ पानि आनए गेल छेली कि तखने धरती डोलए आ कुदकए लगलै। घर लगक पोखैरक पानि उछैल कऽ महार टपि गेल।

पत्नी सुशीला बपहारि काटैत बजली-

“ई की भेलै..!”

कहैत सुशीला कलेपर धँइ भटका खसली आ अचेत भऽ गेली। बबो ताबत कुदि-फानि कऽ, फलि ऑंगन छेलैन, चल गेला। दू-तीन मिनट तक कनी-मनी धरती डोलिते रहलै। केकरो किछु फुरेबे ने करै जे की करी। धरती उठतै कि आ बैसते आकि धँसतै।

बाबा हल्ला केलैन-

“दौरे जाइ जा हौ..!”

किछु गोरे आएल आ सुशीलाकेँ उठा-पुठा कऽ दलानपर जे भागवत करौलहा मरबा छेलै, तेते बैसा कऽ पानिक छीचा देबए लागल। ताबत डाक्टरोकेँ बजा कऽ आनल गेल। दवाइ-दारू कएल गेल। बड़ी कालक बाद सुशीला ठीक भेली।

साँझक समय छेलै, बहुत गोरे मरबापर बैसल छल तखने सजन, बाबासँ पुछलकैन-

“अँए यौ बाबा, एना किए भेलै। ई की छेलै। हम तँ बौक भऽ गेल छेलौं। जहाँ कि देह डोलए लागल कि अँगनासँ भगलौं। रोडोपर जेना कियो उठा कऽ पटैक देलक तहिना बुझि पड़ल।”

पारखी बाबा, कहलखिन-

“बौआ, ई भुमकम छेलै। तूँ सभ ने पहिल बेर भुमकम देखलहक। हम तँ छोटका-मोटका छोड़ि तीनटा बड़का भुमकम देखलिऐ हेन। पैंतीस इस्वीक भुमकम सभसँ जोरगर छेलै। केतेक ठाम बड़का-बड़का दरारि फाटि गेलै, केतेक घर-दुआर नास भेल, केतेक जान-मालक नोकसान भेल तेकर कोन ठेकान। सतासीक बाढ़ि आ अठासीक भुमकम नामी अछि। ओहू बेरका कम नै छेलै अदहा भारतकेँ पुरबसँ पच्छिम तक आ उत्तरमे नेपालकेँ सेहो डोला देलकै। अठासीक भुमकमक केन्द्र छेलै मधुबनी आ सीतामढ़ीक बीचमे आ ऐ बेरुका केन्द्र छेलै नेपालमे काठमाण्डूक नजदीक, तँए ओतए बेसी छति भेलै। जेकर केन्द्र जेतए रहैत अछि तेतए बेसी छति आ दूरबलाकेँ कम असर पड़ै छइ।”

“एना किए छै बाबा?” सजन पुछलकैन।

ताबत पण्डित काका टीप देलखिन-

“रौ सजन, धरती तरमे कौछु छै, ओकरापर जहन पापी सबहक भार पड़ै छै ने तहन ओ देहकेँ डोलबए लगैत अछि तहिन भुमकम होइ छइ।”

सजन पुछलकैन-

“अँए यौ पण्डित काका, केतेकटा कौछु छै जे पूरा धरतीए-केँ डोला दइ छइ?”

पण्डित काकाकेँ किछु फुरबे ने करैन। तैबीच भुलचन बाजल-

“नइ यौ पण्डित का, शेषनागपर ई धरती अछि। ऐ धरतीपर जहन बेसी पाप, अत्याचार, व्यभिचार, अपहरण आ हत्या हुअ लगैत अछि तहन शेषनाग अपन फनकेँ डोला हल्लूक करैत अछि।”

जेकरा जे जेना बुझल छेलै से तेना अपन-अपन तर्क दैत छल। पारखी बाबाकेँ जहन सबहक गप सुनि-सुनि कऽ मन घोर भऽ गेलैन तँ गप हँकनिहारकेँ पुछलखिन-

"जापानमे किए दसे दिनपर भुमकम होइ छइ?"

सभ चुप भऽ गेल। कियो ने किछु बाजए।

बाबा बजला-

"ई बात नहि छइ। प्रकृतिमे माने ब्रह्माण्डमे जेतेक वस्तु-जात आकि पदार्थ अछि सभकेँ अपन-अपन गुण-अवगुण छइ। पृथ्वीकेँ सेहो अपन गुण-अवगुण छइ। पृथ्वी अपना पेटमे असंख्य वस्तु सभकेँ रखने अछि। ठंढ-गर्म तँ सभ वस्तु होइते अछि किने। सभकेँ अपन गति छै किने। धरतियोकेँ अपन गति अछि। ओकरो पेटमे जखन गैस वा पदार्थमे गर्मी होइ छै तँ केतौ ज्वालामुखी बनि, तँ केतौ परत-पर-परत चढ़ि गेल तँ केतौ धरतीए धँसि गेल, तँ केतौ झील बनि गेल तखनेने भुमकम होइ छइ। जहिना लक्ष्मण रेखा टपला बाद सीता हरन भेलै तहिना अधिक कोनो वस्तुमे भेलाक बाद उग्र रूप भाइये जाइ छइ।"

सजन पुछलकैन-

"ऑंइ यौ बाबा, तहिन तँ बाइढ़ोमे अहिना होइत हेतइ?"

बाबा बजला-

"हँ, प्रकृतिमे पाँचटा जे तत्व अछि जेना अकास, सूर्य, हवा, जल आ धरती एही पाँचो तत्वसँ बनल ई शरीर अछि आ अही पाँचोक नजैर सभ मनुखपर बराबर अछि। यएह ने देवता भेल, जेकरामे कोनो भेद-भाव नइ होइ। अकासमे जेकरा जेतेक उड़बाक होइ उड़ि सकैए। सुरुजक नजैर सभपर बराबर पड़ैत अछि। मौसमक हिसाबसँ अपन गुण-अवगुण छइ। बैशाख-जेठमे गर्मी जन-मारुख होइए आ वएह गर्मीक जाड़मे संजीवनी बुटीक काज करैत अछि। तहिना जलोकेँ छै, सबहक लेल बराबर बरसैत अछि। मुदा वएह जल कहियो प्रलयकारी बाढ़ि सेहो आनि दैत अछि तँ कहियो पियासक लेल तरसबैत सेहो अछि। तहिना हवोकेँ छै, सबहक लेल बराबर। कहियो मारुख तँ कहियो शीतलता सेहो दैत अछि। तहिनाने धरतियोक अछि। धरतीकेँ धरती माता कहि कऽ लोक पुकारैत अछि, जहिना माए अपन धिया-पुताकेँ केतबो कष्ट सहि कऽ पालन-पोषन करैत अछि तहिना ने धरती सेहो करैत अछि।"

ताबत सुशीला चाह नेने एलखिन। सभ कियो चाह पीबए लगला। चाह पीब, कियो तमाकुल तँ कियो बीड़ी पीबैत गप-सप्प करए लगला। भुलचुन बाजल-

"अँए यौ बाबा, हम सभ जे एतेक पुजा-पाठ करै छी से देवता सभ किए ने कष्टक बेरमे सहायता करैत अछि?"

बाबा बजला-

"रौ भुलचुन, लोकक चालि बुझबीहीन तँ देहमे आगि लगि जेतौ। चलाकक काज छिऐ। अपन स्वार्थक लेल मनुखकेँ बँटैत-बँटैत लोक आत्मोकेँ बाँटि नेने अछि। भगवान आ धरतीकेँ के पुछैए।"

तैबीच सजन बाजल-

"तहिन केना कऽ जीब?"

बाबा कहलखिन-

"बौआ, बारुदक ढेरपर छह। कखन छह कखन नहि, तेकर कोन ठेकान। बाढ़ि, रौदी, भुमकम, अगिलग्गी, आतंकवादीक आक्रमण, सुनामी आ पैलोनक आक्रमण, ऐ सभकेँ पछाड़ैत सही रस्ता बना अपनाकेँ ठाढ़ केने जे जीब लेता वएह पूजणीय भेला। हुनके समाजमे पूजल जाइत अछि। मृत्युए-क नाम छै ने सत्यम,शिवम, सुन्दरम्। आब मशीनी युग आबि गेल हेन। जहिना घन्टोक काज सकेण्डमे होइत अछि, तहिना आफदो देखते-देखते प्रलय मचा दइ छइ। तँए आबो चेतइ जाइ जा। मनुख बनि आएल छह, मनुख जकाँ आचरण बना जीबह। केतेक की कहबह। बड़ ओझरी सभ छै ओझरीकेँ सोझरबैत चलैत रहह।"

शब्द संख्या : 997

विघटनकारी तत्त्व

जीवन बाबाकेँ सिरिफ पाँच कट्ठा बाड़ी-झाड़ी छल। जे एक्के दिनक बर्खामे एक मरद करीब पानि लागि गेल। तेकर कारण छल, चारूकात वस्ती रहने पानिक निकास नहि। जीवन बाबा एकटा दर्खास्त एस.डी.ओ. आ जे.ई.केँ देलखिन जे हमर सबहक पनरह बीघाक प्लॉट जे झीलनूमा बनि गेल हेन, तेकर निदान कएल जाए।

जीवन बाबाक जिनगी सभ दिन संघर्षमे बीतल। जइ समैमे छात्रक जिनगीमे छला तहू समैमे बाबा गाइक सेवा आ खेती-बाड़ीमे तरकारी-फरकारी उपजबैथ। वएह सोन सन चौमासमे करीब सत्तैर घौड़ केरा, पनरहटा अनरनेवाक गाछ, पाँचटा सीमक गाछक संग करैला, सरीफा, धात्रीम आ अनारसक करीब एक साए गाछ आ तैसंग कट्ठा भरिक घेरा गाछक जड़िमे दू हाथ-तीन हाथ पानि लागि गेलैन। रंग-बिरंगक जे फल-फलहरीसँ लऽ कऽ तरकारी-फरकारी तक छल ओ सुड़डाह भऽ गेलैन। यएह दुर्दशा फलक देख बाबा दरखास्त देने छेलखिन।

1960-65 इस्वीक अमलमे पुरना मुखिया छला। ओ दछिनवाहि टोल आ मुसहरीक बीचमे एकटा पाइप देने छेलखिन पानिक निकास लेल। गामक जे गोठ टोल अछि जइमे करीब पचास घर मुसलमान, अस्सी घर मुसहर, सत्तैर घर धानूक, चालीस घर व्रह्मणक बास अछि ओइ सबहक घर आ चौमासक पानि ओही पनरह बीघाक गोरहा खेतमे अबै छल आ पाइप देने पोखैर होइत दछिनबरिया बाघ दिस चल जाइत छल। जइसँ धान, गहुम, मौसरी, खेसारी, सेरसो, तीसीक संग रंग-बिरंगक तरकारी-फरकारी सभ उपजैत छल।

दस साल पहिनौं पंचायतसँ पुलियाक निर्माण भेल छेलइ। आर.डब्ल्यू.डी. सड़कसँ एकटा सड़क मूख्य मंत्रीक योजनासँ मंजूर भेल। ओ सड़क धनुकटोलीसँ दछिनवाहि टोल होइत मुसहरी होइत मुसलमानक टोलमे जा कऽ खतम होइत अछि। जखन सड़कपर मिट्टीकारण होइत छल तखने पानिक निकासी लेल गप-सप्प चललै। ठीकेदारकेँ एकटा पूल देबाक छेलै पानिक निकासी लेल। ओ वेचाराकेँ कियो अपना घरक आकि खेतक ऑंगामे पूल बनबैये ने देलक।

वेचारा ठीकेदार हारि-थाकि कऽ गोठक पुबरिया चौरमे जा कऽ एकटा पूल बना देलकै जेकर कोनो उपयोग नहि। कहबी ठीके छै- लोल केतौ घोघ केतौ... । सएह पइर।

सरकारियो ऐमला-फमिला कि कम पेंच-पाँच लगबै छइ। कियो अपना सीर अपजश लेबहि ने चाहत, ग्रामसेवकसँ लऽ कऽ बी.डी.ओ; जे.ई. आ कलक्टर तक ओ ओकरा लिखत तँ ओ ओकरा लिखत। ताबे समैये बीत गेल। सएह भेलै जीवन बाबाक दरखास्तक। एस.डी.ओ. लिखलक बी.डी.ओ.केँ आ बी.डी.ओ. लिखलक जे.ई.केँ।

जे.ई. जहन सहर-जमीनपर मोआइना करए एला तँ दछिनवारि टोलक विघटनकारी तत्त्व सभ जलखै-चाह-पान करा तेसरसँ कहबा देलक जे ऐठाम पुलक जरूरते ने अछि। जहन ओहू टोलक लोकक जमीन ओइ पनरह-बीस बीघाक पलॉटमे। तेतबे नहि ओही टोलक एकटा प्रोफेसर साहैबक आँगनमे पानि भरि छाबा लागल। आश्चर्य तँ ई जे ओहो कहलखिन जे ऐठाम पुलक जरूरत नइ छइ।

जहन ढलाइ पूरा भऽ गेलै तहन फेर जे.ई. साहैब सड़कक मोआइनामे एला। संयोगसँ आइ गौंआँ सभ उनटल जे.ई. साहैबपर।

जीवन बाबाक तँ सभ किछु दहाइये गेल छेलैन। मन बिखाएल रहबे करैन। जे.ई.केँ देखते बजला-

"रौ, घुरना इहे छियो इन्जीनियर, पकड़! ला रासा बान्ह तँ आ काँच-करचीसँ देह ततारि दहीन।"

जे.ई.केँ तँ होशे उड़ि गेलइ। तखने जोखियाक पाँच बर्खक बेटा बाड़ीमे कलपर चलि गेल। ओ ओँघरा-पोंघरा कऽ भरि डाँर पानिमे चलि गेलइ। हल्ला भेलइ।

जे.ई.केँ आब तँ किछु फुरबे ने करइ। बच्चा ताबे कनियेँ पानि पीने छल। जे.ई. बाजल-

"अहाँ सभ धीरज धरू। हमरा जाए दिअ। कोनो-ने-कोनो निदान भऽ जाएत।"

तैपर किसुन सदाय बाजल-

"नहि, नइ जाए दियौ यौ जीवन बाबा।हमर जे घर खसि पड़ल हेन दाबा लागल अखनो पानि अछि, से की हेतइ।"

रहमान, जे कुजरटोलीक छल, तखने ओहो हहासल-पियासल दौड़ल आएल। अबिते बाजल-

"चलू तँ देखियौ तँ हमरा ऑंगनमे भरि ठेहुन पानि लागल अछि। साँप-कीड़ा सभ अँगने-घरे सहसह करैए।"

मुदा दछिनवाहि टोलक लोक कियो ने किछु बजैत। सबहक मन रहइ- धू: कनी-मनी क्षतिये ने भेल। बेसीसँ बेसी ऐबेर उपजा नै हएत। मुदा विरोधी सबहक तँ घर-दुआर खसतै ने। जान-मालक क्षति हेतइ ने।

बड़ जे संघर्षशील सभ छला तँ आब बुझौत। हमरा सभकेँ कोन अछि धिया-पुता सभ बम्बई-दिल्लीमे मारे कमाइए। गुजर-बसरमे कहियो कनिक्को दिक्कत थोड़े हएत।

जे.ई.सँ जीवन बाबा पुछलखिन-

“कहू तँ एक महिना हमरा दरखास्त देना भऽ गेल। ताबे सड़कपर माटिये पड़ि रहल छल। आब तँ गिट्टी-गाट्टी दऽ कऽ सिमेन्टसँ ढलाइयो भऽ गेल। कहू तँ दरखास्त जे देने रही से कहियो हमरा सूचनो देलौं जे अहाँ चुपे-चाप जाँच करि कऽ चलियो गेलौं। देखू तँ हमर फसिल सबहक दशा।”

जे.ई. बाजल-

“ई हमरासँ गलती भेल। आब एना नै हेतइ।”

जीवन बाबा कहलखिन-

“तँ बाजू जे पूल वा पुलिया कहिया बनतै आ हमरा सबहक घर-अँगनाक पानि कहिया निकलत?”

जे.ई. बजला-

“चारिसँ पाँच दिनमे पानिक निकासी भऽ जेतइ।”

“ठीक छै जाउ, मोन राखब। नहि तँ सभ गुण्डइ निकैल जाएत।”- जीवन बाबा कहलखिन।

जे.ई. साहैब तँ चलि गेला। 10 दिन समैयो बीत गेल मुदा कोनो तरहक कारगुजारी नहि।

विघटनकारीलोक तँ अहिना सोचिते अछि जे किछु गमेलोसँ जँ अनकर क्षति होइ तँ ओहन सोचबला लोकक मुँह मलिन नइ होइत अछि। ओकरा खुशीए होइ छइ। सरकारियो तंत्रकेँ तँ वएह गति अछि। ऊहो कि आम जनताकेँ खुशहाल थोड़े देखए चाहैत अछि। कुर्सी भेटलै सभ किछु बिसैर गेल।

शब्द संख्या : 777

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

नारायण यादवजीक

चारिटा लघु कथा-

चौदह नम्बर कोर्ट

रमेशक पढ़ाइ चलि रहल छल। बी.ए. पास कए बी-एड. कऽ रहल छला। बी-एड.क परीक्षा दऽ घर आएल छला। आगू पढ़ैक जिज्ञासा सेहो छैन्हें। रमेशक पिता किसान छैथ। हुनक आमदनी न्यून छैन। जेना-

तेना घर-परिवारक काम-काज चलै छैन। पैघ खर्चा लेल जमीन-जाल बेचए पड़ै छैन। रमेशकेँ देखते पिता कहलखिन-

“बौआ, परीक्षा केहेन भेलह। आब हम आगाँक पढ़ाइ हेतु खर्च केतए-सँ देबह। औरो धिया-पुता अछि। बेटीक बिआह आ दिनेशक पढ़ाइ कपारपर अछि। आब अहाँ केतौ नोकरी-चाकरी आकि कोनो नीक धन्धा करू जइसँ घरमे खुशहाली बनल रहत। घरक काम-काजमे आब अहाँक माए नइ सकै छैथ। तँए आब बिआहो कए लिअ जइसँ माइयोकेँ सुख भेटत आ हमहूँ प्रसन्न रहब। अही साल अखाढ़मे सभा गाछी चलू।”

पिताक बात सुनि रमेशजी मौन छला। मौन स्वीकार लक्षणम्।

रमेशक बाबूजी रमेशक सहमति पाबि सौराठक सभा गाछी जाइक तैयारी करए लगला। सौराठ मधुबनीसँ पाँच-छह किलोमीटर उत्तर-पच्छिम कोणमे अछि। मिथिलाक पौराणिक परम्परा विचित्र अछि। मिथिला छोड़ि एहेन परम्परा केतौ नइ छइ। माल-जालक हाट जकाँ बरक हाट लगै छइ। बिआहक लेल बनि-ठनि कऽ बर सभा गाछी अबै छैथ।

कनियाँबला सेहो बरक खोजमे सभा गाछी पहुँचै छैथ। कनियागत बरक नाम, ठेकान, मूल, गोत्र आ योग्यतासँ अवगत भऽ पंजिकारसँ सम्पर्क करै छैथ। बर-कनियाँक मेल आ बरक सोभावसँ कनियागत आश्वास्त भेला बाद बिआहक चर्च करै छैथ। ई केतेक नीक बेवस्था मैथिली ब्राह्मण समाजक बीच अछि जे कनियागतकेँ बरक खोजमे घरे-घर, द्वारे-द्वार नहि जाए पड़ै छैन। ओना, किछु कनियागत दलालक फेरामे पड़ि ठकाइयो जाइत अछि।

सभा गाछीमे एकटा पीपरक गाछ अछि, सुनै छिऐ जे जइ दिन एक लाख ब्राह्मणक जुटान सभा गाछीमे भऽ जाइत अछि ओइ दिन ओ पीपरक गाछ मौला जाइत अछि।

जे कनियागत स्थिर मने, धैर्यसँ छानबीन कए बरक चयन करै छैथ हुनका सफलता हाँसिल होइ छैन। शादी-बिआह बड़ सोचि-समैझ कऽ करक चाही। बुढ़-पुरानक कथन छैन जे हाड़-बियाही मांस नहि। परिवारक स्तम्भ नारीए होइ छइ। कुशल गृहणी घरकेँ स्वर्ग बना दैत अछि। बिनु घरनी घर भूतक डेरा आ अछि घरनी तँ लागत फेरा। तँए कन्याँक शील-सोभावक संग खनदान देखिए कऽ कथा-कुटुमैती ठीक करक चाही।

रमेशक बाबूजी गामक दू-चारि भल मानुषकेँ संग कए सभा गाछी पहुँचला। एक-दू दिन केतेक कन्यागतकेँ आपस केलैन। बर, पाँच-सात फीट नमगर,छरहरा बदन, गोर वर्ण बड़ सुन्दर भव्य शरीर। बरक अनुरूप कनिया चाही आ बरातीक स्वागत सत्कार सेहो खूब नीक जकाँ हेबाक चाही। तैसंग किछु दानो-दहेज गुप्त रूपे हेबाके चाही। ओना, ई बरक पिताक इच्छा रहिते अछि। तँए बुढ़-पुरान कहै छैथ जे सभ वरयाती कए मन? तँ ओकर जवाब होइत अछि- 'तीन मन।' तीन मन ओजनमे नहि, तीनटा मन, एकटा लड़काक मन जे खूब नीक कनियाँ हुअए,दोसरमन बरक पिताक होइ छैन जे हमरा खूब दहेज भेटए आ तेसर मन बरियातीक होइ छैन जे बरियाती लोकैनकेँ खूब स्वागत-सत्कार हेबाक चाही।

एकटा पच्छिम तरफक कन्यागत हिनका लग जे बरक बापक दूरक सरोकारिये छेलैन- टकरेला। बर-कन्याँक विषयमे दुनू पक्षकेँ पहिनहिसँ जानकारी छेबे केलैन। बिआहक दिन-ठेकान तय भेल।

मैथिल लोकैन बड़ बुधियार होइ छैथ। बिआहक अन्तिम लग्नक आस-पास सभा गाछीमे सभा लगबै छैथ। आ धड़फड़मे एक्के-आध दिनक बीच बिआह ठीक करै छैथ। जइसँ ने कार्ड छपबए पड़ै छैन आ ने गाड़ी-घोड़ाक बेवस्था करए पड़ै छैन। पाँच-दसटा बराती लए कम खर्चमे बिआह कए लइ छैथ।

हमरा गाममे एकटा पण्डीजीक बेटीक शादी ठीक भेलैन। कनियागत पुछलकैन-

“समैध बराती केतेक एबइ?”

बरक पिता कहलखिन-

“बरियाती न्यूनतम तीन अंकमे रहत।”

तैपर कन्यागत बजला-

“हम नहि समैझ सकलौं!”

ताबत शीबू काका बजला-

“नहि बुझलहक, तीन अंकक सभसँ छोट अंक भेल- 100 यानी एक साए बरियाती औता।”

कन्यागत साए गोट बरियातीक बेवस्था केने छला। जखन बरियाती दरबज्जापर पहुँचला तँ मात्र एकटा मोटर गाड़ीमे बर लगा पाँचटा आदमी छल। ओना, बरक गिनती बरियातीमे नहि होइ छइ। तँए घरवारी पुछलखिन-

“समैध, आरो गाड़ी सभ अछि किने?”

बरक पिता कहलखिन-

“नहि समैध, मात्र चारिटा बराती छी।”

ई बात सुनिते कन्याक पिता आगि-बबूला भऽ गेला। तामसे थरथराइत बजला-

“अहाँ हमर सभ भोजनक सामग्रीकेँ बरबाद करेलौं। अहाँ कहनेरही जे हम एक साए बरियाती आएब। मुदा तैठाम चारिटा बरियाती एलौं अछि! कहू तँ हमरा सभकेँ बेइजत करा रहल छी किने।”

बरक पिता बजला-

“समैध, चारिटा बराती घरपर एला आ एकटा पुरंधर काका पौखैर महारपर उतैर गेला। ओ पर-पैखाना करि कऽ औता।”

कन्यागत कुदैत बजला-

“हमरा अहाँ बुड़िबक बनबै छी किने।”

पुन: बरागत बजला-

“समैध, बरातीमे निहालू बाबू। देखबू बाबू, शिबू बाबू, हम आ पुरन्धर काका छैथ।अहाँक एक्को चुटकी भोजनक कोनो सामग्री बर्बाद नहि होएत। सुनू नौ (9) नेहालू (17) सत्रह देबू, बारह-बारह हम शीबू जखन औता पुरन्धर काका लगौता पचासक धक्का। कहू सौ आदमीक पारस सधत कि नहि। अहाँक हम उपकारे केलौं जे 100 आदमीक विदाइक बदला मात्र पाँच आदमीकेँ देबए पड़त।”

कन्यागत किछु नहि बजला।

रमेशक बिआह साधारणे पूर्वक भेल। आब पति आ पत्नी खुशी पूर्वक दामपत्य जीवन बिता रहल छला। किछु दिन सासुरेक रूपैआ-पैसासँ सुख-मौज करैत रहला। मुदा आब पत्नीक फरमाइशक पूर्ति नहि भऽ रहल छैन।

रमेश मने-मन सोचैथ जे केतौ जा कऽ कोनो नौकरी करी। रमेशक एक मित्र सुरेश छेलखिन। दुनू मित्र टाका-पैसा कमेबाक हेतु कलकत्ता जेबाक विचार केलैन। पिताक विचार सेहो छेलैन जे बेटा बाहरसँ किछु टाका-पैसा कमा कऽ घर लाबैथ। प्राय: सभ पिताक ई इच्छा रहिते छैन जे बेटा नौकरी करैथ, टाकाक उपार्जान करैथ आ घरकेँ खुशहाल बनाबैथ।

रमेश आ महेश माए-बापसँ अनुमति लऽ कलकत्ता प्रस्थान केलैन। कलकत्ता 'कल'पर अछि से ओ बुझैत छल। सेहे आइ देख लेत। बरौनी होइत सिमरिया पूलपर पहुँचल। रमेश गंगा मैयाक मने-मन नमस्कार केलक। आ जेबीसँ किछु पैसा निकालि दुनू मित्र माँ गंगाकेँ चढ़ा देलक। आ माँ गंगासँ प्रार्थना करैत बाजल-

"हे गंगा मैया, हम सभ जइ धारणासँ कलकत्ता जा रहल छी, से पूरा करब।"

गाड़ी नियत समयपर कलकत्ता स्टेशन पहुँचल। ऐसँ पहिने दुनू मित्र घरसँ कहियो निकलल नहि छल। शुद्ध देहाती जकाँ दुनू गोरेक देह-दशा आ बगे-वाणि रहइ। धोती-कुर्त्ता आ ललाटपर चानन मिथिलाक पहचान छल। कलकत्ता पहुँच ओ सभ अपने गौंआँ-घरूआसँ भेँट केलक। गाम-घरक लोक सभ अपना गौंआँ-घरूआकेँ बड़ आगत-भागत करैत अछि जे भेलैन। खूब स्वादिष्ट भोजन आ सम्पूर्ण कलकत्ताक भ्रमण, महत्वपूर्ण स्थानक दर्शन करौलकै।

रमेश आ सुरेशक मेहमानी गौंआँ-घरूआक ओइठाम चलए लगलै। ऐ तरहेँ दस-बारह दिन बित गेल। दुनू मित्रकेँ मन लागए लगलै। एक दिन दुनू मित्र सबेरे उठला। स्ना-धियान आ भोजन कए बजार दिस विदा भेला। बाट गली जकाँ छल। ई बाट गली होइत आगाँ मेन रोडमे मिलैत छेलइ। जाइतकाल रमेशकेँ लघी लागि गेलैन। लघीक संवेदना विचित्र होइते अछि। जखन एक संगीकेँ लघी लगै छै तँ संगमे जे मित्र रहल हुनको लघी लागिये जाइत अछि। सुरेश सेहो एकटा नालीमे लघी करए लगला। लघी समाप्तो ने भेल छल कि पाछूमे दूटा बंगाली पुलिस ठाढ़ देखलक। जी तँ उड़ि गेलइ।

तैबीच पुलिस बाजल-

"आप इस गलीमे क्यों पेशाव किये हैं। बगलमे पेशावखाना बना हुआ है। वहाँ क्यों नहीं पेशाव किये। गली को प्रदूषित करने के जूर्म में आप दोनों को गिरफ्तार किया जाता है।"

दुनू मित्र अचम्भित भऽ गेला। बंगाली पुलिसक सामने बड़ गिरगिरेलाह। किछु रूपैआ-पैसाक प्रलोभन सेहो देलैन। मुदा बिहार पुलिस जकाँ बंगालक पुलिस नहि छल। ओ रमेशआ सुरेशकेँ डाटि-टपैट देलक।आ बाजल-

"बिहार से आये हो?"

दुनू गोरे एक्के बेर बाजल-

"जी हुजुर, बिहारसँ आएल छी।"

ओ सभ सोचलैन जे घूसखोरीमे बिहार केतेक बदनाम अछि जँ बिहार रहैत तँ जरूर छोड़ि दइत।

दुनू गोरेकेँ पकड़ने पुलिस थानापर लऽ गेल। दुनूकेँ देखते थाना प्रभारी बजला-

“आप लोग पाँच-पाँच रूपैआ जमा कीजिए।”

सुनिते दुनू मित्रकेँ मन बड़ खुशी भेलैन। जे पाँचे रूपैआमे जान छुटि गेल।

पँच-पँचटा रूपैआ दुनू मित्र जेबीसँ निकालि दरोगाकेँ देलैन।

दरोगा एकटा रसीदक संग एकटा फार्म सेहो भरि कऽ दैत दुनूकेँ कहलक-

“ये सभ कागजात 14 नम्बर कोर्टमे मजिस्ट्रेट को दे दीजिएगा। वहाँ केश दायर हो जाएगा। आप लोग भागियेगा नहीं। नहीं तो फेरा में पड़ जाइयेगा। और वारण्ट हो जाएगा।”

थानापर सँ दुनू मित्र उदास मने विदा भेला। कागजात सेरिया कऽ रखलैन। रातिमे डेरापर एला। भरि राति निन्न नहि भेलैन। भोरे उठि स्नान-भोजन कए दस बजे कचहरी दिस विदा भेला। लाजे कोनो गौँआँ-घरूआकेँ ई बात नहि कहलखिन। ट्रामसँ कचहरी पहुँचला। कचहरीक दृश्य देख आश्चर्यचकित भऽ गेला। एहेन सुन्दर आ एतेक मोट-मोट पायाबला मकान कहियो ने देखने। किछु काल धरि रमेश आ सुरेश मकानक भव्यता आ लोकक चहल-पहलकेँ देखैत रहला। तेकर बाद चौदह नम्बर कोर्टकेँ ताकए लगला। तकैत-तकैत लोगो सभसँ पुछैत-पुछैत आगाँबला मकान तक पहुँचला। ओतए एकटा दफ्तरक आगाँबला मकान तक पहुँचला।

दफ्तरक आगाँ किछु लोक चटाइपर बैसल छल। चटाइपर बैसल बेकती सभसँ पुछलैन-

“यौ 14 नम्बर कोर्ट यएह छिऐ?”

मुंशी जे चटाइपर बैस किछु लिख रहल छला। साकांच भऽ गेला। आ ओइ दुनू मित्रकेँ शोर पाड़लैन।

रमेश आ सुरेश मुंशीक ओतए पहुँचला। मुंशी पुछलखिन-

“आप लोग मोर्डन एपार्टमेन्ट गली में पेशाव कर दिऐ हैं।”

दुनू गोरे एक्के बेर बजला-

“हुँ यौ।”

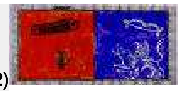
रमेशजी दरोगाक द्वारा देल कागज निकालि कऽ मुंशीजीक हाथमे थमा देलैन।

मुंशीजी बजला-

“तीन-तीन रूपैआ लाइए।”

मुंशीजी कें तीन-तीन गोट टाका निकालि दुनू मित्र देलैन। मुंशीजी दूटा फार्म निकालि दुनूपर किछु लिख रमेश आ सुरेशसँ हस्ताक्षर करा कोर्टक अन्दर जा कऽ पेशकारकेँ सभ कागजात दए देलखिन। आ बाहर आबि रमेशकेँ कहलैन-

“आप लोग यहीं बैठिये। 2 बजे कोर्टकेँ अन्दर चले जाइयेगा। यहाँ कोई आप लोगोको बुलाएगा नहीं।”



दू बजेक इन्तजार करैत दुनू मित्र बैसल रहला। जखन दू बाजल तँ दुनू गोरे कोर्टक अन्दर प्रवेश केलक।

कोर्टमे मजिस्ट्रेट बैसल छला। पेशकार इजलासक निच्चाँ एकटा कुर्सीपर बैसल आगाँ टेबुलपर किछु संचिका सभकेँ उलट-फेर करैत छला। ओही समैमे रमेश मुंशीक द्वारा देल कागजात पेशकारक आगाँमे राखि देलैन।

पेशकार हिनकर कागज साहैबकेँ बढ़ा देलखिन। साहैब कागजकेँ उलटा-पुलटा कऽ पढ़ि बजला-

“आप लोग मोर्डन आपार्टमेन्ट गलीमे पेशाब कर दिऐ थे?”

दुनू मित्र अपन-अपन हाथ जोड़ि बजला-

“जी सरकार! हम लोगों से गलती हो गई। अब से इस तरह की गलती नहीं होगी।”

मजिस्ट्रेट साहैब सहृदय बेकती छला। ओ पुछलखिन-

“आप लोग बिहार से आये हैं?”

रमेशक मुहसँ निकलल-

“जी सर।”

साहैब बजला-

“आप लोग आठवें दिन आइयेगा आपका मुकदमा खत्म कर देंगे।”

रमेशक मुहसँ एकाएक बजा गेल-

“कलका रिजर्भेशन है। घर जाना है।”

मजिस्ट्रेट साहैब दयालू सोभावक छला। पुछलखिन-

“बिहार में आप लोगों का घर कहाँ पड़ता है?”

रमेश कहलखिन-

“मधुबनी जिला, सर।”

साहैब बजला-

“जहाँ सौराठ सभा लगता है?”

रमेश कहलकैन-

“जी सर।”

मुड़ी डोलबैत मजिस्ट्रेट साहैब पेशकारकेँ कहलखिन-

“पेशकार साहेब, ऑर्डर सीट तैयार कीजिए।”

कहि, मजिस्ट्रेट साहैब फाइलपर किछु लिखए लगला। आ पेशकार साहैब ऑडर सीट तैयार कऽ मजिस्ट्रेट साहैबक टेबुलपर देलखिन।

साहैब, रमेश आ सुरेशकेँ ऐ मुकदमासँ रिहा करैत बजला-

ejournal 'विदेह' 232 म अंक 15 अगस्त 2017 (वर्ष 10 मास 116 अंक 232) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

"आप दोनों व्यक्ति ये ऑर्डर लेकर थानापर दे देंगे तथा पाँच-पाँच रूपये जो जमा किये हैं, ओ ले लेंगे।"

रमेश आ सुरेश थानापर आबि दरोगाकेँ मजिस्ट्रेट साहैबबला कागज देलकैन।

दरोगा दुनू बेकतीकेँ पँच-पँच टाका जे बॉण्डबला छल से आपस दए देलैन।

दुनू गोरे सोचए लगला जे कोन फेरामे भगवान हमरा लोकैनकेँ दऽ देलैन।

शब्द संख्या : 1723

चौरचनक बरतन

अन्धराक हाट शुक्र आ सोम दिन लगैत अछि। वरस्पैत दिन चौरचन पावैन छिऐ। इलाकाक लोक सभ पावैन-ले माटिक घैला,मटकुरी, लावन, दीप आ छाँछी कीनैक जोगारमे अछि। चौरचनक धार्मिक मान्यता जे होइ ई जानकारी दाइ-माइ लोकैनकेँ होनि वा नहि होनि मुदा बहुत ताम-झामक संग ऐ पावैनकेँ मनौल जाइत छइ।

सुवंश बाबू घरसँ बाहर निकलला। हिनका घरक आगाँमे एकटा यादवजीक घर छैन। सुवंश बाबू यादवजी केँ कहलैन-

"यौ जेठरैयति, चलू हाट चौरचनक बरतन आनए।"

दुनू गोरे संगतुरिया छैथ। दुनूमे भजार लागल अछि। दुनू भजार हाट दिस विदा भेला। भरि बाट आन घरक जनानी सबहक किरदानीपर गप-सप्प करैत ससैर रहल छला। सुवंश बाबू बजला-

"यौ भजार, आइ-काल्हिक कनियाँ-बहुरिया केकरो लाज-धाक थोड़े मानैत अछि। देखियौ ने हमर पश्टनवाली कनियाँ अपन स्वामीसँ सबहक सोझेँमे खूब बतियाइत रहैत छइ। कहू! हमरा सबहक बिआह-दुरागमन भेल। दूटा बाल-बच्चा भेल तैयो ने दोसरक सामने घरवाली हमरासँ बाजल हेती। बतियाइत अछि ओ सभ आ लाज होइए हमरा।"

जेठरैयति बजला-

"की करबै! देश दुनियाँक हालत देखिए रहल छी। ऐ समैमे कनी अपने आँखि मुनि लेब नीक। की कहूँ हमर पुतोहु हमरा लग आबि बाबूजी-बाबूजी करैत रहैत अछि आ बेटाक शिकायत करैत रहैत अछि। ने माथपर नुआँ रखैत अछि आ ने बदनपर कपड़ा। हम तँ लाजे कठौत बनल रहै छी। जेना हमर बेटी रहए तहिना करैत रहैत अछि। की कहूँ, बेटो ने एक्को बेर डाँटै-डपटै छइ। आनो बेकतीक लाज-धाक नइ होइ छइ।"

दुनू भजार गप-सप्प करैत अन्हरा हाट पहुँचला।

हाटपर चौरचन पावनिक सभ समान कीनिलैथ। दूटा घैला सुवंश बाबू कीनलैथ आ एकटा जेठरैयति। दुनू भजार बात-चीत करैत पुन: हाटसँ घर दिस विदा भेला। गाम अबैसँ पहिनहि जेठरैयति मजाक करैत सुवंश बाबूकेँ कहलखिन-

"यौ भजार, हमरा हाथमे एकटा घैल आ अहाँ हाथमे दूटा। ई अहाँकेँ नीक लगैत अछि?"

ई गप सुनिते सुवंश बाबू एकटा घैलकेँ जोरसँ पटैक देलखिन आ कहलखिन-

"लिअ आब दुनू भजारकेँ एक-एकटा घैल रहल ने।"

शब्द संख्या : 301

छोटकी पुतोहु

आनन्दक बिआह बड़ धूम-धामसँ भेल छल। कनियाँ अति सुन्नैर, तँए दानो-दहेज कमे भेटल छेलैन। आनन्दक पिताश्रीक घोषणा छल-

"कद ऊँची, नाक लम्बी और रंग गोरी तो आओ, नहीं तो बाहर जाओ।"

अही अधारपर कनियाँक चुनाव भेल छल। कनियाँक आगत-भागतमे आनन्दक माए राधादेवी परेशान छेली। मनमे होइत रहैन जे पुतोहु औत तँ काम-काजमे मदैत करत। सेवा सुश्रुषा करत। भानस-भात करत। माल-जालक नेकरम सेहो करत। बाधसँ आएब तँ एक लोटा पानि लाबत आ बिऐन हौंकैत...। आदि-आदि सभ टहल-टिकोरा करत...।

आइ आनन्दक माए राधा देवी बड़ खुश छैथ। खुश ऐ लेल नहि जे आनन्द कनियाँ लए कऽ आबि रहल छैथ, खुश ऐ लेल जे आनन्द बिआह करैले तैयारे नहि भऽ रहल छल। बिआहोक उमर होइ छइ। उमर टुटल जा रहल छेलइ। ओ बिआह नइ करबाक हेतु अनेको बहाना बना रहल छल। कहैत छल ऐगला साल करब, आ जब ऐगला साल आएल तँ फेर ऐगला सालक बहाना करैत रहै छल। राधाक आग्रहपर बिआहक लेल तैयार भेल छल।

ओ दिन आबि गेल जखन आनन्द अपन पत्नीकेँ अपना घर अनलक। मोटर गाड़ीक अबाज सुनिते अड़ोस-पड़ोसक दाइ-माइ लोकैन सभ अपन काम-काज छोड़ि-छोड़ि कनियाँ देखए आबए लगली। ननौरवाली सागमे सँ अटकी-मटकी बीछि रहल छेली। ओहो सभ किछु छोड़ि दौगल एली।

लौफावाली बच्चाकेँ दूध पियाबैत छेलीसे बच्चाकेँ नेनहि दौगली। हर्ड़ीवाली आ ठाढ़ीवालीकेँ आमक टुकला लेल झगड़ा होइत रहै, ओहो दुनू गोरे झगड़ा छोड़ि कनियाँ देखए लफरल विदा भेली। राधा बरतन माजै छेली। बरतन माजब छोड़ि कनियाँक परिछण हेतु सामग्री ओरियाबए लगली। सभ दाइ-माइ जमा भऽ गेली। माथपर दौरा जइमे दीप जरैत छेलै, लय भरैत बन्हने गीत गबैत मोटर गाड़ी लग, पहुँचली। गीतक बोल छल-

"एलै शुभ-के लगनमा शुभे हे शुभे...।"

पाँच-सात गोट सधवा मौगी सभ कनियाँक परिछण केलक। तेकर बाद कनियाँक ननैद रूपम दाइ कनियाँ-बरकेँ आँगन लए गेल। जेतेक दाइ-माइ लोकैन आएल छेली ओ सभ अपन-अपन घर दिस विदा भेली।

बाटमे कनियाँक टिका-टिपण्णी हुअ लगल। सिसवारिवाली काकी जे सभसँ बुजुर्ग छेली ओ बजली-

"गे दाइ, आइ तक एहेन कनियाँ नइ देखने रही। देखही ने केकरो देख कऽ माथो झँपलकै। हमर पुतोहु एहेन रहैत ने तँ छाउर लगा कऽ जी खींच लैतिऐ। कहू तँ ससुरोक लाज केलकै।"

नवानीवाली बजली-

"एतेकटा कहीं मौगी होइ छइ..!"

तैपर भेजावाली बजली-

"पीठ केहेन चाकर-चौरस छै, जेना सुकदेव पहलमान होइ!"

गुलछर्रा छोड़ैत सभ अपन-अपन घर गेल। राधा भनसा घरमे जा बेटा-पुतोहुक लेल खूब नीक तीमन-तरकारी बनौलक। पापड़, तिलौरी, तिलकोरक तरूआ थारीमे सजा बेटा आनन्द आ पुतोहु सुलेखा लेल ओकरा कोठलीमे पहुँचली।

माएकेँ देखते आनन्द बाजल-

"माए, अखन आठो नहि बाजल अछि आ तूँ खेनाइ लऽ कऽ आबि गेलेँ।"

राधा बजली-

"हँ बेटा,कनियाँ जे आएल अछि। नहि जानि कनियाँ कखन भोजन केने हेती।"

बजैत राधा टेबुलपर थारी राखि चापाकलपर सँ एक लोटा जल आ एकटा गिलास सेहो आनि कऽ टेबुलपर राखि देलक।

आनन्द आ ओकर पत्नी सुलेखा दुनू गोरे भोजन करए लागल। सुलेखा बजली-

"भोजन के बनौलक अछि।"

आनन्द कहलकै-

"भोजन माँ बनेने हेती।"

सुलेखा बजली-

“खाना बनबैले नौकरानी नहि रखने छी। हमरा ओतए तँ आँगनक लेल एकटा नौकरानी आ दरबज्जा परहक लेल एकटा नौकर अछि।”

आनन्द आ सुलेखा भोजन करए लागल।

राधा बीच-बीचमे आबि परसन दए दैत रहथिन। भोजन समाप्त भेल। राधा आँठि फेरि एक जग पानि आ एकटा गिलास आनि टेबुलपर राखि गेली।

आनन्द आ सुलेखा पूरब-पच्छिमक गप-सप्प करैत कखन सुतली से राधा नहि बुझि सकली।

राधा भोरे उठि अँगना-दरबज्जामे झाड़ू लगौलक। घर आ आँगनमे फिनाइलबला पानिसँ पोछा लगौलक, तेकर बाद रसोइ घरमे जा सभ बरतन सभ साफ केलक। चाह बनौलक। दू कप चाह पहिने सुलेखा आ आनन्दक हेतु छनलक। दू कप चाह लऽ कऽ आनन्दक कोठरीक दरबज्जा खटखटेलक आ बाजल-

“बेटा आनन्द, उठू। देखू सुरूज भगवान निकैल गेल छैथ। चाह पीब लीअ तखन सुतब।”

दरबाजा खुजल राधा चाहक ट्रे टेबुलपर राखि बाहर आबि गेली। एक कप चाह अपन बेटी रूपम लेल आ एक कप चाह अपने वास्ते लए पीअ लगली।

आनन्द आ सुलेखा सेहो चाह पीबैत रहैथ। सुलेखा रौतुका भोजनक आ अखुनका चाह प्रशंसा करैत बजली-

“आनन्दजी, अहाँक माए अनमोल रत्न छैथ। हिनका हाथक चाह आ भोजन तँ मुहोँसँ नहि छुटैत अछि।”

आनन्दजी बजला-

“सुलेखा, माएकेँ सभ लूरि छइ। एकटा बेटी छइ। देखियौ ने ओकरो सभ लूरि सिखा देने अछि। हमरा बहिनकेँ कोन लूरि ने अछि। ई सभटा माइक देन अछि।”

ताबत चाहक चुस्की लैत रूपम भौजीक कोठरीमे प्रवेश केली आ बजली-

“भौजी, हमर चर्चा किए करै छी।”

सुलेखा ऐंठैत बजली-

“हम अहाँक चर्चा किएक करब। अहाँक भाइये अहाँक चर्चा करैत अछि।”

आनन्दजी बजला-

“बहिन, कनी भौजीकेँ अपन लूरि सभ सीखा दहीन।”

भौजी चद-दे बजली-

“हमरा कोन लूरि नइ अछि। जे हम अहाँक बहिनसँ लूरि सिखब। ओ अपन लूरि अपने लग रखथु।”

रूपम अपन भौजीक हाव-भाव, बात-विचार आ अहंकारकेँ भाँपि चुकल छल। ओ चाह पीबैत अपना कोठरीमे चलि गेली।

आनन्द अपन खेती-पथारीकेँ देखैले बाध-बोन जाए लगला। राधा जन-बोनिहारक जलखै लए खेतपर पहुँचाबए लगली। राधा ओमहरसँ माल-मवेशीक लेल एक पथिया घासो नेने अबैत छेली। राधाकेँ मनमे होइत रहैत छल जे पुतोहु खाना बना कऽ रखने हेती। मुदा पुतोहु तँ जलखै कए जे सुतै छेली से सासुकेँ बाधसँ एलाक बाद आ भोजन बनलाक बादे उठै छेली। उठि स्नान कए अपनेसँ खाना परैस बिनु केकरो खुऔनहि अपने खा कए पुन: कोठरीमे बन्द भऽ जाइत छेली।

ऐ तरहेँ बहुतो दिन बीति गेल मुदा सुलेखामे कोनो सुधार नहि भऽ सकल। कएक बेर आनन्दो कहि कऽ थाकि गेल छला। सुलेखा घरक वातावरणकेँ बिगारए लागल। सासु-पुतोहुमे मन-मुटाव बढ़ि गेल। राधाक मनमे भेल छलैन जे पुतोहु औत। सेवा करत। कपड़ा-लत्ता साफ करत। मुदा सभ मनोरथ...। सेवा केनाइ तँ दूर जे प्रेमसँ बातो नहि करैत छेलैन।

राधा भोरे उठि सभ घर-दुआरकेँ झाड़ूसँ साफ कए पोछा लगा मवेशीक लेल चारा लाबए चल गेल। जखन ओ बाधसँ आबैथ तँ सुलेखाकेँ सुतले देखलैन। मन तँ घोर भऽ गेलैन। मनमे ई आशा लागल रहैत छेलैन जे घर जाएब तँ सुलेखा एक लोटा पानि आनि आगाँमे देती। बिऐन डोलेती। मुदा एकोटा मनोरथ पूर नहि भेल।

पुतोहुकेँ सुतल देख राधा अपनेसँ चापाकलपर जा हाथ-पएर धोलैन। रसोइ घर खोलि नाश्ता परोसि कए हवामे बैस नाश्ता कए लैत छेली। राधा सुलेखाक खातिरदारी करैत-करैत उबि चुकल छेली। बिना किछु बजनहि। किछु ठंढ़ाइत फेर भनसा घर खोलि भानस करए लगली। मुदा सुलेखा सुतले रहली।

राधा मनमे सोचै छेली जे बेटा खेतसँ आएत आ भोजन समयपर नहि भेटतै तँ सुलेखाकेँ गारि-फज्झैत करत। आइ बेटासँ शिकायत करबाक उचित मौका देख रहल छल। तँए सुलेखाकेँ सुतले छोड़ि देलक।

सुलेखाक नीन अचानक टुटि गेल।ओ धड़फड़ाइत भनसा घर गेली। ओतए देखलैन जे सासु भनसा बना रहली अछि। सुलेखा बजली-

“चुल्हा लगसँ हटथिन ने हम भानस कऽ लइ छी।”

राधा चुल्हा लगसँ नहि उठली। सुलेखा मुँह बिजकबैत अपना कोठरीमे जा सुति रहली।

आनन्द खेतमे काम-काजकेँ सलटिया जखन कलौ बेरमे घर एला तँ देखै छैथ माए खाना बना रहल अछि आ सुलेखा अपना कोठरीमे सुतल अछि। माएसँ पुछलखिन-

“माए, भानस तूँ बना रहल छेँ! सुलेखाकेँ किछु भऽ गेलैहेँ की?”

राधा अपन बेटाक मुहसँ ई बात सुनिते तमशाएल मुद्रामे बाजल-

“कनियाँकेँ की हेतइ। हम तँ तोरा सबहक नौकरानी छीहे।”

आनन्द तामसे सुलेखाकेँ उठौलक आ ओकरा गाड़ि-फज्झैत करए लागल। सुलेखा मानएवाली नहि। ओहो आनन्दक तेरहो-पुरखाकेँ उकटए लगल।

आनन्द खेतसँ गरमाएल आएले छल, तमसाएल छलाहे सुलेखाकेँ एक-दू थप्पर लगा देलक। आब तँ सुलेखा जोर-जोरसँ कानए लगली।

कानब सुनि अड़ोसिया-पड़ोसिया जमा भऽ गेल। राधो भनसा घरसँ दौगल एली। आ बेटाकेँ डाँट-फटकार देबए लगली। आनन्दकेँ हाथ पकैड़ कोठरीसँ बाहर केली। आ सुलेखाकेँ बोधए लगली।

पुतोहु पैघ बापक बेटी तँए ओ केकरो ताना-बाना सहएवाली नहि छेली। राधोकेँ गाड़ि-फज्झैत करए लगली। बात दिनानुदिन तनाव आ अशान्तिक तरफ बढ़ए लगल। सुलेखा दू दिनसँ किछु ने खेने छेली।

राधाक काम-काज बढ़ि गेल। आब तँ आनन्द आ आनन्दक माइयो परेशान रहए लागल। दुनूकेँ डर होमए लगलैन जे कहीं आत्महत्या ने करि लिअए। केतेक बुझैला-सुझेलासँ आ घटनाक जिम्मेदारी अपना ऊपरमे लए दुनू माय-पुत गलती सुलेखासँ मानलक, तखन सुलेखा जे दू दिनसँ भूखल-पियासल छल। दतमैन केलैन आ मुँह धोलैन। आ पछाइत भोजन केली।

राधा हारि मानि सभ कार्य पूर्ववते करैत रहल। धीरे-धीरे दुनू पति-पत्नीमे मिलान भेलइ। आनन्द बाजल-

"सुलेखा सभ माइ-बापक इच्छा होइ छैन जे पुतोहु घरक काम-धन्धाकेँ देखैथ आ सासु-ससुरक सेवा करैथ।"

आनन्दक एतेक बजनाइयो समाप्त नहि भेल छल कि बिच्चेमे सुलेखा बाजि उठल-

"हम अहाँ-सबहक नौकरानी बनि नहि आएल छी। हमर बाप केहेन छला जे हमरा एकटा भिखमंगा ओतए बियाहि देलक।"

कहैत सुलेखा कानए लगली।

सुलेखा धनिक घरक बेटी। कहियो भानस केनाइ तँ दूर जे अपन कपड़ो नहि साफ करैत छल। ऐ प्रकारे ओ अपन मर्जीसँ काम-काज करैत छल।

राधाक इच्छा छल जे पुतोहु हमरासँ पुछैथ जे खानामे की सभ बनेबाक अछि। केतेक चाउर, केतेक दालि... इत्यादि इत्यादि। मुदा सुलेखा अपन मर्जीसँ कोनो काज करैत छल। अपना मन मोताबिक रसोइ बनबैत छल। ओ खाना दोसरकेँ पसिन होइ अथबा नहि।

एक दिनक बात छी। सुलेखा तरूआ छानि रहल छल। ई देख राधा बाजल-

"छानि कऽ खेबाक छह तँ बापकेँ कहक जे एक टीन तेल भेज देतह।"

ऐपर सुलेखा जवाब देलक-

"हिनकर बाप कहियो एक किलो तेल भेज देने छेलैन।"

राधा सुलेखाक जवाब सुनि तिलमिला कऽ रहि गेली।

ऐ प्रकारे सासु आ पुतोहुमे कोनो-कोनो छोटो-छोटो बातपर कखनो बहसवाजी शुरू भऽ जाइत छल।

राधा अपन मन मसोइस कऽ रहि जाइ छेली। कामकाजु राधा दिन-प्रति-दिन चिड़चिड़ा सोभावक होबए लागल। ओना, एहेन बात नहि छल जे आनन्द अपना पत्नी सुलेखाकेँ नहि समझाबैत छल। परन्तु सुलेखा अपना सामने केकरो मोजरे ने दैत दल। एवम् प्रकारेण पति-पत्नीमे सेहो मन-मुटाव बढ़ि गेल।

सुलेखा अपना परिवारकेँ नरक बना देने छल। सुलेखा रूपवती छल तँए दहेजोमे छूट भेल छल। ओकरा अपन सुन्दरता आ बापक सम्पैतपर घमण्ड छेलैन। ओ अपनाकेँ घरक मालकिन आ अन्य सदस्यकेँ नौकर बुझैत छल।

राधा टुटि चुकल छल। एक तँ काम-काजक बोझ, दोसर छोटो-छोटो बातक लेल हर-हर खट-खट होइत छल।

एमहर दोसर बेटा सुरेश प्रतियोगिता परीक्षामे दिन-राति लागल रहैत छल। बी.एड. पास कए चुकल छल। टीईटी परीक्षामे सेहो नीक अंक आएल रहइ। तँए ओ शिक्षक भऽ गेल छल। मुदा सुरेश अपना घरमे जेठ भाइक पत्नी जे बड़का घरक बेटी छल, ओकर किरदानी देख नेने छल। तँए हेतुए ओ सोचैत छल जे हम कोनो मध्यम वर्गक परिवारक लड़कीसँ शादी करब। लड़कीक शील-सोभाव नीक होइ। काजुल होइ। घरक काज-करैमे निपुण होइ। ओहन गुणवाली लड़कीसँ शादी करबाक सोचमे छल।

सुरेशक पिताजी आब बुढ़ भऽ गेल छला। ओ जेठकी पुतोहुक बेवहारसँ एतेक ने आहत भऽ गेल छला जे ब्लड-प्रेसरक शिकार भऽ गेला। सुरेशक माएकेँ जेतेक प्रसन्नता जेठका बेटाक बिआह करैमे छल तेतेक सुरेशक बिआहमे नहि। ओ गोनू झाक बिलाड़ि जकाँ पाकि चुकल छेली। तँए छोटका बेटाक बिआहक चर्चो नइ करै छेली। आ राधाकेँ कोनो विशेष जिज्ञासो नहियेँ छल।

संयोगवश भवानी प्रसादजी अपन बेटी रोशनीक रिश्ता लऽ कऽ एला। सुरेश पहिनहिसँ ओइ परिवारकेँ जनैत छल। भवानी प्रसादक पुत्र सुरेशक संगी छल। तँए सुरेश भवानी प्रसादक ओइठाम जाइत-अबैत छल। रोशनीक शील-सोभावसँ सुरेश तेतेक ने प्रभावित छल जे एको बेर नाकर-नुकर नहि केलक। रिश्ताक मंजूरी दए देलक।

दुनू परिवार स्वजातीय छल। अन्तरजातीय विवाहसँ ओ घृणा करैत छल।

एमर राधाकेँ कोनो उत्सुकता आ प्रसन्नता नहि छल। ओ मने-मन सोचैत छल बड़की पुतोहु तँ सभ गुर गोबर काइये देलक। आब ई की करत ओ भगवान जानैथ...।

सुरेशक बिआह भेल। बर-कनियाँ घर आएल। राधाक मन टुटल छल तँए ओ परिछनोमे नहि गेल। लाचार भऽ दियादिनी सुलेखा बर-कनियाँक परिछण कए घर लौलक। राधा तवियत खरापक बहाना केने छेली।

रोशनीकेँ जखन पता लागल जे सासु माँ बीमार छैथ तँ ओ कोहबर घरसँ निकैल सासुक कमरामे गेल आ पहिने राधाक पएर छुबि प्रणाम केलक। आ पुछलक-

"माँ, तबियत ठीक अछि की नहि।"

एकाएक नबकी पुतोहुकेँ देख राधा लजा गेली। उठि कऽ बैसैत बजली-

"कनियाँ, माथमे दर्द भऽ रहल अछि।"

रोशनी तुरन्ते भिक्स लए सासुक माथमे लगौलक। आ किछु काल धरि पएरकेँ सेहो दबलक।

आइ बड़ फुर्तीसँ सुलेखा खूब नीक जकाँ भानस-भात कए रोशनीकेँ भोजन परोसि खेबाक लेल दैत बाजल-

“कनियाँ, खाना खा लीअ, कखन खेने हएब कखन नहि।”

रोशनी बजली-

“जखन सासु माँ भोजन करती तेकर बादे हम भोजन करब।”

तैपर सुलेखा बजली-

“माँक तबियत खराप छैन, जखन इच्छा हेतैन खा लेती।”

रोशनी अपन खाना लए खुद सासु माँक कमरामे गेली आ एक कौर भात दालिमे मिला हाथमे लए बजली-

“माँ, छोटकी पुतोहुक हाथसँ एक कौर खाना खाथु।”

कहैत हाथ सासु माँक मुँहमे देलक।

राधाक एक कौर भातसँ सभ दुख दूर भऽ गेल। भोजन करैत कहलक-

“बेटी, जाउ अहूँ भोजन कए लीअ।”

“नहि माँ जाबत अहाँ नहि खाएब ताबत हमहूँ नहि भोजन करब।”

राधा छोटकी पुतोहुक जिद्दकेँ नहि टारि सकल। राधा भरि पेट भोजन केलक। राधाक खाना खेलाक बाद रोशनी आँठि फेरि कोठरीसँ बाहर भेल।

पछाइत सुलेखा आ रोशनी माने दुनू दियादिनी संग-संग भोजन केलक। भोजन केला बाद सुलेखा सुतबाक लेल अपना कोठरीमे चल गेल। आ रोशनी एक लोटा पानि लए सासु माँक कोठरीमे जा राखि देलक आ सासु-माँक पएर दबाबए लगल।

राधा जखन बाजल-

“जाउ कनियाँ, अहाँक आइ पहिल दिन अछि, थाकल ठेहियाएल हएब। अराम करू गे।”

तखन रोशनी सासु-माँकेँ बिछौन झारि मशहरी लगा कए अपन कोठरीमे आराम करक लेल चल गेली।

राधा मने-मन रोशनीकेँ असिरवाद दऽ रहल छल। आ सोचैत छल। भविसमे जे हुअए मुदा अखन तँ अबैत देरी एतेक खातिरदारी तँ केलक। राधा छोटकी पुतोहुक परिछणमे नइ गेली तेकर आब पश्चाताप हुअ लागल छैन। रोशनी साक्षात देवी छैथ जे हमरा घरकेँ स्वर्ग बनौत...। यएह सभ सोचैत-विचारैत राधा कखन सुति रहली से नहि जाइन।

रोशनी आ राधाक बीच जे क्रियाकलाप होइत छल से सुलेखा देखैत रहल। सुलेखा अपन सासु-माँक अदखोइ-बदखोइ रोशनीकेँ सुनाबए लगली। रोशनी सुलेखाक कोनो बातक जवाब नहि दइ छेलखिन।

रोशनीकेँ अपन बिआहक पूर्वहिसँ सुलेखाक किरदानी सुरेशक माध्यमसँ बुझल रहैन। भोरे रोशनी उठि झाड़ू लऽ कऽ घर-आँगनकेँ बाहरए-सोहरए लगली। फरीच नहि भेलाक कारणे जखन सुलेखा अँगना बहारैत देखलक तँ ओकरा पहिने भेलैन जे राधाआन दिनुका जकाँ आँगनमे झाड़ू लगा रहल अछि। मुदा जखन आगाँ बढ़ल तँ रोशनीकेँ बाढ़ैन लगबैत देखलक तँ आश्चर्यचकित होइत बाजल-

"कनियाँ, अहाँ काल्हिये एलौं आ आइये बाढ़ैन पकैड़ लेलौं। कहू तँ अहाँक माए-बाप की कहता। एतेक काज केनाइ कोनो जरूरी छइ!"

रोशनी बजली-

"बहिन, ई तँ हमर अपन काज अछि। हम नइ करब तँ के करत।"

सुलेखा चुपे रहि गेली। राधा भोरे उठि बाधसँ घास आनए गेल छेली। छोटकी पुतोहुक बेवहारसँ राधा गदगद छेली। तँए राति खूब मनसँ सुतलो छेली।

रोशनी घर-दुआरिकेँ बहारि एकटा टोकरीमे बाहरन-सोहरन उठा रहल छेली। ताबत राधा घास लऽ कऽ आँगनमे प्रवेश केलैन। आकि रोशनी देखलक,चटे बाढ़ैन छोड़ि सासुक माथपर सँ घासक छिट्टा लऽ घास रखैक जगहपर जा कऽ राखि आएल।

राधा रोशनीकेँ कहए लगल-

"तूँ किएक बढ़नी धेलह। हम अबितौं तँ झाड़ू लगा दितौं।"

ई कहैत रोशनीक हाथसँ बाढ़ैन लेबए लगली। मुदा रोशनी बजली-

"माए, आब अहाँकेँ काज करैक जमाना नइ अछि। अहाँ बैसू, अराम करू आ हम सभ काज करब।"

राधा सुसताए लागल। ताबत रोशनी सासुक लेल एक लोटा पानि आ एकटा दतमैन आनि हाथमे थम्हबैत बजली-

"सासु-माँ, ई दतमैन करौथ हम ताबत जलखै बना दइ छिऐन।"

जलखै तैयार भेल। सुरेशक लेल भोजन आ टिफीन सेहो तैयार केलक। किएक तँ सुरेशकेँ विद्यालय जेबाक छेलैन। आनन्द आ राधा जलखै करि अपन-अपन काजमे लागि गेल। एमहर रोशनी अपन जेठ दियादिनीकेँ माने सुलेखाकेँ हुनक कोठरीमे जलखै लऽ कऽ पहुँचली।

सुलेखा रोशनी संगे जलखै केलैन। आ दुनू अपना-अपना काजमे लागि गेली। रोशनी राधाक आधासँ बेसी काजकेँ सम्हारि लेलैन। सुलेखा रोशनीक बेवहारसँ आहत होइत रहली आ मने-मन अपनाकेँ अपराधी मानि पश्चातापो करैत रहै छेली। रोशनीक ज्ञान, विद्वुता आ चालि-चलन ओकरा घमण्डकेँ तोड़ि देलक।

राधा आब सकुन महसूस करए लगली। फेर घरमे खुशहाली आबए लागल। एक दिन रोशनी अपन घरक सभ काम-काज निपटा भोजन कए सुतल छेली।

ताबत रोशनी कोठरीमे चौकीपर सुतल राधाक पएर दबा रहल छेली। ओही समैमे ग्लानिसँ मर्माहत सुलेखा कनैत ओइ कमरामे घुसल आ बाजल-

"माए, ऐ अभागिनकेँ क्षमा कए दीअ। अहाँ हमरा सबहक सुख-सुविधा लेल एतेक दिन-राति खटैत रहै छी। माए, हमरासँ अहाँकेँ बड़ कष्ट भेल। हम अहंकारी भऽ गेल छेलौं। रोशनी हमरा घरक साक्षात लक्ष्मी छैथ। एतेक पढ़ल-लिखल भऽ कऽ जे हमरा सबहक सेवा करै छैथ ओहीसँ हमरो रोशनीसँ शिक्षा भेटल जे परिवारक सदस्य खास कए सासु-माँ सँ बढ़ि ऐ संसारमे कियो नहि अछि। तँए हमरा सन अभागिनकेँ माफ कए दीअ।"

कनैत सासु-माँकेँ पएर दबाबए लगली। राधा बजली-

"बेटी भोरक हेराएल जँ साँझमे घर आबि जाए तँ ओकरा हेराएल नहि कहल जाइ छइ।"

आनन्द पढ़ल-लिखल युवक, सभ तमाशा देख रहल छल। बाजल-

"माए, सुलेखाकेँ माफ कए दहीन। कुल आ नीक खनदानक बेटी छोटकी कनियाँ हमरा घरकेँ साक्षात् लक्ष्मी छैथ। मध्यम घरक बेटी एहेन होइत अछि जे बिगरल घरकेँ सुधारि दैत अछि।"

ई कहैत आनन्दोक आँखिसँ नोर झहरए लगल।

शब्द संख्या : 2636

गोबर बिछनी

कमली आ मंगली बाल-संगनी छेली। दुनूक घर सटले रहैन। दुनू माए-बाप अमीर किसानक ओतए मजदूरी कए घर चलबैत छेलखिन। घरक धिया-पुता सेहो ऐ काजमे हुनका लोकैनकेँ सहयोग करैत रहैन।

कमली आ मंगली भोरे उठि घरक सभ काम-काज कए जलखै कऽ गोबर बीछैले गाइक पाछू-पाछू चलैत रहै छेली। साँझ-भिनसर गैवार-महींसवार अपन-अपन गाए-महींसकेँ चरबैले खोलै छल। कमली आ मंगली माथपर पथिया लेने महींसक पाछू-पाछू गोबर दिस तेना धियान लगौने रहै छेली जेना पोखरिक कछेरमे बौगला माछ पकड़ै खातिर धियान लगौने रहैत अछि। तपस्वी जेना तपस्यामे लीन रहै छैथ तहिना कमली आ मंगली गोबर बीछैमे लीन रहैत छल।

चितकबरी गाए गोबर केलक आकि दुनू सहेली दौड़ल आ कमली अगुआ कऽ गोबर उठा लेलक। दुनूमे कम्पेटिशन रहै छेलइ। हम अधिक गोबर बिछी तँ हम अधिक गोबर उठाबी।

जखन गोबरसँ पथिया भरि जाइत रहै तखन दुनू सहेली नमहर आरिक कछेरमे ओकरा जमा कऽ लैत छेली। आ फेर गोरब बीछैमे लीन भऽ जाइ छेली।

गोबरक उपयोगिता आ ओकर महत्व कमली आ मंगली बुझौ कि नहि मुदा गोबर जमा कए ओकर गोरहा-चिपड़ी बनाएब तँ जनिते छेली। समय-समयपर ओकरा बेच किछु आमदनीक जोगार सेहो कए लैत छेली।

एक दिन गोबर बीछैक क्रममे गामक नेना-भुटकाकेँ सिलेट-पेन्सिल लए विद्यालय जाइत देखलक। दुनू अपनामे संकल्प केलक जे हमहूँ सभ पढ़ब। ई विचारक भाव दुनूक मनमे जगलै। ई विचार करैत अपन-अपन घर पहुँचल। दुनू अपन-अपन माए लग पढ़बाक इच्छा जाहिर केलक। दुनूक उमेर तकरीवन आठ-नअ बर्खक भेल छेलइ।

दुनूक माए अपन बेटीकेँ डाँट-फटकार देबए लागल। कहलक-

"गइ लड़कियो केतौ पढ़लकै हेन। तूँ पढ़ि कऽ हाकीम बनबें की। तो पढ़बें तँ की नौकरी करबैं? घरक काम-काज के करत? बेटीकेँ पढ़ौला-लिखौलासँ ओ दूरि भऽ जाइ छइ। ओकरामे उदण्डता, लोक लज्जा, निर्मजता आ आदि-आदि दुर्गुण सभ आबि जाइ छइ। तँए तोरा नइ पढ़ए देबौ।"

दुनूक माए एकठाम जमा भऽ अपना-अपना बेटीकेँ समझाबए-बुझाबए लगली।

ओही समैमे कमलीक पिताजी सेहो आँगन आबि गेला। घरवालीकेँ बिगड़बाक कारण पुछलखिन।

घरवाली व्यंग पूर्वक बाजल-

"अहाँक बेटी पढ़त आ हाकीम बनत। किदैन कहलकै जे हम पटोर पहिरब तँ आँखि कहलकै जे हम संगेमे छियौ।"

कमलीक पिताजी बजला-

"कमली पढ़त तँ अहाँक देह एना किए जरैत अछि।अहाँकेँ एना ईर्ष्या किए भऽ रहल अछि। अहाँक माए-बाप नहि पढ़ौलक सएह एकरो प्रति सोचै छी।"

कमलीकेँ ओकर पिता दुलारसँ गोदमे लैत पुछलखिन-

"बेटा, तों पढ़बें तँ हम सिलेट, पेन्सिल, किताब-कॉपी सभ कीनि कऽ आनि देबौ।"

कमली डेराइत बाजल-

"बाबूजी, हम घरक कामो-काज कए देब आ पढ़बो करब।"

तैपर कमलीक पिता कहलखिन-

"तों जहाँ धरि पढ़मैं हम पढ़ेबो।"

कमली बड़ खुश भेली। तुरन्त दौग कऽ सभ हाल मंगलीकेँ सुनौलैन। कमली आ मंगली खुश भऽ नाचए लगली आ बजली-

"हमहूँ पढ़ब, हमहूँ पढ़ब।"

दोसरे दिन दुनूक पिता मजदूरी करि कऽ पैसासँ प्राथमिक विद्यालयमे नाम लिखा देलक। आ ओइ दुनू छात्राक नाम बदैल देल गेलइ।

आब कमलीक नाम राधा आ मंगलीक निकहा नाम कुसुम भऽ गेल। राधा आ कुसुमकेँ सिलेट-पेन्सिल आ मनोहर पोथी खरीद देल गेलइ।

दुनू सहेली मन लगा कऽ पढ़ए लगल। राधा ओ कुसुमक काम बढ़ि गेलइ। गोबर बिछनाइ, घरक बरतन-बासन मँजनाइ आ पढ़नाइ-लिखनाइ इत्यादि।

गोबर बीछि गोरहा-चिपड़ी बना ओकरा बेच अपन पढ़ाइक खर्च सेहो निकालि लैत छल। किछुए दिनमे ओकरा सभकेँ किताब पढ़नाइ, लिखनाइ सेहो आबि गेलइ। 'बाले दण्ड आ सियाने पाठक' ऐ आधारपर ओ दुनू वर्गमे नीक स्थान आनए लागल। शिष्ट रहबाक कारणे शिक्षको लोकैन अधिक मानए लगलैन।

सर्व शिक्षा अभियानसँ दुपहरक भोजन आ पोशाकक राशि सेहो भेटए लगलै। दुनूक लगनशीलता, कर्मठता, अनुशासन आ गुरुभक्ति देख शिक्षको लोकैन ओकरा प्रति अधिक संवेदनशील रहैत छला। दुनूक हरेक समस्याक समाधान शिक्षक लोकैन करैत छला।

ऐ तरहें दुनू सहेली प्राथमिक शिक्षा ग्रहण कए माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करबाक लेल उच्च विद्यालयमे नामांकन करौलैन। सरकारी योजनाक तहत दुनूकेँ साइकिलक आ छात्रवृतिक राशि सेहो भेटलै।

दुनू सहेली मैट्रिकक वोर्ड परीक्षामे प्रथम श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेली। सरकारी योजनासँ दस-दस हजार रूपैआक प्रोत्साहन राशिक चेक सेहो भेटलै।

आब राधा आ कुसुम गर्ल्स कौलेजमे इन्टरक पढ़ाइ करए लगली। अपन मेहनतक बलपर दुनू सहेली इन्टरमे सेहो प्रथम श्रेणी प्राप्त भेलैन। आ पुन: पनरह-पनरह हजारक चेक प्राप्त भेलैन। आगाँ पढ़बाक लिलसा बनल छेलइ। माए-बापक सेहो मनोबल बढ़ैत रहलै। दुनू सहेली बी.ए. मे नाम लिखा कौलेज जाए-आबए लगली।

राधा आ कुसुम आब वयस्क भऽ गेल छेली। वसन्तक मादकता, कोयलीक कूक सावनक फुहार आ कामदेवक प्रहारसँ अवगत होमए लागल छेली। कौलेजक छात्र-छात्रामे एक-दोसरक प्रति आकर्षण बढ़ए लागल छेलइ। ओही क्रममे राधाकेँ एकटा राजेश नामक लड़कासँ दोस्ती भऽ गेलइ। राजेशकेँ कपड़ा-दोकान छेलै आ बी.ए.क थर्ड पार्टमे पढ़ैत सेहो छल। कभी-कभार कौलेजमे मौज-मस्तीक लेल जाइत छल।

राधा आ राजेशक दोस्ती प्रगाढ़ हुअ लगलै। दोस्तीक बहाने दुनू एक-दोसरसँ प्रेम करए लागल। राजेश-राधाक लेल नव-नव उपहार लाबए लागल। कुसुमकेँ राधा-राजेशक दोस्ती पसिन नहि छेलैन। तथापि ओ दुनूक क्रिया-कलापपर विशेष धियान देमए लगलै।

राजेश चाहैत छल जे राधाकेँ बहला-फुसला कऽ अपना फाँसमे फँसा घरसँ निकैल जाइ। मुदा राधा पढ़ल-लिखल आ होशियार लड़की, तँए घरसँ निकललासँ पहिनहि ओ एक दिन राजेशक घर पहुँचली।

राजेशक माए घरमे छेलखिन। राजेशक माएकेँ प्राणाम करैत राधा अपन परिचए देलैन-

“माइजी, हम राजेशक मित्र छी।”

राजेशक माए कहलखिन-

“आउ बेटी, बैसू। राजेश तँ दोकानपर अछि।”

ताबत ओकरा ओइठाम गामक किछु सम्भ्रान्त परिवारक महिला लोकैन आबि गेलखिन। राजेशक माए ओइ महिला सबहक खातिरदारीमे लागि गेली। राधा आँगनमे असगरे बैसल छेली। तखने छोट बच्चाक कनबाक ध्वनि सुनाइ पड़लैन। एकटा दुबर-पातर महिलाकेँ एक घरसँ दोसर घरमे जाइत देखलैन। ओ औरत राधा दिस घुरि-घुरि कऽ तकैत छेलखिन।

राधा ओइ औरतकेँ अपना लग बजा पुछलखिन-

“अहाँ हमरा दिस एना किए गुम्हरै छी? अहाँ के छी?”

ओ अपनाकेँ राजेशक पत्नी बतौलक। छोट-छोट धिया-पुताक कारणे ओ परेशान छेली। राजेशक पत्नी राधासँ पुछलखिन-

"की अहींक नाओं राधा छी? अहाँ तँ पढ़ल-लिखल बुझना जाइ छी तखन केना अहाँ हुनका चक्करमे फँसि गेलौं?"

एकाएक राधाकेँ फँसबाक आभास भेलैन। सोचए लगली। हम वास्तविकतासँ दूर हटि एक कपटी, क्षली, लम्पट आ चरित्रहीनक जालमे फँसि रहल छेलौं।

राधा राजेशक माएसँ विदा लैत अपना घर एली। कुसुमसँ भेँट कए सारा वृतान्त सुनौलैन। दुनू सहेली राजेशकेँ सबक सिखेबाक लेल षडयंत्र रचलैन।

साँझमे राजेशसँ भेँट करैले ओ आइ पहिनहिसँ इन्तजारमे छेली। साँझ पड़ैत देरी राजेश दोकान बन्न कए घर अबैत छल। नियत समैपर राधासँ भेँट भऽ गेलैन। कुसुम गाछक अढ़मे नुकाएल छेली। राजेश राधासँ प्रेमक वार्ता करए लागल। तइ बिच्चेमे राधा जोरसँ हल्ला करए लगली।

हल्ला सुनि लोक सभ जमा भऽ गेल। कुसुम पुलिसकेँ खबर पहिनहिसँ कए देने छेली। पुलिस राजेशकेँ धारा 376 केर अन्तर्गत गिरफ्तार कए जहल भेज देलक।

राधा अपन नजैर कुसुम दिस दैत बाजल-

"गोबर बिछनीमे की शक्ति छै से देखौ...।"

शब्द संख्या : 1039

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

रबीन्द्र नारायण मिश्र

पहिल नौकरी

दड़िभंगामे हम पाँच सालसँ किछु बेसीए दिन रहलौं। तीन साल तँ सी.एम.कौलेजमे पढ़ैत विद्यार्थी रही। ओइ समय विज्ञान, कला, वाणिज्य सभ संकाय मिला कऽ एक्के कौलेज छल। सी.एम.कौलेज-दड़िभंगासँ हम बी.एस-सी. (भौतिकी प्रतिष्ठा) पास केलौं। बी.एस-सी केला बाद आगू की करी ई समस्या छल। पीक्षाफल बिलमसँ एबाक कारणे एम.एस-सी.क नामांकन सेहो बन्द भऽ गेल रहइ। ओहुना ओइ समैमे पढ़ाइ-लिखाइक क्षेत्रमे सम्पूर्ण बिहारमे अराजकता छल। परीक्षामे नकल करब तथा नकल कराएब दुनू गौरवक गप छल। विद्यार्थी सबहक अभिभावक सभ पुर्जी पहुँचबैले जान लगौने रहैथ। ऐ परिस्थितिमे बिहारक तेतेक बदनामी भऽ गेल छल जे सहियो विद्यार्थीक योग्यतापर प्रश्न चिन्ह लागि जाइत छल।

ओइ समयमे डाक-तार विभागमे दूरभाष निरीक्षकक पदक रिक्तिक विज्ञापन निकलल रहइ। हम मधुबनी पोस्ट ऑफिसमे आवेदन-पत्रक लेल एकटा आग्रह पोस्ट कार्डपर लिखि खसा देलिऐ। किछुए दिनमे आवेदन-पत्र प्राप्त भेल।

आवेदन-पत्र प्राप्त होइते भरि कऽ आइ.एस-सी.क अंक-पत्रक संग पठा देलिऐ।

आइ.एस-सी.क प्राप्तांकक आधारपर ओइ पदपर चयन हेबाक रहइ। हमरा आइ.एस-सी. परीक्षामे बहुत नीक प्राप्तांक छल। किछुए मासक बाद हमरा पटना टेलीफोन विभागसँ दूरभाष निरीक्षकक पदक हेतु नियुक्ति-पत्र भेटल।

नियुक्ति-पत्र भेटलाक बाद असमंजसक स्थिति बनि गेल, कारण हम बहुत महात्वाकांक्षी रही। पैघ पदपर जेबाक इच्छा रहए, तइ हेतु तैयारीक कार्यक्रम छल,मुदा हाथमे आएल लक्ष्मीकेँ लात मारब नीक नहि, ई बात केतेको गोटे कहैथ। अछताइत-पछताइत ओइ नियुक्तिकेँ स्वीकार करैत अगस्त १९६३मे राँची प्रशिक्षण हेतु चल गेलौं।

राँची टेलीफोन एक्सचेंजक भूतलपर प्रशिक्षणक बेवस्था छल। ओइ प्रशिक्षणमे कएटा नीक-नीक विद्यार्थी सभ छला। कए गोटा एम.एस-सी. सेहो केने रहैथ। सरकारी नौकरीक बात छेलइ। सभ आँखि मूनि कऽ पकैड़ लेलक।

राँचीमे छह मासक प्रशिक्षणक बाद हमर तीन मासक बेवहारिक प्रशिक्षण-लहेरियासराय टेलीफोन एक्सचेंजमे भेल। ओइ क्रममे बलभद्रपुर, लहेरियासरायमे एकटा विद्यार्थीक संग डेरा रहए। एक दिन ओ विद्यार्थी गाम चलि गेला आ हमरा कोठरीक कुंजी नहि रहए। लातसँ तेतेक जोरसँ केबाड़मे धक्का मारलिऐ जे टुटि गेल। बादमे मकान मालिक नाराजगी व्यक्त केलाह, मुदा बात जेना-तेना शान्त भऽ गेल।

ओइ प्रशिक्षणक दौरान फगुआमे हम गाम एलौं आ २-३ दिन फाजिल रहि गेलौं। फोन विभागमे झाजी इन्जीनियरिंगक सुपरवाइजर रहैथ। वएह हमर हाकिम छला। हमरा डराबए लगला। की जे प्रशिक्षण अधूरा रहि गेल, ब्रेक लागि गेल। मुदा असलमे किछु नहि भेल। हमर प्रशिक्षण समयसँ पूरा भेल आ हम जमशेदपुरमे ३ मई १९७४ क पदभार ग्रहण कएल। ओहीठाम एकटा आर संगी पदभार ग्रहण केलैथ। सरकारी काज करबाक हमरा किछु अनुभव नहि छल। एसडीओ फोन्स बड़ा करगर अधिकारी रहैथ। अपन डाँटसँ अधीनस्थ सबहक सीटीपीटी गुम केने रहैत छला।

जमशेदपुर ओइ समयमे बिहारक सुव्यवस्थित एवम् साफ-सुथरा शहरमे मानल जाइत छल। छुट्टीक दिन शहरमे केतौ-केतौ घुमबाक कार्यक्रम बरबैर बनबैत रही। साक्ची ओ विष्टुपुरमे तरह-तरहक दोकान सभ छेलइ। जुबली पार्कमे घुमब आनन्ददायी छल। ओइ पार्कमे टहलबसँ हम आनन्दक अनुभव करैत रही। एक दिन मौका पाबि कऽ हम टाटा स्टीलक अन्दरसँ देखबाक अवसर सेहो प्राप्त कएल। अति उच्च तापक्रमपर लोहाकेँ गला कऽ द्रव्य रूपेमे एकठाम-सँ-दोसरठाम जाइत देखलौं। भयानक रूपसँ लाल रहैत छल ओ तरल लोहा।

हमर रूमेट सिगरेट पीबैत छला। शुरूक एक मास तँ कहुना कऽ हुनका संग बितौल मुदा आगाँ बहुत दिन धरि हुनका संग चलब सम्भव नहि बुझाएल। एक दिन हम हुनका स्पष्ट कहलिऐन जे या तँ अहाँ सिगरेट छोड़ू नहि तँ अहाँकेँ हम छोड़ि अलग डेरा लऽ लेब। ओ सिगरेट नहि, छोड़ि सकला आ हम अलग डेरा लऽ लेलौं।

जमशेदपुरमे रहैत केन्द्रीय सिभिल सर्भिसेजक (संघ लोक सेवा आयोगक) परीक्षा हेतु छुट्टीक काज छल। अधिकारीगण छुट्टी मना कऽ देला। अन्तमे हम बिना अनुमतियेक ओतए-सँ घसैक गेलौं आ करीब एक मासक बाद परीक्षा दऽ कऽ आपस एलौं।

एसडीओ फोन्सकेँ मोटर साइकिलपर अबैत देखलयैन, हुनका देखते देबाल फानि कऽ एकटा दोकानपर बैस गेलौं। मोनमे तरह-तरह केर आशंका रहए। हम बाटे तकैत रही कि हुनकर बुलाबा आबि गेल आ तरह-तरह केर उपदेश ओ देलाह।

एवम्-प्रकारेण लगभग आठ मास धरि ओतए नौकरी केलौं, पछाइत बाबूजीक प्रयाससँ हमर स्थानान्तरण जमशेदपुरसँ डीइटी दड़िभंगाक अधीन भऽ गेल। मुदा एसडीओ फोन्स कार्यमुक्त करैमे नाकर-नुकुर करैत छला। हम जल्दीसँ जल्दी दड़िभंगा आबि कार्यभार ग्रहण करए चाही। हमर सहकर्मीक सेहो स्थानान्तरण दड़िभंगे भेल रहैन। ओ पहिने कार्यमुक्त भऽ ओतए पहुँच गेल छला। हमरा लटकौने छेलैथ।

प्रात:काल भोरे-भोर हम डीइटीक डेरापर पहुँचलौं। ओहीठाम लेखाधिकारी सेहो रहैत छला। हम हुनका सभटा बात कहलयैन। ओ बहुत सहृदय बेकती छला। हमरासँ पुछलैन जे आखिर अहाँक बदली केना भेल। तँ कहलयैन जे बाबूजी पटना जा कऽ किछु प्रयास केलैन जइसँ हमर स्थानान्तरण दड़िभंगा डिवीजन भेल अछि। हमरा दड़िभंगा जाएब बहुत जरूरी अछि। आदि-आदि। सभ बात सुनि ओ आश्वासन देला जे अहाँक आइ अबस्स कार्यमुक्ति कए देल जाएत। भेबो कएल सएह।

कार्यालय खुजिते ओ एसडीओ फोन्सकेँ फोनपर आदेश देलखिन जइसँ ओ तिलमिला गेला। मुदा हमरा ओइ दिन ओइठामसँ कार्यमुक्त कए देल गेल।

साँझमे बससँ दड़िभंगा विदा भेलौं। दड़िभंगा पहुँचलापर पता लागल जे दुइएटा जगह खाली छइ। एकटा जयनगरमे आ दोसर सुपौलमे। जयनगरक खाली पदपर हमर संगी अपन जोगार लगा लेलैन। आब रहि गेल सुपौल। कोनो दोसर उपाय नहि देख हम सुपौलक रस्ता पकड़लौं। सहरसा वोट सुपौल ट्रेनसँ जाएब ओइ समयमे बेस टेढ़ काज छल। तथापि ओतए पहुँच कार्यभार ग्रहण कएल।

छोट-छीन टेलीफोन एक्सचेंज छल जइमे किछु ऑपरेटर, एकटा मेकेनिक पहिनेसँ कार्यरत छल। हम ओतए वरिष्ठतम बेकती छेलौं। सहरसामे उच्च अधिकारी बैसैत छला। फोन द्वारा तरह-तरह केर आदेश पठबैत रहै छेलखिन।

सुपौल छोट-छीन नीक शहर बुझाएल। ओइठामक माड़वाड़ी बासाक उत्तम ओ स्वादिष्ट भोजनक स्मरण कए अखनो जीहमे पानि आबि जाइत अछि। ओइठाम रेलबे स्टेशनक ठीक सामने लाल कोठीक एकटा

कोठरीमे हम आ पोस्टमास्टर डेरा लेने रही। पोस्ट मास्टर बहुत कर्मठ छला। भोरे जाथि तँ देर राति थाकल-झमारल अबैथ। हुनका संगे तेकर बाद हँसी-ठठा होइत छल।

ओही डेरामे रहैत हमरा पोसुआ कुकुर काटि लेलक आ दोसरे दिन ओ कुकुर मरि गेल। आब तँ बड़ चिन्तामे पड़ि गेलौं। कुकुरक नमगर-नमगर चौदहटा सूई पेटक अँतरीमे लगबए पड़ल। एक दिन सुई लगबिते काल एकटा घटक आबि गेला। सूई लगबैत देख लेला से चिन्तामे पड़ि गेलौं। ओना, कोनो कारणसँ ओ कथा नहि पटल। किछु दिन बाद हमर ससुर अपन अनुज ओ एकटा आर बेकतीक संग विवाहक क्रममे हमरासँ गप करए टेलीफोन एक्सचेंज- सुपौल आएल रहैथ। हुनका सभकेँ यथासम्भव स्वागत कएल। विवाहक आहटसँ मोनमे प्रसन्नता छल। जे जे पुछला, सभ उत्तर देलिऐन।

साँझमे हमर पितिया ससुर डेरापर सेहो एला। डेराक हालत तँ वर्णन जोग नहियेँ छल। ऊपरसँ हमरा गंजी मोइल छल से बात हमर ससुरकेँ पता लगलैन। ओ चिन्तामे पड़ि गेला, कारण ओ स्वयं साफ-सुथरा रहैत छला।

सुपौलक दही आ पेरा बड़ नामी छल। अति स्वादिष्ट पेरा खेबाक स्मरण होइते अखनौं मुँहमे पानि आबि जाइत अछि।

किछु दिनक बाद हमर स्थानान्तरण सुपौलसँ दड़िभंगा डीइटी ऑफिसमे पीआइक पदपर भऽ गेल। ३ जून १९७४ क हम डीइटी दड़िभंगाक कार्यालयमे पदभार ग्रहण कए जखन गाम पहुँचलौं तँ दरबज्जापर अलगे प्रकारक गहमा-गहमी पसरल छल। हमर संगी एवम् मित्र- लाल बच्चा (स्व. प्रो. विष्णु कान्त मिश्र) कहला जे हमर बिआह ठीक भऽ गेल अछि। क्रमशः सभटा जानकारी भेटल। प्रात भेने माने ४ जून १९७५ केँ हमर बिआह छल। कोनो जानकारी नहि हेबाक कारण हम ओही दिन कार्यालय जा एकाएक विवाहक हेतु छुट्टीक आवेदन देलिऐ आ तखन रातिमे आठ बजे दड़िभंगासँ गाम एलौं...।

कार्यालयमे ई समाचार बिजलौका जकाँ पसैर गेल। चारूकातसँ वधाइ दैत सहकर्मी लोकनि हमर आनन्दकेँ कएक गुना बढ़ा देला।

गाम पहुँचते विवाहक तैयारीमे लागि गेलौं। गाड़ी सभ लागल छल। बिरयाती तैयार छल आ बरक प्रतीक्षा छल। बरकेँ अबिते धराधर विध सभ पूरा कएल गेल।

हमर पितिया ससुर हथधरीक हेतु आएल रहैथ। ओ बिच्चे दरबज्जापर धोती-कुर्ता पहिरने हमर प्रतीक्षामे बैसल रहैथ। आर-आर लोक सभ दरबज्जापर मुस्तैद छला। हमर मित्रगण सभ सेहो मौजूद छल।

हथधरी भेल। बरियाती सभ चटपट गाड़ीमे बैसल। कुल १९ गोट बरियाती छल जे ओइ समयक हिसाबे बेसीए छल। नहि तँ पहिने पाँचटा-सातटा बरियाती पर्याप्त होइत छेलइ। बरियातीक संख्या लऽ कऽ जे अपना समाजमे रेबाज बदलल अछि से दुर्भाग्यपूर्ण, कारण सैकड़ोक तादादमे गाम-गामसँ बरियातीकेँ लादि कऽ कन्याक पिताक माथपर पटैक देब कोनो वुद्धिमानी नहि कहल जा सकैत अछि। व्यर्थक परेशानीक अलाबा आर्थिक क्षति सेहो होइत अछि, जेकर कोनो केकरो लाभ नहि।

ejournal 'विदेह' 232 म अंक 15 अगस्त 2017 (वर्ष 10 मास 116 अंक 232) मानुषीमिह संस्कृताम्ISSN 2229-547X VIDEHA

..ओइ समयमे सीमित संख्यामे बरियाती जाइत छल तँ ओकर शोभे अलग रहै छेलइ। एक-एक बेकतीपर पर्याप्त धियान देल जाइत छल। बरियाती सबहक बेकतीगत परिचय होइत छल। आब तँ ढाकक ढाक बरियाती जाइ छैथ आ दुपहरिये-रातियेमे खुआ-पिआ कऽ विदा कए देल जाइत छैन।

हमरा लोकनि दस बज रातिमे पण्डौल डीह टोल पहुँचलौं। गीत-नादक मनोरम वातावरणमे विवाहक प्रक्रिया सम्पन्न भेल। ऐसँ जीवन संगिनीक रूपमे आशा मिश्र भेटली जे ओइ समयमे मात्र १७ बर्खक छेली आ हमर उमेर २२ बर्ख छल। अद्यतन हमरा जिनगीमे ओ संगे सुख-दुखक सहभागी छैथ जइसँ हम नाना प्रकारक झंझावातसँ उवैर जीवनक ऐ पड़ावपर ठाढ़ छी।

लगभग दस दिनक अवकाश समाप्तिपर छल। विवाहोपरान्त हम गाम आएल रही। माय केतेक प्रसन्न भेल रहैथ तेकर वर्णन करब असम्भव अछि। हमर पितिआइन सभ सेहो उत्सुकतावश कनियाँ ओ ओकर परिवारक विषयमे पुछैत रहली...।

प्रात भेने कार्यालय गेलौं तँ सभ कियो हमरा उत्सुकतासँ हाल-चाल पुछैत, फाटो सभ देखैथ। ऐ तरहेँ केतेको दिन बीति गेल।

एक दिन कार्यालयसँ झटैक कऽ दड़िभंगा बस स्टेण्डपर बस पकड़ए जाइत रही कि पाछूसँ अबाज सुनबामे आएल-

“मिसरजी! सासुर जा रहल छी की?”

डेगक गतिक अनुमान कए ओ हमर सासुरक यात्राक अन्दाज लगा लेला जे एकदम सही छल। दड़िभंगा कार्यालय लगमे रहबाक कारण ओइठामसँ पण्डौल जाएब असान रहै छल। छुट्टी नहि लेबए पड़ैत छल।

डीइटी दड़िभंगा कार्यालयमे हम करीब दू साल काज केलौं। काज तँ कोनो खास नहि छल। पुरान टेलीफोनक बकाया असूली करक रहै छेलइ। जइ लेल हमरा लगभग पूरा उत्तर बिहार मुफ्त भ्रमण करबाक हेतु पास भेटल छल। ओना, ओइ पासक उपयोग कियो आन करैत छल आ हम अपन समय अपन समय प्रतियोगिता परीक्षा सबहक तैयारीमे लगबैत छेलौं।

पढ़ाइ-लिखाइ कखनो व्यर्थ नहि जाइत छइ। सन् १९९७ क केन्द्रीय सचिवालय सेवा हेतु आयोजित संघ लोक सेवा आयोगक एसीसटेन्ट ग्रेडक परीक्षा हम पहिले प्रयासमे पास कऽ लेलौं। किछु दिनमे नियुक्ति-पत्र सेहो आबि गेल।

नियुक्ति-पत्र हाथमे अबिते मनमे उठल- कार्यालय, काज, स्थान सभ परिवर्तन भऽ जाएत। ई सोचि मोन आगू-पाछू करए लागल। अन्ततोगत्वा निर्णय कएल जे दिल्लीए जेबाक चाही। ओइठाम अपना तँ जे हएत से हएत मुदा बच्चा सभकेँ पढ़ै-लिखैक बेहतर अवसर भेटत। आदि-आदि।

सोच-विचारक बाद हम दड़िभंगाक दूरभाष निरीक्षकक पद छोड़ि दिल्ली स्थित केन्द्रीय सचिवालय सेवाक सहायकक पदभार ग्रहण करबाक निर्णय कएल। ई निर्णय केतेक सही रहल, केतेक नहि तेकर विचार-विमर्शक आब समय नहि रहल। जे भेल से नीके भेल। गते न सोचामि कृतं न मन्येत। सही कहल गेल अछि जे विवाह भावी जीवनक दिशा दसा तय करैत अछि। यद्यपि हमरा लोकनिक विवाह अभिभावक गण तय केने रहैथ, मुदा हम आब निश्चय कहि सकैत छी जे ओ सभ बहुत वुद्धिमत्तापूर्ण निर्णय केने छला। जीवन भरिमे हर समय हमर श्रीमती हमर संगे नहि देलैन अपितु जीवन मार्गकेँ अपेक्षाकृत सुगम सेहो करैत रहली। हुनकर रचनात्मक सोच एवम् शान्त मस्तिष्कक लाभ हमरा भरपूर भेटैत रहल अछि। आ से घरोमे आ ऑफिसोमे। केतेको जटिल समस्या सभपर हुनकर राय बहुत कारगर होइत रहल अछि। बहुत सन्तोष पूर्वक सीमित आमदनीमे इमनदारीपूर्ण जिनगी केना जीबी तेकर ओ उदाहरण छैथ।

हमर सासुर पण्डौल डीह टोल रेलबे लाइनसँ थोड़बे दूरपर अछि। घरे बैसल अबैत-जाइत ट्रेन देखाइत रहैत अछि। जखन हम सभ दिल्लीसँ पण्डौल आबी तँ रेलक आगमनक सूचना घरे बैसल हमर सासुरमे भेट जाइक। भवानीपुरक महादेव मन्दिर सामने देखाइत रहैत अछि। केतेको गोटे नियमित भवानीपुर जाइत रहै छैथ आ महादेवक जलढरी करै छैथ, घुमै-फिरै छैथ। असलमे गाम-घरमे लोकक जीबाक अन्दाज अखनो अध्यात्मिकतासँ जुड़ल अछि। कोनो-ने-कोनो रूपे लोक उपवास, पूजा-पाठमे लगले रहै छैथ। शिवरातिकेँ भवानीपुरमे जबरदस्त मेला लगैत अछि। स्थानीय आकाशवाणीसँ सद्य: प्रशारण सेहो होइत अछि।

पण्डौल डीह बहुत ऊँचमे बसल अछि। टोलक सामनेक जमीन सेहो घराड़ीमे उपयोग कएल जा सकैत अछि। एहेन अइल-फइल ओ ऊँच घराड़ी मिथिाक कम गाममे देखल जाइत अछि।

पण्डौलमे आदम-जमानासँ रेलबे टीशन अछि। मुदा रेलबे टीशनसँ डीहटोल एबामे बहुत समय ओ संघर्ष रहैत अछि। पण्डौल बजार केतेक पुरान अछि से कहब कठिन। आवश्यकताक सभ वस्तु ओतए भेट जाइत अछि। उत्तम कोटिक धोती ओइ बजारसँ आनि हम वर्षोसँ पहिरैत छी।

पण्डौल डीह ओ भवानीपुरक बीचक एकपेरिया रस्तामे डरसामा डीह अबैत अछि। कहल जाइत अछि जे पाण्डव गुप्त बासमे ऐठाम रहल रहैथ।

निश्चित रूपसँ कहल जा सकैत अछि जे मनुखक जीवनमे विवाह एकटा निर्णायक बिन्दु होइत अछि। आइ-काल्हि तँ तरह-तरह केर लोक परिचय आ की की मिलान करैत अछि, तथापि विवाह विच्छेदक संख्यामे निरन्तर बढ़ोत्तरी भऽ रहल अछि। हम तँ किछु नहि देखलिऐ, मात्र कन्याँक एकटा छोट-छीन फोटो हमरा सासुरसँ आएल छल, ओहो विवाह तय भेलाक बाद। ई नहि कहल जा सकैत अछि जे आधुनिकतासँ प्रभावित वर्तमान विवाह सम्बन्धमे सभ किछु गड़बड़ीए अछि,मुदा ई बात तँ तय अछि जे केहनो नीक-सँ-नीक विवाहकेँ सफलतापूर्वक आगू चलेबाक हेतु दुनू पक्षकेँ समझदारी आ समझौता जरूरी अछि, अन्यथा संकट उत्पन्न हएब भारी बात नहि।

हमर ससुर (स्व. गणेश झा) ऐ बातसँ चिन्तित भऽ गेल रहैथ जे हम दड़िभंगाक नौकरी छोड़ि कए दिल्ली जा रहल छी मुदा किछुए दिनक बाद हम परिवारकेँ संगे लऽ अनलौं। जइसँ हुनका अतिशय प्रसन्नता भेलैन।

हमर गाम अड़ेर डीह। अड़रे डीह चौदह टोलक गाम अछि। पहिने एक्के पंचायतमे सभटा टोल छल। अड़ेर पुवाहि टोल, अड़ेर डीह टोल, विष्णुपुर, जमुआरी होइत विचरवाना तक एक्के पंचायत छल- अड़ेर। ओकर मुखिया बहुत दिन तक स्व. मार्कण्डेय भण्डारी छला। आ हमर पिताजी सरपंच रहैथ। ओइ समय ग्राम पंचायतकेँ आइ-काल्हि जकाँ अधिकार नइ रहै तथापि मुखिया-सरपंचक नाम तँ पंचायतमे विख्यात भाइए जाइत छल। पंचायतक चुनाव ओहू समयमे गहमा-गहमीसँ भरल होइत छल। हम सभ स्कूलमे पढ़ैत रही तँ चुनाव भेल रहइ। स्व. मार्कण्डेय भण्डारीजी मुखियाक चुनाव जीतल रहैथ। सप्पत ग्रहण समारोहक क्रममे आयोजित उत्सवक प्रसंग अखनो मनसँ मेटाएल नहि। ई मोन बड़ा विचित्र चीज अछि किने। कहि नहि एकर कन्तोरमे केतेक खल होइत छै जे तरह-तरह केर गप-सप्प सालो-साल चौपेतल रहैत अछि।

ओइ समयमे स्व. मार्कण्डेय भण्डारीजीक इलाकामे फूक चलैत छल। अड़ेरक सिनुआरा टोलमे हुनकर घर अछि। सभ तरहेँ सम्पन्नताक संग समाजिक मान-सम्मान हुनका भरपूर भेटल छेलैन। साँझकेँ जे अड़ेरक सड़कपर दल-बलक संगे हुनका टहलैत देखिऐन। ओह..!

अड़ेर डीह टोल माने हमर गामक इतिहास बहुत परान लगैत अछि। गाममे आब जनसंख्याक अनुपातमे आवासीय जमीन सीमित अछि। तँए घरेपर घरक दृश्य अछि। लोक सभ अगल-बगलमे घर बना रहल छैथ। कलममे सेहो बास भऽ गेल अछि। सभसँ चमत्कारी विकास तँ चौकक आसपास भेल अछि। चौकक कातेकाते करीब-करीब दू साए दोकान खुजि गेल अछि। तरह-तरह केर थौक आपूर्ति करएबला दोकान सभ सेहो खुजि गेल अछि।

असलमे अड़ेर चौकसँ चारूकात रोड बनि गेल अछि। तँए इलाकाक लोक क्रय-विक्रयक लेल ओइठाम पहुँचै छैथ।

अड़ेरमे स्टेट बैंक ऑफ इण्डियाक शाखा अछि, ओकरे एटीएम सेहो अछि। थाना अछि, पोस्ट ऑफिस अछि, सरकारी डिसपेंसरी अछि। प्राइमरी स्कूल,मिडिल स्कूल तथा हाइ सकूल अछि। संगे एकटा संस्कृत विद्यालय सेहो अछि जेतए सुनै छी जे विद्यार्थी सभ नदारदर छैथ मुदा सार्टिफिकेट भेट जाइत छैन।

गाममे तीनटा पोखैर कहि नहि कहियासँ अछि। ओकर अतिरिक्त गामक बाहर नवका पोखैर, कुट्टी लगक पोखै सेहो अछि। गामक बीचमे पोखैर हेबाक कारण बासक जगहक दिक्कत छइ।

हम सभ जखन बच्चा रही तँ गाममे हाइ स्कूल नहि रहइ। गामक विद्यार्थी सभ पढ़बाक हेतु एकतारा, लोहा वा रहिका जाइत रहैथ। एकाघ-टा विद्यार्थी मधुबनी किंवा बेनीपट्टी सेहो जाइत छला।

कहल जाइत अछि जे एकबेर अंग्रेज सभ गामक बाटे जाइत काल पहलमान सभकेँ सौरो करैत जे देखलकै आ ठिठैक गेल। पुछलकै जे ई सभ डकैत छिऐ की?तँ कियो कहलकै जे नहि सरकार! ई सभ पहलमान छैथ, सुखी सम्पन्न छैथ आ खेती-बारी करि कऽ प्रतिष्ठा पूर्वक जीबैत छैथ।

अड़ेरमे कमला नदीसँ जोड़ल नाला अछि जइमे पानि तखने अबैत अछि, जखन कि कमलामे बाढ़ि आबि जाइत अछि। कृषि काजमे ऐ नालाक योगदान नगण्य अछि। स्थानीय किसान सभ भगवानक कृपापर निर्भर छैथ।

चिकित्साक मामलामे हमर गाम पिछड़ल अछि। केतौ-केतौसँ इलाज-बात होइए। पहिने दड़िभंगामे इलाजक नीक बेवस्था छल। पैसा खर्च केलापर लोककेँ औरुदा रहलापर जान बँचि जाइत छल, मुदा आब तँ भगवाने मालिक। बेमरी किछु, इलाज कथुक। हमर एकटा परिचितकेँ तेतेक करगर एन्टीवायोटिक देल गेल जे हुनकर दुनू किडनी फेल भऽ गेलैन। आब डयलिसिस करा कऽ कहुना जीबि रहला अछि। जेतेक दिन ससैर जाइथ।

हमर गामक ब्रह्मस्थानमे सालमे एकबेर नवाह अबस्स होइत अछि। ओइठाम युवक सभ भव्य मन्दिरक निर्माण केलैथ। पहिने काली पूजामे मूर्तिक स्थापना होइत छल जे पूजाक बाद भँसा देल जाइत छल। आब होइठाम स्थायी रूपसँ माँ कालीक भव्य मूर्ति स्थापित भऽ चूकल छैथ। सालमे दियावातीक रातिमे भव्य आयोजन होइत अछि जइमे अड़ेर चौकसँ काली मन्दिर धरि नाना प्रकारक बल्ब सभ जगमग करैत रहैत अछि। काली पूजामे नाच-गानक अतिरिक्त तरह-तरह केर मनोरंजनक बेवस्था रहैत अछि। पहने हमरा गाममे काली पूजाक रेबाज नहि छल। लगभग ४५ सालपूर्व किछु युवक सभ एकरा प्रारम्भ केलैन जे तखनसँ एकटा परिपाटी भऽ गेल अछि। काली मन्दिरमे माइकसँ लगातार घोषणा होइत रहैत अछि जे फल्लाँ ठामसँ नाच-गान करए-बला/करए-वाली आएल छैथ, अबस्स देखब...। आदि-आदि।

सुनबमे आएल जे परुकाँ आयोजनक क्रममे किछु झंझट भऽ गेल। पता नहि, आगाँ ऐ क्रार्यक्रमक की रूपरेखा रहत।

अड़ेर बहुत साविक गाम अछि। मधुबनीसँ बेनीपट्टी जेबाक क्रममे ई गाम अबैत अछि। कहियासँ ई पक्का रोड बनल अछि से पता नहि। आब ओही रोडकेँ थोड़ेक चौड़गर सेहो कऽ देल गेल अछि। सीतामढ़ीक हेतु दड़िभंगा-पटनासँ जाइबला बस सभ हमरे गाम दऽ कऽ जाइत-अबैत अछि। कुल मिला कऽ देखल जाए तँ हमर गाम छोट-छीन शहरक रूप धऽ नेने अछि।

गाममे पढ़ल-लिखल लोकक कमी नहि, देशमे सर्वत्र हमरा गामक लोक भेट जेता। दिल्ली ओ मुम्बइमे तँ भरल छैथ। एकर माने गामक जनसंख्यामे कमी आबि गेल सेहो बात नहि आखिर मिथिलाक भूमि थिक किने।

हमरा लोकनि सोदरपुरिये मनिक मूलकक साण्डिल्य गोत्रीय मैथिली व्राह्मण छी। ७ पुस्त पूर्वसँ हमरा लोकनिक पूर्वजक विवाह अड़रे डीह गाममे भेलैन आ हुनका ससुर गामेमे बसा देलखिन। पर्याप्त जमीन-जत्था

देलखिन। क्रमश: ओ सभ उद्यमसँ प्रचूर धन-सम्पैत अर्जित कए इलाकाक प्रतिष्ठित धनीकमे मानल जाइत छला।

क्रमश: परिवारक विकास हेइत गेल। जनसंख्या बढ़ैत गेल आ ओही क्रममे परिवारिक सिरफुटौऐल सेहो बढ़ल। हम बच्चा रही तँ कए बेर कएक गोटाक आपसी मारि-पीटिमे कपार फुटैत देखिऐन। मोकदमावाजी तँ चलबे कएल।

हमरा सबहक परबाबा तीन भाँइ रहैथ। गुमनी मिश्र, माना मिश्र ओ तुफानी मिश्र। माना मिश्रक पुत्र स्व. कमर मिश्र संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वान छला। सुनैमे अबैत अछि जे दड़िभंगा महाराज हुनका अपन राज पण्डित बनबाक आग्रह केलखिन जे ओ अस्वीकार कऽ देलाह। ओ स्वयं एकटा पाठशाला चलबैत रहैथ। ओइ पाठशालामे सैकड़ो विद्यार्थीकेँ नि:शुल्क भोजन आ आवासक संग विद्या दान देल जाइत छल। हुनकासँ पढ़ल सैकड़ो विद्यार्थी मिथिलांचलमे हुनकर गुणगान करैत छला।

ओइ समयमे अड़ेरमे नामी पहलमान भेल रहैथ स्व. बच्चा झा। हुनकर शक्तिसँ दड़िभंगा महाराज प्रभावित रहैथ। सुनबामे आएल जे ओ लोहाक हथकड़ीकेँ जोर लगा कए तोरि देने छला।

हमरा गाममे पूर्वकालमे मूलत: कृषि आधारित लोक छला। अधिकांश लोककेँ जमीन-जत्था रहइ। गाम खुशहाल छल। दुपहरियाक समयमे बरबैर अल्हा-रूदलक गीतमय कविता पाठक आयोजन ढोलकक तालपर होइते रहै छल। ऐ तरहक आयोजन आम छल। मुदा आब समय-साल बदलल अछि। शिक्षा दिस लोकक रूझान बढ़ल अछि। लोक अपन छोट-छोट बच्चाकेँ पढ़ाइक लेल मधुबनी पठा रहल छैथ। पब्लिक स्कूलक चला-चलती बढ़ल अछि। शिक्षा ओ चिकित्साक समस्या हमरे गाम तक सीमित नहि अछि। ओ तँ पूरा बिहारक समस्या अछिए। तथापि लोक प्रयासरत अछि। आशा अछि, कालान्तरमे हमरो गाममे चिकित्साक बेहतर बेवस्था भऽ सकत जइसँ स्थानीय लोककेँ पटना/दिल्ली नहि दौड़ए पड़तैन।

गाममे आब धनीक लोकक भरमार भऽ गेल अछि। केतेको बेकतीकेँ आर्थिक विकास बहुत भेल। गाममे जबार हएब आम बात भऽ गेल अछि। गाम लऽ कऽ भोज तँ होइते रहैत अछि। लोक सभ कहैत रहै छैथ जे ओ सभ भोज खाइत-खाइत तंग भऽ गेल छैथ। केतेको गोटाकेँ ब्लड-सूगर बढ़ि जाइत छैन। रसगुल्ला-छेनाक बिना तँ कोनो भोज होइते ने अछि।

पुरना जमानामे किलोक किलो भोजन चट केनिहार लोक सबहक खिस्सा सुनैत रहै छेलौं मुदा आइयो-काल्हि एहेन एकाध बेकती हमरा गाममे मौजूद छैथ। जँ अपनेकेँ धैर्य जवाब नहि दऽ दिए तँ हुनकर भोजनक क्रममे कदमताल देख सकैत छी। हुनका द्वारा खएल गेल रसगुल्लाक गिनतीक हेतु जन लगबए पड़ि सकैत अछि। भोजनोपरान्त लदबद चलैत अपन घर आपस जाइत हुनका देख छगुन्तामे पड़ि जाएब। आखिर ओ केना जीब रहल छैथ? आश्चर्य..!

एतेक भोज होइत रहैत अछि, मुदा सभजाना भोजमे अखनो स्त्रीगणकेँ शामिल नहि कएल जाइत अछि। जँ बेवस्थापक नीक छैथ तँ घरे-घर खएक (पारस) पहुँचा दइ छथिन, मुदा ओहो दुपहर रातिमे जखन कि कियो स्त्रीगण भोजनक वस्तु प्रतीक्षा मजबुरियेमे कए सकैत अछि।

हम गाहे-वगाहे ऐ बेवस्थामे सुधारक चर्च करै छी, मुदा ग्रामीण बेवस्थामे सुधारक गुनाजाइश सहज नहि होइत अछि। देखै छी, आगाँ की होइत अछि।

हमरा गाममे हाइ स्कूलक स्थापना हेतु इलाकाक गणमान्य लोक सभ प्रयास केलाह। ओइमे हमर बाबूजी सेहो अत्यन्त सक्रिय रहैथ। स्व. बच्चा झाक परिवारक लोक बहुत रास योगदान देलैथ। स्थानीय लोक सभ सेहो योगदान केलखिन जइसँ हाइ स्कूलक नाओं- 'बच्चा झा जनता उच्च विद्यालय- अड़ेर' पड़ल। किछु दिन धरि ओ विद्यालय पंचायत भवनमे चलैत छल। क्रमश: विद्यालयक अपन पक्का मकान एवम् आन-आन सुविधा भेल।

गेनखेलीक हेतु हमर गाम प्रसिद्ध छल। अंग्रेजी हुकुमतक लोक सभ हमरा गामक लोक सबहक गेनखलीमे अभिरुचि देख दंग रहैथ। हमर बाबूजी सेहो ऐमे माहिर रहैथ। केतेको मेडल हुनका भेटल छल। गेनखेलीसँ प्रभावित भऽ अंग्रेज अधिकारी सभ हमरा गामक कएक गोटाकेँ छोट-मोट नौकरी धरा देलखिन। अड़ेरक फुटबॉल टीमसँ बड़का-बड़का शहरक टीम सभ घबड़ाइत छला।

हम सभ जखन बच्चा रही तखनो विष्णुपुरक मैदानक गेनखेलीमे बाबूजीकेँ भाग लैत देखिऐन। कए दिन हुनका पैरमे चोट लागि जाइन। चोट सबहक देशी इलाज होइत छल।

आब समय-साल बदलल अछि। गामोमे लोकक आपसी सम्पर्क क्षीण भऽ गेल अछि। फगुआ सन पाबैनमे लोक अपन दरबज्जा ओगरने रहैत अछि। तथापि गाम तँ गामे अछि। आशा करै छी जे कालान्तरमे क्रमश: हमरा गाममे आर सभ सुविधा हएत जेकर कल्पना सुखद जीवनक हेतु कएल जाइत अछि। जइ प्रकारक चौहद्दी हमर गामक अछि तइमे एकरा विकासक शिखर तक पहुँचनाइ एक सफल स्वपन्न भऽ सकैत अछि, वशर्ते गामक युवा शक्ति रचनात्मक रूख धरैत सही दिशामे अग्रसर होइथ।

तिथि : 15 अगस्त २०१७, शब्द संख्या : ३४४०

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

मिथिलेश कुमार सिन्हा

आज़ादी

(बिहिनि कथा).

'अहाँ कें जन्माष्टमी आओर स्वतंत्रता दिवस केर बधाई' !' पत्नी बजलीह.

'अहूँ के बधाई !'

'ई शुभ दिन खासक' अहीं वास्ते
आएल अहि !' जबाब देलथिन्ह.

'किएक, हमरे वास्ते शुभ दिन . . ?
हम पुछलियैन्ह.

'से नै बुझलौहुं ? अहूँ सात बहिन पर एगो छोट भाय.... कृष्ण भेलौहुं आ
कृष्णो सन व्यवहारो अहि.... पेशा सं वकील छी हे, जे स्वतंत्र पेशा
अहि....
अहाँ आज़ाद छी !' पत्नी बुझौलीह.

हम उसाँस ल' मोने-मोन बजलहुँ,' हं ठीके, कृष्ण त' भेलहुँ मुदा
आज़ाद....?' दीवार पर टाँगल अपन विवाह'क फ़ोटो देखि, मुड़ी गोइंत लेलहुँ.

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह नूतन अंक बालानां कृते

विदेह मैथिली मानक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

<u>भाषापाक</u>

१.आशीष अनचिन्हार- १ टा बाल गजल आ २ टा गजल २. जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'- चारिटा गजल ३.अम्बिकेश कुमार मिश्र दू टा कविता

१

आशीष अनचिन्हार- बाल गजल

तीने वर्णक बनल मिठाइ

तीने वर्णक बनल मलाइ

तीने वर्णक बनल किताब

तीने वर्णक बनल पढ़ाइ

तीने वर्णक बनल सलाह

तीने वर्णक बनल लड़ाइ

तीने वर्णक बनल फचाँड़ि

तीने वर्णक बनल पिटाइ

तीने वर्णक बनल अकास

तीने वर्णक बनल लटाइ

तीने वर्णक बनल इजोत

तीने वर्णक बनल सलाइ

सभ पाँतिमे 22-2212-121 मात्राक्रम अछि

गजल

1

छै सभ कियो असगर
अपने अपन सहचर

ई आगि ओ आगि
दुन्नू रहल मजगर

बुझबै अहाँ सभ किछु
एतै जखन अवसर

जीवन मने बिजनस
रिस्को रहत कसगर

संवेदना टूटल
खूनो रहै पनिगर

सभ पाँतिमे 2212-22 मात्राक्रम अछि

दोसर शेरक पहिल पाँतिक लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि।

2

छन भरि के पहिचान छै

जीवन भरि अनुमान छै

सोना चानी बैंकमे

आँचरमे दुभि धान छै

पुरहित आ जजमान संग

अपने ओ भगवान छै

चुप्पे रहलहुँ देखितो

केहन ई अभिमान छै

स्वामी अनचिन्हार जी

हमरे सन बइमान छै

सभ पाँतिमे 222+2212 मात्राक्रम अछि

तेसर शेरक पहिल पाँतिक अंतिम लघु छूटक तौरपर लेल गेल अछि

मकतामे हमरा जनैत दोष छै। पहिल पाँतिमे "जी" आदर सूचक छै तँ दोसर पाँतिमे "छै" बराबरी सूचक। आग्रह जे उपाय बताएल जाए।

२

जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

४ टा गजल

(1)

शौर्य शील आ घाम तकै छी

ह'म स्वयंमे राम तकै छी

गाम छोड़िक' एलौं पटना

आब अहूठाँ गाम तकै छी

अहाँ गीत छी अहीं गजल

अहींमे चारू धाम तकै छी

सभ पोथीमे सभ पन्नामे

खाली अपने नाम तकै छी

मैथिल छी मैथिल बस्तीमे

धोती और खराम तकै छी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

(2)

कानमे तूर धेने अछि लोक गजल की कहबै

भोरेसं भांग खेने अछि लोक गजल की कहबै

बरियातीकें चाही माछ माउस और रसगुल्ला

पिबैले' जान देने अछि लोक गजल की कहबै

हो ब्लडप्रेशर डायबिटीज कि आन कोनो रोग

भोजले' मूंह बेने अछि लोक गजल की कहबै

खुट्टा त गडतै ओहीठाम जत' ह'म कहै छिऐ

एकेटा गीत गेने अछि लोक गजल की कहबै

ढेपाक जवाब पाथरसं देबाक चलन गेल

हाथमे बम नेने अछि लोक गजल की कहबै

चतुर्थी मधुश्रावनी कोजगरा और जराउर

तिलकें ताड़ केने अछि लोक गजल की कहबै

चाहियै सभकें जाडमे रौद आ गर्मीमे बसात

खिड़की बंद केने अछि लोक गजल की कहबै

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(3)

ह'म कनैछी हँसैए लोक

पता ने की की बजैए लोक

कन्यादान अहाँक घ'रमे

लेकिन बर्ख गनैए लोक

सयमे नब्बे फ़ूसि बजैए

हरिश्चंद्र कहबैए लोक

पोनेपर ठोकै छी तबला

खूब अहूँकें चिन्हैए लोक

कियो बनैए छत कोनोठाँ

सीढ़ी जखन बनैए लोक

देखू क्यो मरियोक' जीबय

जिबिते कतौ मरैए लोक

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

(4)

अपन उपस्थिति दर्ज कराब' चाहै छी ऐ संसारमे

ताकि रहल छी भोरे-भोरे नाम अपन अख़बारमे

छओटा कन्यादान केलौं आ बारहटा वरदान सेहो

एक पैर घ'रमे रहै छल दोसर हाट-बजारमे

भार-दौड़ आ भोज-भातमे स'भ दिन लगले रहलौं

स'भ साल कर्जा पर कर्जा सटले रहल कपारमे

उचितनुचितक ध्यान नै केलौं नै गेलौं मतदानमे

आब बैसि टेटर गनैत छी ऐ चूनल सरकारमे

एहि धामसं ओहि धाम कबुला-पाती करिते रहलौं

नै केलौं कोनो परिवरतन अप्पन तुच्छ विचारमे

भागि एलौं मंदिर-मस्जिद-गिरिजाघर-गुरुद्वारासं

एखनो लोक तकैए हमरा ऋषिकेश-हरिद्वारमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-20)

३

अम्बिकेश कुमार मिश्र दू टा कविता

१

"मौगियाहा नैइतन"

गामपर रही जाबत

सुनि बाबूजीकs ताना-फज्जति

ग्रेजुएशन भs गेलै

दू पाई कमायत से नै

घुसियायल रहैत अछि घरमे

जेना सेबने होइ सौरि

मौगियाहा नैइतन|

दू दिन भेल शहर ऐना

गामपर कनैत अछि माय

पछताई छथि बाबूजी

फोनका कहैतैमsए

बउवा तमशा गेलहि कि.................

नै माँ ....

दाई कहै बड़डबईमान भsगेलए बउवा

आब तs फोनो नै करैछ... .....|

२

"दिल्ली"

ई शहर छी, दिल्ली ...

हाँ ! दिलबलाकs शहर

दिल?

दिल जतs भरल अछि

सपना आबचलाहाजगहमेधुवांसँ

ई राजधानी छी धूवाँकs

जकर शहंशाहैकार्बनमोनोऑक्साइड|

ई शहर छी हाथमे सिगरेट

आ पेटमे धूवाँकs

अतयनाकसँ निकलैत ऐ क्षिण होईत

आयुक प्रतिकृति

आ उड़ियाईतs चलि जायत अछि

ओजोन परततक

इन्तजारमे ऐ शहर कखन खसतs ओजोन

आ बढ़ि जायत मकानकs भाड़ा आर बेसि

बढ़ि जायत जैकेटकs बिक्री गर्मीमे

रने-बनेभगत लोकs

अपनाके बचाबैलय सुरूजक

पराबैगनी किरणसs

तखन एकटा छत्ता बेचव

दू सैय रुपैये

कत्ते निक!

अम्बिकेश कुमार मिश्र

ग्राम+पोस्ट-सतघरा(बाबूबरही) मधुबनी

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह

मैथिली साहित्य आन्दोलन

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचयआ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेता, से आशा करै छी। रचनाक अंतमे टाइप रहए, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहलअछि।

५ जुलाई २००४ केँhttp://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html "भालसरिक गाछ"- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा "'विदेह'- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका" धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ"जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA


सिद्धिरस्तु